राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 क्या काउंटी क्रिकेट से टीम इंडिया में वापसी करेंगे रहाणे...

अमेरिका की उप रक्षा मंत्री डॉ. कैथलीन हिक्स ने एनएसए अजीज डोभाल से... 12

वर्ष : 10 | अंक : 261 | पटना, गुरुवार, 02 फरवरी, 2023 | पौष शुक्ल तृतीया, विक्रम संवत् 2079 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 23.0°C

न्यूनतम तापमान 12.0°C

बाजार

सोना	56,00
चांदी	53,300
सेंसेक्स	54,306
निफ्टी	22,503

संक्षिप्त खबरें

बजट से मजबूत नींव का निर्माण होगा: मोदी

नई दिल्ली। बजट पर अपनी प्रतिक्रिया में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अमृत काल का पहला बजट विकसित भारत के निर्माण की मजबूत नींव रखेगा। हर वर्ग का सपना पूरा होगा। यह बजट गरीब, मध्यम वर्ग, किसान सहित आकांक्षी समाज के सपनों को पूरा करेगा। परंपरागत रूप से अपने हाथों से देश के लिए मेहनत करने वाले 'विश्वकर्मा' इस देश के निमार्ता हैं। पहली बार 'विश्वकर्मा' के प्रशिक्षण और सहायता से संबंधित योजना बजट में लाई गई है।

मोदी सरकार ने फिर से बिहार को ठगा : तेजस्वी

पटना। उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश बजट पर अपनी प्रतिक्रिया पेश करते हुए कहा कि इसमें सिर्फ जुमलेबाजी की गई है जो वर्ष 2014 से ही जारी है। उन्होंने कहा कि 2014 में केंद्र की भाजपा सरकार ने कहा कि 2022 में किसानों की आय दुगुनी करेंगे। 2022 में सबको आवास देंगे। 2022 तक 80 करोड़ लोगों को नौकरी-रोजगार देंगे। अब 2023 भी आ गया लेकिन इनकी जुमलेबाजी की आदत नहीं गयी। बीजेपी को 100% सांसद देने वाले बिहार को भाजपाइयों ने बजट में फिर ठगा।

अजीमाबाद एक्सप्रेस का विंध्याचल स्टेशन पर ठहराव

पटना। यात्रियों की सुविधा हेतु 2 फरवरी से गाड़ी संख्या 12947/12948 अहमदाबाद-पटना-अहमदाबाद अजीमाबाद एक्सप्रेस का प्रायोगिक तौर पर विंध्याचल स्टेशन पर अस्थायी तौर पर छः माह के लिए ठहराव प्रदान किया गया है । गाड़ी संख्या 12947 अहमदाबाद-पटना अजीमाबाद एक्सप्रेस 02 से 22.43 बजे विंध्याचल स्टेशन पहुंचेगी तथा यहां से 22.45 बजे प्रस्थान करेगी । इसी तरह गाड़ी संख्या 12948 पटना-अहमदाबाद अजीमाबाद एक्सप्रेस 02 फरवरी से 04.13 बजे विंध्याचल पहुंचेगी एवं 04.15 बजे आगे के लिए रवाना होगी ।

आरा स्टेशन पर रूकेगी संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस

पटना। यात्रियों की सुविधा हेतु 03 फरवरी से नई दिल्ली/राजेंद्रनगर टर्मिनल से प्रस्थान करने वाली गाड़ी संख्या 12393/12394 राजेंद्रनगर टर्मिनल-नई दिल्ली-राजेंद्रनगर टर्मिनल संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस का आरा स्टेशन पर प्रायोगिक तौर पर छः माह के लिए ठहराव प्रदान किया जा रहा है । गाड़ी संख्या 12393 राजेंद्रनगर टर्मिनल-नई दिल्ली संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस दिनांक 03 फरवरी से 20.18 बजे आरा स्टेशन पहुंचेगी तथा यहां से 20.20 बजे नई दिल्ली के लिए प्रस्थान करेगी । इसी तरह नई दिल्ली से दिनांक 03 फरवरी से प्रस्थान करने वाली गाड़ी संख्या 12394 नई दिल्ली-राजेंद्रनगर टर्मिनल संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस 05.20 बजे आरा पहुंचेगी एवं 05.22 बजे पटना के लिए रवाना होगी ।

इनकम टैक्स छूट की सीमा 8 साल बाद बढ़ी

गरीबों को एक साल और मिलेगा मुफ्त अनाज, युवाओं-रोजगार के लिए अहम ऐलान

इनकम टैक्स छूट की सीमा बढ़ने का ऐलान होते ही पूरा सदन ताली बजाने लगा

नई दिल्ली, प्रात : किरण, संवाददाता

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के बजट भाषण में सबसे बड़ी बात इनकम टैक्स स्लैब में बदलाव की रही। उन्होंने 8 साल बाद स्लैब बदला और 7 लाख की आमदनी पर टैक्स छूट देने की घोषणा कर दी। सीतारमण का ये 5वां और देश का 75वां बजट है। उन्होंने इस बार पहले की तुलना में कम समय लिया। इस बार का भाषण महज 1 घंटे 27 मिनट का था। इस साल 9 राज्यों में और अगले साल देश का चुनाव है। इसका असर बजट भाषण में दिखा। सीतारमण ने कहा कि जब पूरी दुनिया कोरोना और युद्ध के चलते मंदी की राह पर है, तब भारत की ग्रोथ बाकी देशों के मुकाबले मजबूत है।

जानिए बजट में आपके लिए क्या-क्या ऐलान किए गए

इनकम टैक्स: 8 साल बाद छूट की सीमा बढ़ी

अब सालाना 7 लाख रुपए तक की कमाई होने पर इनकम टैक्स नहीं देना होगा। यह छूट सिर्फ नई टैक्स रिजीम के तहत मिलेगी। अभी भी इनकम टैक्स रिटर्न भरने के 2 ऑप्शन बने रहेंगे। अभी तक 2.5 लाख रुपए तक की कमाई टैक्स फ्री थी। आखिरी बार 2014-15 बजट में इनकम टैक्स स्लैब में बदलाव किया गया था।

क्या सस्ता, क्या महंगा

टीवी सस्ते होंगे। वजह पुर्जों पर कस्टम ड्यूटी 5% से घटाकर 2.5% कर दी गई है। मोबाइल फोन भी सस्ते होंगे, क्योंकि मैन्युफैक्चरिंग के लिए कुछ पार्ट्स पर कस्टम ड्यूटी घटाई गई। हीरों की कीमतें कम होंगी। मैन्युफैक्चरिंग में इस्तेमाल होने वाले सीड पर ड्यूटी कम की गई है। सिगरेट पर टैक्स 16% बढ़ाया गया, ये महंगी होगी। चांदी से बने आइटम्स महंगे होंगे क्योंकि कस्टम ड्यूटी बढ़ाई गई है।

रोजगार : इस साल फाइनेंस मिनिस्टर ने पूरे बजट में रोजगार या जॉब्स शब्द का इस्तेमाल ही महज 4 बार किया। पीएम कौशल विकास योजना का ही 4.0 वर्जन लॉन्च करने की बात कही। बोलीं- युवाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नौकरियों के लिए तैयार करने के लिए 30 स्किल इंडिया सेंटर खोले जाएंगे। नेशनल एप्रेंटिसशिप स्कीम के तहत 47 लाख युवाओं को सपोर्ट देने के लिए 3 साल तक भत्ता दिया जाएगा।

किसान : सरकार ने कृषि क्रेडिट कार्ड 20 लाख करोड़ बढ़ाने की घोषणा की। यह पिछले साल 18.5 लाख करोड़ रुपए था। इसके अलावा डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर एग्रीकल्चर से किसानों को खाद बीज से लेकर मार्केट और स्टार्टअप्स तक की जानकारी मिल सकेगी। एग्रीकल्चर एक्सीलरेटर फंड के जरिए गांवों में युवाओं को स्टार्टअप शुरू करने का मौका मिलेगा।

इंडस्ट्री-स्टार्टअप : देश के 6 करोड़ से ज्यादा छोटे-मझोले उद्योग हैं और 84 हजार से ज्यादा स्टार्टअप। इनके लिए नई क्रेडिट गारंटी स्कीम 1 अप्रैल 2023 से लागू होगी। इसमें छोटे-मझोले उद्यमों को बिना गारंटी के 2 लाख करोड़ रुपए तक का क्रेडिट दिया जाएगा। पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान पैकेज लॉन्च किया जाएगा, जिसमें टरटए'२ का प्रोडक्शन बढ़ाने और मार्केट तक पहुंचाने में मदद करेगा।

बजट की 5 सबसे बड़ी बातें

- **मिडिल क्लास के लिए:** 7 लाख तक की आय पर कोई इनकम टैक्स नहीं।
- **निचले तबके के लिए:** गरीब कल्याण अन्न योजना में मुफ्त अनाज एक साल और मिलेगा।
- **युवाओं के लिए:** स्टार्टअप फंड, और 3 साल तक भत्ता मिलेगा, इंटरनेशनल स्किल इंडिया सेंटर्स बनेंगे।
- **आदिवासी क्षेत्र के लिए:** एकलव्य स्कूलों के लिए 38 हजार 800 टीचर्स अपॉइंट किए जाएंगे। आदिवासी गांवों के विकास के लिए 15 हजार करोड़।
- **महंगा-सस्ता:** LED टीवी-मोबाइल सस्ते होंगे। सिगरेट पर टैक्स 16% बढ़ाया गया। ये अब महंगी होगी।

बजट के बाद 3 बड़े मुद्दों पर सीतारमण के बयान

- **महंगाई:** आपने देखा कि महंगाई नीचे आई है। हमने कदम उठाए हैं। हमारा ध्यान उस पर है। गेंहू को मार्केट में रिलीज करने का फैसला लिया गया है। इससे गेहूं के दाम कम होंगे। रसोई में महंगाई कम होगी। ये एक्शन तो पहले ही हो गया है। महिलाएं परिवार का हिस्सा हैं, इनकम टैक्स में छूट का फायदा उन्हें भी होगा।
- **रोजगार:** 10 लाख करोड़ का कैपिटल इन्वेस्टमेंट किया गया है। प्रोजेक्ट्स चल रहे है, पैसा इनके लिए दिया जा रहा है। ये प्रोजेक्ट्स बिना रोजगार के कैसे पूरे हो सकते हैं।
- **बजट का मकसद:** बजट में महिला सशक्तिकरण, पर्यटन के लिए एक्शन प्लान, विश्वकर्मा के लिए योजनाओं और ग्रीन ग्रोथ पर फोकस है।

सीतारमण की एक चूक पर सब हंसे तो बोलीं सॉरी

टैक्स स्लैब ऐलान पर 30 सेकेंड तक बजीं तालियां; मोदी..मोदी, भारत जोड़ो के नारे भी लगे

बजट स्पीच में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को सॉरी...सॉरी बोलना। उनकी 5 बार की बजट स्पीच में ऐसा पहली बार हुआ। सीतारमण स्क्रैप पॉलिसी का जिक्र कर रही थीं। इस दौरान वे ओल्ड पॉल्यूटेड व्हीकल को ओल्ड पॉलिटिकल व्हीकल कह गईं। यह सुन सब हंस पड़े। गलती का अहसास हुआ तो मुस्कराते हुए बोलीं- सॉरी... सॉरी, ओल्ड पॉल्यूटेड व्हीकल्स को हटाएंगे। सीतारमण के 1 घंटे 27 मिनट के भाषण में भारत जोड़ो, मोदी-मोदी के नारे भी लगे। पूंजीगत निवेश और टैक्स स्लैब में बदलाव पर सदन में 14 से 30 सेकेंड तक तालियां बजीं। वित्त मंत्री लाल रंग के टैब के साथ संबलपुरी सिल्क की लाल साड़ी में नजर आईं। उनकी इस साड़ी की भी चर्चा हो रही है। इसे टेम्पल साड़ी भी कहा जाता है।

7 लाख तक इनकम टैक्स फ्री, सीधे नौकरियों का ऐलान नहीं; 47 लाख युवाओं को स्टायपेंड

गरीबों के लिए मुफ्त राशन स्कीम एक साल बढ़ी

कोरोना के दौर में गरीबों को मुफ्त राशन देने के लिए शुरू की गई प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना को एक साल के लिए और बढ़ा दिया गया है। वित्त मंत्री ने बताया कि इस पर खर्च होने वाली पूरी 2 लाख करोड़ रुपए की रकम केंद्र सरकार दे रही है।

आदिवासियों के लिए 15 हजार करोड़ की स्कीम

पिछड़े आदिवासी समूहों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए ढटढइळऋविकास मिशन शुरू किया जाएगा। इससे ढइळऋबस्तियों में बुनियादी सुविधाएं दी जाएंगी। अगले 3 साल में इस योजना को लागू करने के लिए 15 हजार करोड़ उपलब्ध कराए जाएंगे।

कारीगरों के लिए विश्वकर्मा कौशल सम्मान पैकेज

देश के पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के लिए पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान पैकेज लाया गया है। इससे कारीगर टरटए के साथ जुड़ेंगे। यह मिशन उन्हें अपने प्रोडक्ट्स की क्वालिटी सुधारने, प्रोडक्शन बढ़ाने और मार्केट तक पहुंचने में मदद करेगा।

मिलेट्स के लिए ग्लोबल हब बनाने का मिशन

भारत दुनिया में सबसे ज्यादा मोटा अनाज यानी मिलेट्स पैदा करता है। साथ ही दुनिया में इसके एक्सपोर्ट में हमारा दूसरा नंबर है। अब सरकार हैदराबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ श्री अन्न को सपोर्ट करके नेशनल लेवल का इंस्टीट्यूट बनाएगी, ताकि भारत मिलेट्स का ग्लोबल सेंटर बन सके।

डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर एग्रीकल्चर

सरकार ने खेती को आधुनिक बनाने के लिए इससे जुड़ी तमाम जानकारियां डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाने का फैसला किया है। इस ओपन सोर्स से किसानों को जरूरी सूचनाएं मिल सकेंगी। इनमें खाद, बीज से लेकर मार्केट और कीमतों तक की जानकारियां शामिल होंगी।

PPP मोड पर एग्रीकल्चर एक्सीलरेटर फंड

गांवों में युवाओं को स्टार्टअप शुरू करने में मदद के लिए सरकार एग्रीकल्चर एक्सीलरेटर फंड लाएगी। इससे युवाओं को पूंजी की कमी से निपटने में मदद मिलेगी। इसे शुरू करने के लिए सरकार निजी क्षेत्र की मदद लेगी यानी इसे ढढढ मोड पर लाया जाएगा। इससे किसानों और इंडस्ट्रीज के बीच को-ऑपरेशन कायम होगा, जो किसानों का मुनाफा बढ़ाने में मददगार होगा।

पहली नेशनल डेटा गवर्नेंस पॉलिसी का ऐलान

देश में स्टार्टअप्स और शिक्षण संस्थानों के इनोवेशन और रिसर्च को सामने लाने के लिए नेशनल डेटा गर्वर्नेंस पॉलिसी लाई जाएगी। इससे महत्वपूर्ण डेटा तक सबकी पहुंच आसान बनेगी। सरकार का कहना है कि इससे नई तकनीक को अपनाने की प्रोसेस में तेजी आएगी।

सीनियर सिटीजन्स की सेविंग लिमिट दोगुनी

बजट में सीनियर सिटीजन्स के लिए सेविंग्स अकाउंट में रखी जाने वाली रकम की लिमिट 4.5 लाख रुपए से बढ़ाकर 9 लाख रुपए कर दी गई है। उन्हें पेंशन से होने वाली आमदनी पर भी राहत मिली है।

महिला सम्मान बचत पत्र स्कीम, 7.5% ब्याज

महिलाओं को आर्थिक तौर पर सक्षम बनाने के लिए वित्त मंत्री ने महिला सम्मान बचत पत्र योजना शुरू करने का ऐलान किया है। इसमें महिलाओं को 2 लाख रुपए की बचत पर सालाना 7.5% ब्याज मिलेगा। यह सुविधा सभी बैंकों में उपलब्ध होगी।

समाधान यात्रा : मुख्यमंत्री ने सुपौल जिले में विकास योजनाओं का लिया जायजा, समस्याओं के समाधान हेतु अधिकारियों को दिए निर्देश

स्कूलों को लेकर शुरू से काम किया है, जिसका परिणाम आज दिख रहा है : नीतीश कुमार

बोलें- सभी इलाका काफी डेवलप कर रहा है

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को समाधान यात्रा के क्रम में सुपौल जिले में विभिन्न विभागों के अंतर्गत चल रही विकास योजनाओं का जायजा लिया। इस दौरान पत्रकारों से बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कुसहा त्रासदी के समय वर्ष 2008 में इस इलाके में काफी नुकसान हुआ था। इसको लेकर सरकार के द्वारा पुनर्वास कराया गया है। इसी को देखने के लिए हमलोग यहां आये हैं।

सरकार के द्वारा जो काम कराये गये हैं उसे देखने आये हैं। अगर कहीं कोई कमी रह गई है तो उसे पूरा कराने को लेकर हमलोग घूम रहे हैं। लोगों से बातचीत के क्रम में जो कमियां सामने आती हैं, उसके समाधान के लिए अधिकारियों को निर्देश दिया जाता है। लोगों से सारी जानकारी ले रहे हैं कि आगे और क्या करने की जरुरत है। जीविका दीदियां काफी अच्छा काम रही है। आज स्कूलों में कितना परिवर्तन आया है। इस स्कूल के बच्चे अंग्रेजी काफी अच्छा बोल रहे हैं। सभी इलाका काफी डेवलप कर रहा है। हमलोगों ने स्कूलों को लेकर शुरू से काम किया है, जिसका परिणाम आज दिख रहा है।

ये रहें मौजूद : भ्रमण के दौरान वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, ऊर्जा सह योजना एवं विकास मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव, मंत्री जल संसाधन, सूचना एवं जन-संपर्क सह सुपौल जिले के प्रभारी मंत्री संजय कुमार झा, मंत्री अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति कल्याण संतोष कुमार सुमन, शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर, सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

देश की हर थाली में बिहार का एक व्यंजन हो : मुख्यमंत्री ने सुपौल जिलान्तर्गत सदर प्रखंड के मल्हनी पुनर्वास टोले का भ्रमण कर हर घर नल का जल एवं मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर स्ट्रीट लाइट योजना आदि का जायजा लिया। जीविका दीदियों द्वारा कृषि आधारित उद्यम के तहत उत्पादित की जा रही एवं निर्मित वस्तुओं से संबंधित लगाई गई प्रदर्शनी का मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया। मुख्यमंत्री ने जीविका दीदियों से बातचीत के क्रम में कहा कि मखाने से तरह-तरह के फ्लेवर युक्त विभिन्न तरह के उत्पाद आपलोग बना रहे हैं इसकी पैकेजिंग भी कर रहे हैं लोग इसे काफी पसंद कर रहे हैं, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। हमारी इच्छा रही है कि देश की हर थाली में बिहार का एक व्यंजन हो। इस दौरान मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत 59 लाभुकों को मुख्यमंत्री ने सांकेतिक चेक प्रदान किया। मुख्यमंत्री ने लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत नवनिर्मित अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई, मल्हनी के शिलापट्ट का अनावरण एवं फीता काटकर उद्घाटन किया। भ्रमण के क्रम में मुख्यमंत्री ने स्थानीय लोगों से संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं एवं संबंधित अधिकारियों को उनके यथाशीघ्र समाधान हेतु निर्देश दिया।

एकजुटता से भाजपा को केन्द्र से भी कर देंगे बेदखल : तेजस्वी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने कहा कि जगदेव बाबू की कुबार्नी का संदेश न सिर्फ बिहार बल्कि भारतवर्ष के लिए है जिन्होंने सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ी और नब्बे भाग को अधिकार मिले इसके लिए जो संघर्ष और आन्दोलन किया वो हमसभी के लिए सामाजिक न्याय की धारा तथा संघर्षों के माध्यम से उनके विचारों को आगे बढ़ाने के लिए संकल्प को और मजबूती देता है। उनके विचार धारा के साथ सभी को जुड़ने की आवश्यकता है क्योंकि यही सार्थक समय है। उपमुख्यमंत्री बुधवार को बापू सभागर में अमर शहीद जगदेव जयंती समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि महागठबंधन सरकार बनने के बाद हमसभी ने संकल्प लिया है कि जिस तरह से संविधान विरोधी और नफरत फैलाने वाली शक्तियों को बिहार में सत्ता से बेदखल किया है, उसी तरह से एकजुटता बनाए रखकर केन्द्र से भी सत्ता से बेदखल कर देंगे। आज जो धर्म के बारे में ज्ञान दे रहे हैं वो धर्म को अपने अनुसार परिभाषित कर चंद लोगों तक इसे सीमित रखना चाहते हैं। हमें धर्म पर किसी के सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं है। जबसे भाजपा सत्ता में आई है लोकतंत्र और संविधान को कमजोर करने का कार्य किया जा रहा है और धर्म के सहारे नफरत की राजनीति की जा रही है। तेजस्वी ने आगे कहा कि महागठबंधन सरकार बेहतर ढंग से काम कर रही है।

संक्षिप्त खबरें

रेणु रोहतगी बनीं एनएमसी की प्राचार्य

पटना सिटी (प्राकि)। नालंदा मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ हीरालाल महतो सेवानिवृत्त हो गए हैं। इसके बाद एनएमसीएच की अधीक्षक रहीं डॉ रेणु रोहतगी को कॉलेज का प्रभारी प्राचार्य बनाया गया है। डॉ रोहतगी ने बुधवार को प्राचार्य का पद संभाल लिया है। उन्होंने कॉलेज के छात्रों के पठन-पाठन को बेहतर बनाने और अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले मरीजों को सुविधा मुहैया हो, इसके लिए कार्य करने का संकल्प दोहराया है।

एसडीओ ने परीक्षा केंद्रों का लिया जायजा

पटना सिटी (प्राकि)। इंटरमीडिएट की परीक्षा बुधवार से शुरू हो गई। इसके लिए यहां 13 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा ली जा रही है। परीक्षा केंद्रों का एसडीओ मुकेश रंजन ने जायजा लिया। उन्होंने बताया कि परीक्षा की दोनों पालियों में पहले दिन शांतिपूर्ण और कदाचारमुक्त परीक्षा संपन्न हुई है। 13 केंद्रों पर करीब 11,436 परीक्षार्थी शामिल हो रहे हैं। परीक्षा 14 फरवरी तक होगा। कदाचारमुक्त परीक्षा को लेकर अनुमंडल प्रशासन की ओर से उड़नदस्ता के साथ ही परीक्षा केंद्रों पर दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी और बल की तैनाती की गई है।

किसानों को राहत, सब्सिडी दे सरकार

पटना सिटी (प्राकि)। पटना फ्रूट वेजिटेबल एसोसिएशन ने सरकार से कृषि, उर्वरक, कृषि कार्य के ट्रैक्टर, डीजल और बिजली पर सब्सिडी दे। इससे किसान की लागत कम आएगी। कृषि उत्पादन बाजार समिति बिहार की मंडी को नो इंट्री से भी मुक्त करे। यह बात पटना फ्रूट वेजिटेबल एसोसिएशन के अध्यक्ष शशिकांत प्रसाद व उपाध्यक्ष जयप्रकाश वर्मा ने जारी विज्ञप्ति में कही।

शराब के मामले में तीन गिरफ्तार

पटना सिटी, (प्राकि)। पुलिस ने शराब के खिलाफ अभियान चलाया जिसमें तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। आलमगंज थाना की पुलिस ने माखनपुर से नीतू पासवान को एक लीटर देसी शराब के साथ पकड़ा है। वहीं खाजेकलां थाना की पुलिस ने 120 लीटर देसी शराब और स्कूटी के साथ रमेश कुमार को घसियारी गली से गिरफ्तार किया है। दीदारगंज थाना की पुलिस ने लालबाबू चौधरी को गिरफ्तार किया है। सभी पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ के बाद पुलिस ने जेल भेज दिया है।

अनुमंडल में कई फर्जी नर्सिंग होम बिना निबंधन और बिना सर्जन, चिकित्सक का हो रहें हैं संचालित

बगहा (नगर संवाददाता) कुछ महीनों पहले रामनगर में अवैध नर्सिंग होम पर छापेमारी किया जिस दौरान वहां से मरीजों को रेस्क्यू किया गया। इसके बावजूद भी अभी भी संचालित किया जा रहा हैं। जिसके लेकर बिहार प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ महासचिव फिरोज अंसारी ने एक आवेदन एसडीएम डॉ. अनुपमा सिंह को सौंपा। आवेदन में आरोप है कि पूरे अनुमंडल में कई फर्जी नर्सिंग होम बिना निबंधन और बिना सर्जन, चिकित्सक का संचालित हो रहे हैं। आरोप है कि सिटी हास्पिटल बगहा एक के गोड़ियापट्टी जीवन ज्योति नर्सिंग होम गांधीनगर सेमरा रोड महिला थाना के पास आदि में बोर्ड पर चिकित्सक और सर्जन का नाम लिख कर उनके नाम पर क्वैक जांच एवं ऑपरेशन कर रहे हैं। भोले भाले ग्रामीण इनके शिकार बन रहें है। बिचौलिये इनके पास जांच और आपरेशन के लिए ले जा रहें है।

यात्रियों ने भरा ऑटो पलटा, आधा दर्जन यात्री घायल

बगहा एनएच 727 बगहा व बेतिया मार्ग में शास्त्री नगर चौक के समीप तेज गति से आ रहे अग्निशमन वाहन को साइड देने के क्रम में अचानक साइकिल चालक आ गया। चालक को बचाने में दौरान ऑटो अनियंत्रित होकर पलट गया। जिसमें आधा दर्जन यात्री जख्मी हो गए। स्थानीय लोगों के सहयोग से सभी को ऑटो से बाहर निकाला गया। घायल यात्रियों को स्थानीय स्तर पर ईलाज किया गया। इस दौरान एक यात्री बगहा एक प्रखंड कार्यालय में कार्यरत ग्राम सेवक सुनील कुमार गंभीर रूप से जख्मी हो गए। स्थानीय लोगों के सहयोग से ग्राम सेवक को इलाज के लिए अनुमंडलीय अस्पताल भेजा गया। जहां चिकित्सक ने घायल की प्राथमिक उपचार किया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्होंने बताया कि घायल की स्थिति सामान्य है।

एमएसएमई ने खरीद एवं विपणन सहायता योजना पर कार्यशाला का किया आयोजन

राज्य के उद्योग संघ, चैम्बर्स एवं एव अन्य उद्यम से जुड़े प्रतिनिधि रहें मौजूद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना। एमएसएमई विकास कार्यालय द्वारा बिहार राज्य के उद्योग संघों, चैम्बर्स एवं पटना जिले में कार्यरत उद्यमियों के सहयोग से खरीद एवं विपणन सहायता योजना पर एक कार्यशाला के द्वितीय दिवस काआयोजन पटना में किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार के एमएसएमई मंत्रालय द्वारा एमएसएमई इकाईयों को नए बाजार सुविधा, नए बाजार सृजन, बेहतर पैकेजिंग, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नवीनतम चलन,राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लेना,जेड सर्टिफिकेशन, स्फूर्ति योजना, क्लस्टर विकास योजना, ई मार्केटिंग, जेम पोर्टल इत्यादि के बारे में वृहद रुप से जागरुक करना था। कार्यक्रम का समापन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ एस के गुप्ता, निदेशक, भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यालय के निदेशक प्रदीप कुमार आईईडीएस द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप मे राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, पटना के उप-महाप्रबंधक जे पी सिंह, बिहार महिला उद्योग संघ की अध्यक्षा उषा झा, लघु उद्योग भारती, बिहार के संयुक्त महामंत्री सुमन शेखर, पटना नेत्र विशेषज्ञ संघ के अध्यक्ष डॉ सुनील कुमार, एवं अन्य एमएसएमई हितधारक कार्यक्रम मे सम्मलित हुए एवं उनके द्वारा कार्यक्रम को संबोधित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय एमएसएमई बोर्ड के दो सदस्यों काशीनाथ सिंह एवं सुधीर दाते द्वारा भी शिरकत किया गया। इस मौके पर डॉ एस के गुप्ता, निदेशक, भारतीय मानक ब्यूरो ने बिहार के एमएसएमई उद्यमियों के लिए कार्यक्रम को लाभकारी बताया एवं वर्तमान वैश्विक परिस्थिति में प्रतिस्पर्धा में अपने को सक्षम बनाने हेतु एक कदम बताया। कार्यालय के निदेशक प्रदीप कुमार ने कहा कि एमएसएमई के विपणन के आवश्यकता को देखते हुई पीएमएस योजना बहुत ही लाभकारी साबित होगी जो उनके विनिर्मित अथवा प्रदान की गई सेवा के मार्केटिंग हेतु एक मौका देगा जिसमे स्टॉल चार्जेस के व्यय को विभाग द्वारा प्रतिपूर्ति की जाएगी। साथ ही उन्होंने इस योजना के अंतर्गत आकांक्षी जिला गया में दैनिक जागरण द्वारा आयोजित होने वाले उद्यमी मेला 2023 के बारे में भी बताया जो दिनांक 24 से 26 फरवरी तक आयोजित की जायेगी जिसकी प्रशासनिक स्वीकृति एमएसएमई मंत्रालय द्वारा दे दी गई है। कार्यक्रम में 150 से अधिक एमएसएमई प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन एवं समन्वयन कार्यालय के सहायक निदेशक रविकांत द्वारा किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन कार्यालय के सहायक निदेशक संजीव आजाद द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कार्यालय के सहायक निदेशक संजीव कुमार वर्मा, सहायक निदेशक सम्राट एम झा एवं सहायक निदेशक गोपाल कुमार सिन्हा सम्मलित हुए।

कड़ी चौकसी के बीच बगहा में इंटर की परीक्षा शुरू

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट वार्षिक परीक्षा पूरे बिहार सहित बगहा में आगाज हुआ। बगहा के कुल आठ केंद्रों परीक्षा केंद्रों पर एक फरवरी से 14 फरवरी के बीच दो पालियों में चलने वाली परीक्षा कड़ी चौकसी के बीच पहले दिन शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। पहली पाली में गणीत और दूसरी पाली में हिन्दी की परीक्षा ली गई। बताते चलें कि नगर के मोंटफोर्ट स्कूल, डीएम एकेडमी हाई स्कूल, प्रोजेक्ट बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बगहा पंडित उमाशंकर तिवारी महिला महाविद्यालय, एनबीएस उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नरई पुर, मध्य विद्यालय पटखौली, सहकारी प्रोजेक्ट बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पटखौली और बीबीएन कॉलेज में सेंटर निर्धारित है। इस दौरान बगहा नगर थाना के थाना प्रभारी सह इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिन्हा कदाचार मुक्त परीक्षा को ले परीक्षा केंद्रों पर पुलिस दलबल के साथ घूमते हुए नजर आए।

नाबालिग को फुसला शादी की नीयत से ले जा शारीरिक संबंध बनाया

मारपीट व गाली देता, जान बचा घर लौटी, मामला दर्ज, गया जेल

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दीदारगंज थाना क्षेत्र के शिव घाट के पास के रहने वाली नाबालिग को बहला-फुसलाकर शादी के नीयत से बिचला टोला का रहने वाला युवक चंदन सहनी ले गया। इस संबंध में नाबालिग के पिता ने दीदारगंज थाना में मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर पूछताछ की है। इसके बाद उसे जेल भेज दिया गया है। इसमें पिता ने कहा है कि वह शिव घाट का रहने वाला है। उसकी नाबालिग पुत्री को इसी थाना क्षेत्र के बिचली टोला का रहने वाला चंदन सहनी शादी की नीयत से उसे बहला-फुसला कर अपने साथ ले गया।

वाकया जुलाई, 2022 की है। इसके बाद उसे घर में रखकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाया। इस बीच पुत्री उसी के साथ घर में रह रही थी। वह उसे अपने घर नहीं जाने देता था। वह पुत्री के साथ हमेशा मारपीट और गाली-गलौज किया करता था। परेशान होकर किसी तरह उसकी बेटी 22 जनवरी, 23 को अपनी जान बचाकर घर पहुंची। वह सब अनुसूचित जाति से आते हैं। उसने जातिसूचक गाली देकर उन सब पर अत्याचार किया है। इसी 30 जनवरी को भी चंदन उसके घर आकर गाली-गलौज किया तथा जान से मारने की धमकी भी दिया है। इसे लेकर नाबालिग के पिता ने दीदारगंज थाना में आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाया है। पुलिस का कहना है कि इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है। आरोपित को गिरफ्तार करने के बाद पूछताछ कर जेल भेज दिया है।

पुस्तकालय के पास दो किस्तों में फायरिंग कर बदमाश फरार

घटना के वक्त अंदर में कुछ छात्र पढ़ाई भी कर रहे थे

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बाजार समिति बहादुरपुर बगीचा स्थित दुर्गा लाइब्रेरी के पास मंगलवार की रात तीन-चार की संख्या में रहे बदमाशों ने अनेक राउंड फायरिंग कर दहशत पैदा कर दिया। घटना का कारण पुरानी रंजिश बतायी जा रही है। सूचना मिलने के बाद मौके पर बहादुपुर थाना की पुलिस पहुंच कर मामले की छानबीन की। लाइब्रेरी संचालक प्रशांत कुमार के भाई प्रियव्रत ने बताया कि रात करीब एक बजे अचानक से दो-तीन की संख्या में बदमाश पहुंचे और करीब पांच राउंड फायरिंग कर वहां से भाग निकले। उस वक्त लाइब्रेरी का दरवाजा बंद था। कुछ छात्र उस वक्त अंदर में पढ़ाई भी कर रहे थे। दरवाजा खुला होने की स्थिति में पढ़ाई कर रहे छात्र घायल भी हो सकते थे। बदमाशों ने डर एवं दहशत के लिए अल सुबह करीब तीन बजे फिर से फायरिंग किया। संचालक का कहना है कि बदमाशों ने एक बम भी फोड़ा था। घटना का कारण पुरानी रंजिश का परिणाम बताया जा रहा है। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर बहादुरपुर थानाध्यक्ष योगेश चंद्र पहुंचे। पुलिस को देख लोगों ने कुछ देर तक हंगामा भी किया। उन सबों का कहना था कि अवैध वसूली के लिए बदमाशों ने फायरिंग की है। अपराधियों की करतूत से लोग भयाक्रांत हैं। संचालक प्रशांत ने इस संबंध में लिखित शिकायत व सीसीटीवी फुटेज बहादुरपुर थाना की पुलिस को दिया है। इसमें एक व्यक्ति को आरोपी बनाया गया है। बहादुरपुर थानाध्यक्ष ने बताया कि मामले की छानबीन की जा रही है।

केंद्रीय वित्त मंत्री का बजट आम नागरिकों के सराहनीय

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी पटना महानगर के अध्यक्ष अभिषेक कुमार और मीडिया प्रभारी प्रदीप काश ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा पेश किए गए बजट पर प्रशंसा व्यक्त की है। इसके लिए प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को बधाई दी है।

यह बजट आम जनता और सर्वव्यापी विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगा। इस बजट में कृषि, पर्यटन, उद्योग, नर्सिंग कॉलेज, मेडिकल कालेज, युवाओं का शैक्षणिक विकास, कृषि के अलावा अन्य वस्तुओं पर 21 प्रतिशत से घटाकर 13 प्रतिशत कर महंगाई दर पर लगाम लगाने की कोशिश की गई है। सुकन्या योजना की तरह देश में पहली बार महिलाओं के लिए एक नई योजना महिला बचत पत्र स्कीम की शुरूआत की गई है। इसके तहत दो साल तक दो लाख महिलाएं निवेश कर सकेंगी। इस जमा पर टैक्स में छूट मिलेगी और 7.5 प्रतिशत का रिटर्न मिलेगा। वरीय नागरिकों के लिए 15 लाख तक के लिमिट को बढ़ाकर 30 लाख किया गया है। किसानों के लिए कृषि ऋण का लक्ष्य 20 लाख करोड़ रखा गया है। वायु मार्ग को सुगम बनाने के लिए 50 नए एयरपोर्ट बनाए जाएंगे। देश में पर्यटन उद्योग के विकास के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन के लिए 50 स्थलों को विकसित किया जाएगा। पैन कार्ड को राष्ट्रीय पहचान पत्र के रूप जाना जाएगा। सभी शहरों और कस्बों में सेप्टिक टैंक और सीवर की सफाई सौ प्रतिशत मशीन के द्वारा की जाएगी। नौकरी और पेशा वर्ग को टैक्स में सात लाख तक की छूट दी गई है। मुफ्त खाद्यान्न योजना एक साल बढ़ा कर गरीबों को राहत दी गई है। प्रधानमंत्री आवास योजना 66 प्रतिशत बढ़ाया गया है। इससे लोगों के बीच ज्यादा से ज्यादा आवास आवंटन हो। स्वस्थ भारत योजना के तहत 157 नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। भाजपा नेता अवधेश सिन्हा, संजीव सिन्हा, गायघाट भाजपा मंडल के अध्यक्ष हरेंद्र चंद्रवंशी, बद्री गुप्ता, अशोक भारती, युवा मोर्चा के गोलू कुमार, गुंजन कुमार, महिला मोर्चा से जुड़ीं कांति केसरी, सरोज जायसवाल, हेमलता शर्मा, अनिता पांडेय, शशि बल्दिहार, सुनीता गुप्ता, निशा मेहता आदि ने कुल मिला कर पेश बजट को हर तबके के लिए सराहनीय बताया है।

स्वच्छ पटना अभियान को मिला पटना फ्रूट एसो का साथ

हर गद्दी में होगा 60 लीटर का डस्टबिन, कचरा तय स्थान पर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

स्वच्छ पटना अभियान का साथ नगर निगम को मुसल्लहपुर बाजार समिति के पटना फ्रूट मर्चेंट एसोसिएशन का मिला है। एसोसिएशन के महासचिव भुट्टो खान ने बताया कि 60 लीटर मिल्टन का डस्टबिन हर गद्दियों में दिया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वार्ड 47 के वार्ड पार्षद सतीश गुप्ता ने अपने हाथों से डस्टबिन सभी दुकान में स्थापित कराने की शुरूआत की। साथ ही सभी गद्दीदारों से आग्रह किया कि परिसरमें स्वच्छता में आप सबों का मिलकर साथ दें ' विशिष्ट अतिथि के रूप में पाटलिपुत्रा नगर विकास समिति के अध्यक्ष रितेश कुमार बबलु ने एसोसिएसन के इस कार्य को इस क्षेत्र के लिए मील का पत्थर कहा। उन्होंने कहा कि यह कार्य एक मिसाल है। इससे प्रभावित होकर इस क्षेत्र के लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक होंगे । समिति के सलाहकार पुतुल मिश्रा ने इस कार्य को क्षेत्र मे प्रसारित करने पर जोर दिया। एसोसिएसन के महासचिव भुट्टो खान ने भी लोगों से आग्रह किया कि अपने-अपने गद्दीयों से जो भी कचरा हो, उसे अब रास्ते या सड़क पर नहीं फेंकें। इसे अपने -अपने डस्टबिन में डालें, जिसे समय समय पर निगम के सफाई मित्र इसे ले जाने का काम करेंगे। इससे हमारा बाजार समिति स्वच्छ और सुंदर रहेगा। एसोसिएसन के उपाध्यक्ष रईस अहमद, छोटे खान, मुन्ना खान, सचिव अवधेश कुमार, शहजाद आलम, संगठन सचिव शमशाद आलम, कोषाध्यक्ष मो बसीम, पुतुल जी आदि ने इस कार्य की प्रशंसा की।

सिटी कंट्रोल रूम इंचार्ज ने थाना को दी सूचना, सनहा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

सिटी कंट्रोल रूम के इंचार्ज कुंअर कुमार के साथ भी कार से मोबिल चूने के नाम पर धोखा देकर कार की सीट से बैग गायब कर दिया गया था। पहले तो कुंअर जी ने इस संबंध में कोई मामला दर्ज कराए जाने से इनकार किया था, मगर उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है कि वह गैरजिम्मेवार हैं। घटना घटित होने के बाद वह आलमगंज थाना पहुंचे। वहां उन्होंने घटना की जानकारी पुलिस पदाधिकारी को दिया। फिर लिखित में आवेदन सनहा दर्ज करने के लिए दिया। इसमें कार की सीट से बैग के गुम होने की बात का जिक्र किया गया है। उनके बैग में करीब तीन हजार नगद, लंच बॉक्स, मफलर और कुछ कागजात था।

घटना 28 जनवरी को पूर्वाह्न करीब 10 से सवा दस के बीच आलमगंज थाना क्षेत्र के अंबेडकर गोलंबर के कुछ पहले दक्षिण घटित हुई थी।

04 फरवरी को बेतिया समाहरणालय परिसर में लगेगा विशेष चिकित्सा शिविर।

स्वास्थ्य संबंधी शिकायतों के आधार पर कर्मियों की होगी चिकित्सीय जांचं

निर्भय कुमार, प्रात :किरण संवाददाता

बगहा कार्य क्षमता एवं कार्य कुशलता के दृष्टिगत समाहरणालय कर्मियों के स्वास्थ्य के प्रति जिला प्रशासन गंभीर है। इस हेतु समाहरणालय परिसर में 04 फरवरी 2023 को विशेष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। चिकित्सा शिविर में कर्मियों की स्वास्थ्य संबंधी शिकायतों के आधार पर उनकी चिकित्सीय जांच करायी जायेगी तथा चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी।विशेष चिकित्सा शिविर में जेनरल फिजीशियन, हृदय रोग विशेषज्ञ, नेत्र रोग विशेषज्ञ, चर्म रोग विशेषज्ञ, हड्डी रोग विशेषज्ञ, इएनटी विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, दंत चिकित्सक सहित एनसीडी चिकित्सक समाहरणालय कर्मियों के स्वास्थ्य की जांच करेंगे।इस संदर्भ में जिलाधिकारी, कुंदन कुमार के दिशा-निर्देश के आलोक में स्थापना उप समाहर्ता, पश्चिम चम्पारण द्वारा सिविल सर्जन, पश्चिम चम्पारण को 04 फरवरी को समाहरणालय परिसर में चिकित्सीय सुविधाओं के साथ विशेष चिकित्सा शिविर का आयोजन कर कर्मियों के स्वास्थ्य की जांच करने की व्यवस्था करने को कहा गया है। साथ ही जांचोपरांत कर्मियों के स्वास्थ्य की अद्यतन स्थिति के संबंध में समंतव्य प्रतिवेदन समर्पित करने को कहा गया है ताकि उन्हें नियमानुकूल चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करायी जा सके।

खर्च करीब डेढ़ करोड़ का खर्च इस पर आएगा।

डा संतोख ने तख्तश्री में शुरू कराया 20 कमरों का रिहाइश

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में आगरा निवासी डॉ संतोख सिंह के द्वारा पत्नी की याद में 20 कमरों की रिहाइश बनवाई जा रही है। इसकी कारसेवा बाबा बचन सिंह जी कारसेवा दिल्लीवाले के द्वारा की जानी है। इसके लिए जमीन तख्तश्री कमेटी के द्वारा उपलब्ध कराई गई है। बुधवार को इसके निर्माण का पहला लिंटर कारसेवा वाले बाबा गुरनाम सिंह जी के द्वारा संगत के सहयोग से डाला गया। तख्तश्री पटना साहिब कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही और महासचिव इंद्रजीत सिंह भी इस दौरान मौजूद थे। डॉ संतोख सिंह के द्वारा स्वयं तख्त साहिब में मौजूद रहकर अपनी देखरेख में कमरों की सेवा करवाई जा रही है।

तख्तश्री कमेटी के महासचिव इन्द्रजीत सिंह ने बताया कि करीब डेढ़ करोड़ का खर्च इस पर आएगा। उन्होंने बताया कि जमीन तख्त साहिब के द्वारा दी गई है और उस पर जो कमरे बनाए जा रहे हैं, उसमें से 20 कमरों पर आने वाला खर्च डा सिंह आगरावाले के द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि डा साहिब ने जब कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंह हित से इस विषय पर संपर्क किया था, तो उन्होंने एक कमरा अपनी स्वर्गवासी पत्नी की याद में बनाने की बात की थी। उसके बाद उन्होंने पांच, फिर 10 और आज 20 कमरे बनवाने की मंजूरी कमेटी को दी है। इसके लिए पहली लिंटर की सेवा की गई। उन्होंने बताया कि तख्तश्री कमेटी की यही कोशिश है कि आने वाले गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व से पहले अधिक से अधिक कमरे संगत की रिहाइश के लिए तैयार करवाए जाएं। उन्होंने बताया कि सभी कमरे पूरी तरह से अत्याधुनिक होंगे। कमेटी के अध्यक्ष, महासचिव सहित सदस्यों ने डॉ संतोख सिंह आगरावाले को बधाई दी हैं

केंद्रीय बजट में किसान, मजदूर और युवाओं के लिए कुछ नहीं : अरुण यादव

प्रात :किरण संवाददाता

युवा राजद के प्रदेश प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी अरुण कुमार यादव ने केंद्रीय आम बजट प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बेरोजगारी, महंगाई पर लगाम लगाने पर बजट में कोई चर्चा नहीं है। बजट में गरीब, किसान,मजदूर और युवाओं के लिए कुछ भी नहीं है। केंद्र की मोदी सरकार सिर्फ पूंजीपतियों को फायदा पहुँचाने के लिए काम कर रही है। केंद्रीय आम बजट पूरी तरह दिशाहीन है। श्री यादव ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार बिहार के साथ लगातार सौतेला व्यवहार कर रही है। विशेष राज्य के दर्जे पर कुछ भी नहीं मिला। मोदी सरकार ने 2022 तक किसानों की आय दोगुना करनी बात कहीं थी लेकिन 2022 समाप्ति के बाद भी किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। किसानों स्थिति और कमजोर हो गई। हर वर्ष दो करोड़ नौकरी मुहैया करने के वादे पर अभी तक कोई अमल नहीं किया गया। जबकि वादे अनुसार 8 वर्षों में अबतक 16 करोड़ नौकरी मुहैया कराना था। लेकिन बजट में नौकरी मुहैया कराने पर कोई चर्चा नहीं किया गया। श्री यादव ने कहा कि भागलपुर और अंग प्रदेश के लोगों को विशेष रूप से केंद्र सरकार ने ठगने का काम किया है। भागलपुर में रेल मंडल कार्यालय की स्थापना,हवाई सेवा चालू और भागलपुर में एम्स खोलने की भागलपुर और अंग प्रदेश की जनता का बहुप्रतीक्षित मांगों पर भी मोदी सरकार ने पानी फेरने का काम किया है।

केन्द्रीय बजट पर आरोप-प्रत्यारोप, सत्ता पक्ष ने सराहा, विपक्ष ने नकारा

बजट में जुमलेबाजी व बाजीगरी के अलावे कुछ नहीं : उमेश कुशवाहा

बजट गरीब विरोधी, बिहार के लिए पूर्णतया निराशाजनक

पटना। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने केन्द्रीय बजट को गरीब विरोधी एवं विशेषकर बिहार के लिए पूर्णतया निराशाजनक बताया है। कहा कि बजट जुमलेबाजी के अलावे और कुछ नहीं, जिसमें सिर्फ बाजीगरी और डेंटिंग- पेंटिंग नजर आती है। बजट में बिहार के विकाश के लिए विशेष पैकेज मिलने की पूरी संभावना थी परन्तु बजट से इस वर्ष भी बिहार को निराश ही हाथ लगी। केन्द्रीय बजट में कई ऐसी बाते हैं, जो सुनने में अच्छी लगी होंगी, लेकिन तह में देखें तो आम आदमी को कुछ हासिल नहीं हुआ। वित्त मंत्री ने कहा है कि प्रतिव्यक्ति आय दोगुनी हो गई, लेकिन किसकी आय दोगुनी हुई यह नहीं बताया। बजट में गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी के साथ ही मनरेगा की कोई चर्चा नहीं की गई है। श्री कुशवाहा ने कहा कि बिहार के साथ केन्द्र ने फिर अन्याय किया, करोड़ों बिहारवासियों को छलने का काम हुआ है। बिहार के लिए कोई नयी योजना इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में नही दी गयी। बिहार की लगातार हो रही उपेक्षा बजट में एक बार पुनः स्पष्ट हुयी है। बिहार को मिलने वाली उसके हिस्से की राशि में लगातार कटौती की जा रही है। यही नहीं बिहार के विभिन्न योजनाओं के मद में हजारों करोड़ रुपए केंद्र सरकार के पास बाकी हैं। राज्य सरकार को बकाया राशि नहीं मिलने के कारण बिहार का विकास बाधित होता है। भाजपा की केंद्र सरकार सोची समझी साजिश के तहत बिहार के विकास को अवरुद्ध करना चाहती है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हम लगातार बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने, जातीय जनगणना कराने, पटना विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने की मांग करते रहे हैं पर केंद्र सरकार इसे लगातार नकारती रही है। मोदी सरकार देश में लगातार नफरत फैलाने का काम कर रही है पर अब यह चलने वाला नहीं, जनता देश मैं सौहार्द पूर्ण वातावरण चाहती है।

सशक्त भारत की बुनियाद रखने वाला है बजट : जायसवाल

पटना। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने केन्द्रीय बजट को भविष्य के सशक्त भारत की बुनियाद रखने वाला करार दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों पर चलते हुए भारतीय अर्थव्यस्था के आकार में पिछले 9 वर्षों में एतिहासिक बढ़ोतरी हुई है। भारत दुनिया की 10वीं अर्थव्यवस्था से बढ़कर दुनिया की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। आज पेश हुआ बजट बढ़ते भारत की इसी प्रगति की गति को और तेज करने वाला है। उन्होंने कहा कि वितमंत्री ने इस बजट में मध्यम वर्ग, गांव, किसान, गरीब, मजदूर समेत समाज के हर वर्ग का ख्याल रखा है। बजट के प्रावधानों से बिहार जैसे विकासशील राज्यों को भी काफी लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि बजट में कर मुक्त आय की सीमा को 5 लाख से बढ़ाकर 7 लाख कर दिया गया है। जिसका सीधा लाभ देश के करोड़ों मध्यम आय वाले परिवारों को होगा। इससे उनकी बचत बढ़ेगी जिसका सीधा सकारात्मक लाभ देश की अर्थव्यवस्था को मिलेगा। बजट में निश्चित किया गया है कि देश में कोई भूखा न सोए। मुफ्त राशन प्रदान किये जाने वाले प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना को एक साल के लिए बढ़ा दिया गया है। उन्होंने कहा कि बजट में किये गये प्रावधानों के मुताबिक कोरोना से प्रभावित हुए छोटे और मझोले उद्योगों को राहत दी जाएगी। कहा कि युवा अंतरराष्ट्रीय अवसरों के लिए तैयार हो सकें, इसके लिए अलग-अलग राज्यों में 30 स्किल इंडिया इंटरनेशनल सेंटर बनाए जाएंगे। बजट में बुजुर्गों का ख्याल रखते हुए वरिष्ठ नागरिक खाता स्कीम की सीमा अब 4.5 लाख से बढ़कर 9 लाख करने की भी घोषणा की गयी है, साथ ही रेलवे के लिए 2.40 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत परिव्यय का प्रावधान किया गया है जो आज तक का सबसे बड़ा आवंटन है। कुल मिलाकर भारतीय अर्थव्यवस्था का भविष्य उज्ज्वल है और सही रास्ते पर है।

अमृत बजट के नाम पर देश के सामने जहर परोसा गया है : गगन

बिहार पुनः उपेक्षित हीं रह गया

पटना। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने कहा कि अमृत बजट के नाम पर देश वासियों को जहर परोसा गया है। वहीं, इस बार के बजट में भी बिहार की उपेक्षा की गई। राजद प्रवक्ता ने कहा कि देश की सबसे ज्वलंत समस्या महंगाई और बेरोजगारी को इस बजट में पूर्णतः नजरंदाज कर दिया गया है। डीजल, पेट्रोल और रसोई गैस की कीमतों में कोई राहत नहीं दिया गया। लोगों को उम्मीद थी कि डीजल, पेट्रोल और रसोई गैस को जीएसटी के दायरे में लाया जाएगा तो इससे उपभोक्ताओं को कुछ राहत मिलेगा पर ऐसा नहीं हुआ। रेल के बढ़े किराए में कोई कमी नहीं की गई। रेलवे द्वारा बुजुर्ग नागरिकों को पूर्व से मिल रहे रियायत एवं अन्य सुविधाएं को कोरोना काल में समाप्त कर दिया गया था। उम्मीद थी कि उसे पुनः चालू कर दिया जाएगा पर ऐसा नहीं हुआ। मनरेगा में कटौती के सिलसिले को जारी रखा गया है। जबकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था , कृषि और रोजगार सृजन को ध्यान में रखते हुए बजट आवंटन बढ़ाने और मनरेगा के माध्यम से किसानों को मजदूर उपलब्ध कराने की मांग की जा रही थी। बेरोजगारी दूर करने की दिशा में बजट में कोई प्रावधान नहीं दिखाई पड़ रहा है। इस प्रकार केन्द्रीय बजट में गांव, किसान, मजदूर और युवाओं की पुरी उपेक्षा की गई है। बिहार के लिए तो यह बजट और भी ज्यादा निराशाजनक है। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा तो दूर बिहार के लिए विशेष पैकेज के साथ हीं पटना विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की दीर्घलम्बित मांग के सम्बन्ध में भी बजट में कोई चर्चा नहीं की गई है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में जुमलेबाजी को केवल शब्दों के आवरण से ढंकने का प्रयास किया है।

देश और प्रदेश के लिए निराशाजनक रहा बजटः अखिलेश सिंह

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि यह बजट पूर्णतया निराशाजनक और फीका रहा। राज्य समेत देश की जनता के आशाओं पर पानी फेरने वाला रहा क्योंकि टैक्स स्लैब में छूट तब प्रासंगिक होता जब कोरोना से बेरोजगार हुए लोगों के रोजगार के लिए यह सरकार बजट में कुछ विशेष प्रावधान करती। इस बजट को अमीरों का बजट बताते हुए बिहार कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि छोटे एवं मंझोले व्यवसायियों के लिए इस बजट में कुछ नहीं रहा वहीं बिहार जैसे पिछड़े राज्य के लिए इस बजट में विशेष पैकेज की भी घोषणा नहीं की गई। प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि बिहार के लिए रेलवे जीवन रेखा है और बिहार में कोई नई रेल परियोजना या आमजन के लिए नई ट्रेनों की योजना का नहीं होना निराशाजनक है। देश में जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं उनके अनुसार बजट को बनाना भाजपा की नीति बताती है कि वो चुनावी बजट बनाकर लोकलुभावन रूप में पेश कर रही है। पिछले 8 साल से मोदी सरकार जनित बेरोजगारी सहित कोरोना से उपजे 9 करोड़ बेरोजगारी को दूर करने के लिए बजट में विशेष प्रावधान का न होना आश्चर्यजनक है। साथ ही अडानी ग्रुप के द्वारा एलआईसी सहित भारतीय बैंकों के पैसों को डुबाने वाले कृत्य पर उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री ने अपने पूंजीपति मित्रों के लिए बजट में केवल विशेष प्रावधान लाकर पैसे जुटाते हैं ताकि आम लोगों की गाढ़ी कमाई को लूटने में उनके मित्रों को आसानी हो। यह सरकार बजट से लेकर अपनी नीतियों में आम लोगों के खिलाफ ही रहती है।

केंद्रीय बजट में छात्रों-युवाओं के लिए निराशा : रणबीर नंदन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

केंद्रीय बजट पर जदयू के प्रवक्ता व पूर्व विधान पार्षद डॉ रणबीर नंदन ने कहा कि इस केंद्रीय बजट से बदतर हो चुकी अर्थव्यवस्था का कोई लाभ नहीं होने वाला है। केंद्र सरकार ने इनकम टैक्स के स्लैब में मामूली बदलाव किया है जबकि बढ़ती महंगाई को देखते हुए 10 लाख रुपए तक के इनकम को टैक्स के दायरे से बाहर करना चाहिए। साथ ही बजट में छात्रों और युवाओं के लिए कुछ भी नहीं रखा गया है। उन्होंने कहा कि युवाओं में बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है। जबकि केंद्र सरकार ने जो बजट पेश किया है उसमें रोजगार को लेकर खास नहीं किया गया है। डॉ नंदन ने कहा कि सरकारी विभागों में अभी पौने 10 लाख से अधिक पद खाली हैं। इसमें डिफेंस में 2.64 लाख, रेलवे में 2.93 लाख, होम अफेयर्स में 90 हजार, रेवेन्यू में 80 हजार पद के साथ अन्य सरकारी विभगां में कुल 1.06 लाख पद खाली हैं। केंद्रीय बजट में इन खाली पदों को भरने का कोई संकल्प नहीं है। डॉ नंदन ने कहा कि शीर्ष नौकरियों मसलन आईएएस व आईपीएस के पद भी खाली हैं। जो पूरी प्रशासनिक व्यवस्था को प्रभावित कर रही हैं। बिहार में आईएएस के 133 और आईपीएस के 19 पद खाली हैं। अन्य राज्यों में भी यही स्थिति है। लेकिन केंद्र सरकार इन पदों को कब तक भरेगी ऐसी कोई बात बजट में नहीं है। उन्होंने कहा कि स्लवि.लिप की रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी 2023 में दुनिया के करीब 101 स्टार्टअप 31,436 कर्मचारियों को नौकरी से निकाल चुके हैं। जबकि दिसंबर 2022 में बेरोजगारी दर 8.3 प्रतिशत रही है। यानि युवाओं पर दोहरी मार लगातार जारी है। डॉ नंदन ने कहा कि बिहार के परिप्रेक्ष्य में तो केंद्र का सौतेला व्यवहार जगजाहिर है। विशेष राज्य के दर्जे की मांग पर एक बार फिर बिहार को मायूसी ही हाथ लगी है। साथ ही राज्यों को मिलने वाली सहायता में भी केंद्र सरकार भेदभाव ही कर रही है। इस बजट को केंद्र की भाजपा सरकार जानती है कि 2024 में उसकी स्थिति डावांडोल हो चुकी है। इसलिए एक बार फिर कुछ जुमलों के जरिए बजट को लोकलुभावन दिखाने का प्रयास हो रहा है। लेकिन जुमलेबाजी के दिन पूरे हो चुके हैं। युवाओं की बेरोजगारी और महंगाई की मार से पिसती जनता की केंद्र सरकार द्वारा की गई अनदेखी भाजपा को सबक सिखाएगी।

बजट आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को पूरा करेगा : पारस

पटना। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति कुमार पारस ने कहा कि इस बजट से देश का चैमुखी विकास तेजी से होगा, आज का बजट किसान, नौजवानों और छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए पेश किया गया है। श्री पारस ने आगे कहा कि इस बजट में सभी वर्ग के लोगों को शामिल किया गया है, आज की बजट को लेकर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि इस बजट में खासकर महिलाओं को सशक्त बनाने, पर्यटन के लिए कार्य योजना, कारीगरों के लिए पहल और हरित विकास पर बजट को केंद्रित रखा गया। आज के बजट के घोषणाओं के अनुसार बजट से महिलाओं का सम्मान बढ़ा है, बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी की घोषणा को भी बढ़िया कदम बताया। प्रदेश प्रवक्ता ललन कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि 2023 का बजट पर प्रदेश अध्यक्ष सांसद प्रिंस राज पासवान ने कहा कि अमृत काल का पहला बजट लोक कल्याणकारी है, यह गरीब किसानों, आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों, वंचितों, आर्थिक रूप से पिछड़े तथा मध्यम वर्ग को सशक्त और सक्षम बनाने वाला बजट है। यह बजट बच्चों की पढ़ाई, मध्यम वर्ग की कमाई और बुजुर्गों की भलाई पर बल देने वाला है। आगे श्री प्रिंस ने कहा कि कोविड जैसा वैश्विक महामारी से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने मजबूती के साथ मुकाबला किया तथा देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाकर खड़ा किया जो पूरे विश्व के लिए मिशाल बना।

राजद कार्यालय में मनी स्व भूपेन्द्र नारायण मंडल की जयंती

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय में महान समाजवादी नेता स्व भूपेन्द्र नारायण मंडल की जयंती प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह की अध्यक्षता में मनाई गयी। इस अवसर पर उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने कहा कि स्व भूपेन्द्र नारायण मंडल महान समाजवादी नेता तथा आजादी के योद्धा थे। इन्होंने 1921 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में छात्रों का नेतृत्व किया। इनका सार्वजनिक जीवन वकालत पेशा से 1930 में आरंभ हुआ। वे 1940 में मधेपुरा के छात्रों द्वारा छुआछूत मिटाओ आन्दोलन में इन्होंने मुख्य भूमिका निभाई। 1957 के आम चुनाव में भूपेन्द्र नारायण मंडल सोशलिस्ट पार्टी के विधायक बनें। वे 1968 तथा 1972 में दो बार राज्यसभा सांसद बनें। वे परतंत्र भारत में दो बार तथा स्वतंत्र भारत में चार बार जेल भी गये। वे गरीब गुरबों की लड़ाई को सड़क से लेकर सदन तक जीवनपर्यन्त लड़ते रहें। इस अवसर पर राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक, भोला यादव, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, प्रदेश महासचिव मो फैयाज आलम कमाल, मदन शर्मा, ईअशोक यादव, संजय यादव, डॉ कुमार राहुल सिंह, डॉ प्रेम कुमार गुप्ता, प्रदेश सचिव रंजीत कुमार सिंह, सारिका पासवान, मनीष कुमार सिंह, मनोज यादव सहित दर्जनों गणमान्य नेताओं ने स्व भूपनारायण मंडल के तैल चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

केंद्रीय बजट बिहार विरोधी : पप्पू यादव

पटना। जाप राष्ट्रीय अध्यक्ष पप्पू यादव ने बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट केंद्र सरकार का विदाई बजट है। जिसे पूंजीपतियों के हितों को लाभ पहुचाने वाला बजट है। बजट महंगाई व बेरोजगारी को और बढाने वालाहै। पूंजीपतियों के हितों को रक्षा करने वाले इस बजट से किसान, मजदूर, युवा, महिला, नौकरीपेशा, व्यापारी वर्ग में निराश है। बजट में ब से न बाजार है,ज से न जनता है,ट से न है टका, न अर्थव्यवस्था है। कुल मिलाकर सरकार ने फिर सबको बस ठगा है। पप्पू यादव ने कहा कि इस बजट में केंद्र सरकार ने बिहारवासियों को निराश किया है। केंद्र सरकार ने बिहार के विकास के लिए पैसान देकर प्रदेश के लोगों के साथ छल किया है। आगामी चुनाव में प्रदेश और देश की जनता केंद्र सरकार की विदाई करेगी।

बजट में किसान, मजदूर और युवाओं के लिए कुछ नहीं : अरुण यादव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

युवा राजद के प्रदेश प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी अरुण कुमार यादव ने केंद्रीय आम बजट प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बेरोजगारी, महंगाई पर लगाम लगाने पर बजट में कोई चर्चा नहीं है। बजट में गरीब, किसान, मजदूर और युवाओं के लिए कुछ भी नहीं है। केंद्र की मोदी सरकार सिर्फ पूंजीपतियों को फायदा पहुँचाने के लिए काम कर रही है। केंद्रीय आम बजट पूरी तरह दिशाहीन है। श्री यादव ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार बिहार के साथ लगातार सौतेला व्यवहार कर रही है। विशेष राज्य के दर्जे पर कुछ भी नहीं मिला। मोदी सरकार ने 2022 तक किसानों की आय दोगुना करनी बात कहीं थी लेकिन 2022 समाप्ति के बाद भी किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। किसानों स्थिति और कमजोर हो गई। हर वर्ष दो करोड़ नौकरी मुहैया करने के वादे पर अभी तक कोई अमल नहीं किया गया। जबकि वादे अनुसार 8 वर्षों में अबतक 16 करोड़ नौकरी मुहैया कराना था। लेकिन बजट में नौकरी मुहैया कराने पर कोई चर्चा नहीं किया गया। श्री यादव ने कहा कि भागलपुर और अंग प्रदेश के लोगों को विशेष रूप से केंद्र सरकार ने ठगने का काम किया है। भागलपुर में रेल मंडल कार्यालय की स्थापना, हवाई सेवा चालू और भागलपुर में एम्स खोलने की भागलपुर और अंग प्रदेश की जनता का बहुप्रतीक्षित मांगों पर भी मोदी सरकार ने पानी फेरने का काम किया है।

बजट में देश की अर्थव्यस्था का रखा

गया विशेष ख्याल : चिराग

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने बजट की सराहना करते हुए इसे समावेशी बजट बताया है। पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन जी को बधाई देते हुए पासवान ने कहा कि यह एक नए, समृद्ध, शक्तिशाली और विकसित भारत की अर्थव्यवस्था को सशक्त करने वाला बजट है, जिसमें प्रधानमंत्री का विजन सबका साथ सबका विकास स्पष्ट तौर पर दिखाई दे रहा है। श्री चिराग ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल मार्गदर्शन और केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन जी के नेतृत्व में तैयार किया गया 2023-24 का बजट आम आदमी की आकांक्षाओं और आशाओं को पूरा करने वाला साबित होगा। श्री चिराग ने कहा कि यह एक ऐसा बजट है, जो समावेशी है, जिसमें हर वर्ग का ख़्याल रखा गया है। बजट में हाशिये पर खड़े लोगों के साथ अर्थव्यवस्था में सबसे ज्यादा योगदान करने वाले मिडिल क्लास का भी ध्यान रखा गया है। श्री चिराग ने कहा कि इस बजट में आम आदमी का पूरा-पूरा ख्याल रखा गया है। बजट के माध्यम से वित्त मंत्री जी ने करदाताओं को बड़ा तोहफा दिया है, जिसमें 7 लाख तक की आय पर अब आयकर नहीं देना पड़ेगा। जो लोग आयकर देते हैं इनके आयकर स्लैब को 5 स्लैब में बांटा गया है और ऐसे बदलाव किये गए ताकि ज्यादा पैसे आपकी जेब में जा सकें। चिराग ने कहा कि इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष जोर दिया गया है। श्री चिराग का मानना है कि मौजूदा परिस्थिति में इससे बेहतर बजट नहीं हो सकता, जिसमें आम आदमी के साथ देश की अर्थव्यस्था का भी ख्याल रखा गया है।

सीमावर्ती इलाको में आतंकियों का गढ नहीं बनने दिया जाएगा : विजय सिन्हा

● आम बजट सराहनीय और सकरात्मक

पटना। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता विजय कुमार सिन्हा ने केंद्र सरकार द्वारा लोकसभा में पेश आम बजट को सराहनीय और सकरात्मक बजट बताते हुए कहा कि यह बजट युवाओं के बेहतर भविष्य बनाने में काफी मददगार साबित होगा। उन्होंने हाल में ही गोपालगंज में अंकित कुमार की हत्या के बाद पुलिस प्रशासन द्वारा बरते जा रहे ढीले रवैये पर रोष प्रकट करते हुए कहा कि सीमांचल इलाकों सहित राज्य के अधिकांश इलाकों में हिंदुओं के मन में भय पैदा किया जा रहे है। उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि भाजपा किसी हाल में सीमावर्ती इलाकों में दहशत और आतंकियों का गढ नहीं बनने देगी।

भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित जन कल्याण संवाद कार्यक्रम में लोगों की समस्या सुनने के बाद पत्रकारों से चर्चा करते हुए भाजपा नेता ने कहा कि लोकसभा में पेश आम बजट मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने वाला, राहत देने वाला और युवाओं के बेहतर भविष्य बनाने में मदद करने वाला है। उन्होंने कहा कि इस बजट से हर तबके के लोगों को अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि बजट को लेकर जैसी उम्मीद की गई थी वैसा ही यह बजट है। श्री सिन्हा ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि बिहार में बीपीएससी से लेकर सामान्य परीक्षा में प्रश्नपत्र लीक होना यह बताता है कि शिक्षा विभाग के मंत्री से विभाग नहीं संभल रहा है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री सिन्हा ने कहा कि आज बिहार में प्रतिदिन एक दर्जन हत्यायें हो रही है और सत्ता पक्ष के लोग इसे छोटी घटना बता रहे है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि इनकी आत्मा दर्जन भर हत्याओं से नहीं बुझती। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि सीमांचल इलाकों में हिंदुओं को टारगेट किया जा रहा है और तुष्टिकरण की कोशिश की जा रही है।

बजट आमलोगों के साथ छलावा : चंदन सिंह

पटना। जदयू के प्रदेश महासचिव चंदन सिंह ने भाजपा सरकार के केन्द्रीय बजट पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि बेरोजगारी बेतहाशा बढ़ रही है, उस पर क्या किया गया? रोजगार के नवसृजन पर कोई चर्चा नहीं की गयी। लोगों को जब इंकम होगा तब न टैक्स स्लैब का फायदा उन्हें मिलेगा? 3 लाख सालाना कमाने वाले मतलब हर महीने 25000/ से ऊपर कमाने वाले को फायदा दिखा रहे हैं। पर 25 हजार रुपए से नीचे वाले पर क्या सोचा गया? उनका घर कहां से चलेगा? इन सब मुद्दों पर बजट में सन्नाटा है। चंदन सिंह ने कहा कि बजट में महंगाई पर या किचन पर कोई भी बात कहां है? भाजपा महिला मंडल रोड पर सिलेंडर और हाथ में कद्दू लेकर घूमते नहीं थकती थीं। आप इसे पूर्ण रूप से अडानी- अंबानी को समर्पित बजट विशेष कह सकते हैं। आने वाले दिनों में नये एयरपोर्ट बनाने का ठेका भी इन्हें ही दिया जाएगा आम व्यक्तियों के लिए यह बजट सिर्फ पीड़ादायक है।

आम बजट बदलते भारत की सोच : मंगल पांडेय

पटना। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि भारत का यह बजट ऐसे समय पर पेश हो रहा है, जब दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की रफ्तार धीमी हो गई है और संभावित मंदी की ओर जा रही हैं। ऐसे में केंद्र सरकार की यह बजट सभी वर्गों के लिए एक आशा की किरण है। इस बजट में सभी क्षेत्रों और वर्गों का ख्याल रखा गया है। श्री पांडेय ने कहा कि इस बजट में कृषि ऋण को 20 लाख करोड़ देने का लक्ष्य रखा गया है। वहीं मछुआरों के लिए विशेष पैकेज, पीएम आवास योजना का खर्च 48 हजार करोड़ से बढ़ाकर 2023-24 में 79 हजार करोड़ किया जाना एक सराहनीय पहल है। वहीं गरीबों के लिए एक साल और मुफ्त अनाज देना, रेलवे के लिए 1.4 लाख करोड़ से बजट बढ़ाकर 2.4 लाख करोड़ करना, ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 75 हजार करोड़, जेल में बंद गरीबों को छुड़वाने की पहल, अगले तीन सालों में सरकारी आदिवासी छात्रों को समर्थन देने वाले 740 एकलव्य मॉडल स्कूलों के लिए 38 हजार 800 शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति केंद्र सरकार की प्रशंसनीय पहल है। बजट में यह भी बताया गया कि 50 नए एयरपोर्ट बनाए जाएंगे। वहीं बच्चों और युवाओं के लिए नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित करना नए भारत की नयी उम्मीद है। श्री पांडेय ने कहा कि सरकार 2 साल के लिए महिला सम्मान बचत योजना लांच करने जा रही है। इस बजट में समाज के हर वर्ग को लाभ दिया गया है।

राष्ट्रीय जनता दल के तत्वाधान में अमर शहीद जगदेव जन्म शताब्दी समारोह का हुआ आयोजन, उपमुख्यमंत्री हुए शामिल

संघर्ष व विचारों के माध्यम से जगदेव बाबू के बातों को आगे बढ़ायेंगे : आलोक मेहता

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के तत्वाधान में अमर शहीद जगदेव जन्म शताब्दी समारोह पटना के बापू सभागार में प्रधान महासचिव सह मंत्री आलोक कुमार मेहता की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूआत अमर शहीद जगदेव प्रसाद एवं भूपेन्द्र नारायण मंडल जी के तैल चित्र पर उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह, प्रधान महासचिव आलोक कुमार मेहता सहित उपस्थित गणमान्य नेताओं ने माल्यार्पण कर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। माल्यार्पण के बाद उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव उपस्थित नेताओं के साथ दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन संबोधन में उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव ने कहा कि जगदेव बाबू की कुबार्नी का संदेश न सिर्फ बिहार बल्कि भारतवर्ष के लिए है जिन्होंने सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ी और नब्बे भाग को अधिकार मिले इसके लिए जो संघर्ष और आन्दोलन किया वो हमसभी के लिए सामाजिक न्याय की धारा तथा संघर्षों के माध्यम से उनके विचारों को आगे बढ़ाने के लिए संकल्प को और मजबूती देता है। इस मौके पर प्रदेश प्रधान महासचिव सह मंत्री आलोक कुमार मेहता ने कहा कि सौ में नब्बे शोषित है, नब्बे भाग हमारा है। वोट हमारा, राज तुम्हारा नहीं चलेगा। आज जगदेब बाबू के जन्म शताब्दी का कार्यक्रम हो रहा है इसलिए उनके संदेश और सन्दर्भ को समझना आवश्यक है। जिस समय उन्होंने यह संदेश दिया था उस समय उनके लोग निद्रा में थे और उनके विरूद्ध जो लोग थे वो अर्ल्ट थे, जो साजिश करके उनके साथ किस तरह का कार्य किया ये सभी ने देखा लेकिन उनकी कुर्बानियां आज उनके लोगों को जगा दिया है। और आज जब हम उनकी नारों पर बात करते हैं तो कुछ लोगों को मिर्ची लगती है। लेकिन मैं बता देना चाहता हूं कि आज हमारे लोग जगे हुए हैं और उनको उनके अधिकार और भागीदारी से कोई भी वंचित नहीं कर सकता है। जगदेव बाबू ने कहा था कि पहली पीढ़ी के लोग संघर्ष के दौरान मारे जायेंगे, दूसरी पीढ़ी के लोग जेल जायेंगे लेकिन तीसरी पीढ़ी राज करेगी। इन्होंने आगे कहा कि जगदेव बाबू के विचारों के खिलाफ बोलने वाले लोग नागपुर में बैठे हुए हैं। पहले जिस तरह से डराकर और गोली के सहारे सत्ता ली गई उसके बाद नोट को माध्यम बनाया गया लेकिन अब बैलेट की शक्ति को हम सभी जान और पहचान गये हैं और इसके माध्यम से हम अपने वोट का इस्तेमाल करके सत्ता और भागीदारी में मजबूती से आगे बढ़ रहे हैं। प्रजातंत्र और डेमोक्रेशी पर लगातार हमला हो रहा है। हम अपने संघर्ष और विचारों के माध्यम से जगदेव बाबू के बातों को मजबूती के साथ आगे बढ़ायेंगे। सभी को एकजुट होकर इस लड़ाई और संघर्ष में साथ खड़े होने की आवश्यकता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी, भोला यादव, वृषिण पटेल, डॉ तनवीर हसन, अनिल सहनी, शक्ति सिंह यादव, एजाज अहमद, राजेश यादव, विधायक बागी कुमार वर्मा, राजंवशी महतो, फतेह बहादुर सिंह, मुकेश रौशन, इन्द्रदेव प्रसाद, रविन्द्र सिंह, राजेश कुशवाहा, सुनील कुशवाहा, उपेन्द्र प्रसाद सिंह, रामाशीष यादव, अरविन्द सहनी, सुरेश मेहता, निर्मल कुशवाहा, मधुमंजरी मेहता सहित गणमान्य नेतागण उपस्थित थे। प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि पूरे प्रदेश से अमर शहीद जगदेव प्रसाद के विचारों से प्रभावित और उनके द्वारा शोषितों, वंचितों के अधिकारों के लिए जो संघर्ष और आन्दोलन को आगे बढ़ाने के संकल्प में साथ देने के लिए राज्य भर से लोग आये थे। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो सुबोध कुमार मेहता ने की जबकि धन्यवाद ज्ञापन श्रवण कुशवाहा ने किया।

जनता के साथ किये गए कमिटमेंट को पूरा करने पर सरकार का विशेष जोर : श्रवण

● शराबबंदी कानून का उलंघन करने वालों के विरुद्ध चल रहा स्पीडी ट्रायल : सुनील कुमार

● उपेन्द्र बाबू को बताना चाहिए कि संसदीय बोर्ड का अध्यक्ष पद झुनझुना पकडाने वाला है क्या: जयंत राज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि हमारे मुख्यमंत्री का और हमलोगों का जो जनता के साथ कमिटमेंट है उसको पूरा करने, मुकाम तक पहुंचाने में हम सब लोगों की दिलचस्पी रहती है। एक सवाल के जवाब में मंत्री श्रवण कुमार ने कहा कि उपेंद्र कुशवाहा बहुत बड़े नेता हैं और उनको इस दल में जितना सम्मान मिला, मैं समझता हूं कि अभी तक इतना सम्मान शायद ही कहीं और उनको मिला होगा। वो राष्ट्रीय पॉलिटिकल पार्टी के अध्यक्ष थे तो उनको राष्ट्रीय स्तर का सम्मान दिया गया। अगर संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष का पद झुनझुना है तो उनसे ही पूछिए कि कौन सा ऐसा पद है जो झुनझुना नहीं है, बहुत पावरफुल है, बहुत ताकतवर है। जिस पथ पर वह जाना चाहते हैं, उनके इच्छा का भी तो पता चलना चाहिए। हम लोग यह बात जानते हैं कि जब जब हमलोगों के साथ रहे या आए तब उन्हें पर्याप्त सम्मान मिला। हमलोग के बाद जहां गए हैं वहां तो उनको कुछ नहीं मिला। यहां पर तो पहली बार विधायक बने और विपक्ष के नेता बन गए। दल छोड़ भाग गए, फिर आए तो राज्यसभा के सदस्य बन गए और भाग गए, फिर आए तो पार्लियामेंट्री बोर्ड के अध्यक्ष व विधान परिषद के सदस्य बने। अगर उनको लगता है यह सब झुनझुना है तो झुनझुना का स्वाद उन्होंने कैसे लिया, इसका भी खुलासा उनको करना चाहिए। मंत्री मंगलवार को जदयू कार्यालय में आयोजित कार्यकताओं के दरबार में मंत्री कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

संक्षिप्त खबरें

जमीनी विवाद में हुई फायरिंग, कोई हताहत नहीं

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के कापन में जमीनी विवाद को लेकर फायरिंग करने की मामला प्रकाश में आया है। मामले को लेकर कापन वार्ड 03 निवासी सुधीर कुमार चौधरी ने थाने में एक आवेदन दिया है। घटना के संबंध में पीड़ित ने आवेदन के माध्यम से बताया कि मंगलवार की रात्रि मेरे घर पर फायरिंग की गई। नींद खुलने पर हम लोग छत पर जाकर देखने गए तो देखा कि नीचे तीन चार लोग पिस्टल लिए खड़ा है। छत पर हमलोगों को देखकर जान मारने की नियत से पुनः फायरिंग करना शुरू कर दिया। किसी तरह जान बचाकर हम लोग घर में दुबके रहे। वहीं रात्री में ही विभूतिपुर पुलिस घटनास्थल से दो खोखा बरामद कर ले गई है। इस संबंध में थाना अध्यक्ष संदीप पाल से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि जमीनी विवाद को लेकर फायरिंग करने का मामला प्रकाश में आया है। मामले की जांच कराई जाएगी।

पिकअप की ठोकर से शिक्षक की मौत

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के बिरसिंहपुर चौक के समीप मंगलवार की देर रात पिकअप की ठोकर से 38 वर्षीय शिक्षक की मौत हो गई है। मृतक शिक्षक की पहचान समस्तीपुर नगर थाना क्षेत्र के बहादुरपुर गांव निवासी छोटे लाल शाह के 38 वर्षीय पुत्र रवि शंकर कुमार उर्फ रवि कुमार के रूप में हुई है। वहीं लोगों का बताना है कि उक्त शिक्षक प्राथमिक विद्यालय कल्याणपुर कन्या में सहायक शिक्षक के रूप में कार्यरत था। मंगलवार की देर रात वह अपने बाईक से समस्तीपुर जा रहा था इसी दौरान बिरसिंहपुर चौक के समीप पीछे से एक पिकअप ने ठोकर मार दिया। जिससे घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही कल्याणपुर पुलिस मौके पर पहुंची मृतक युवक के शव को जप्त कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर भेज दिया। वहीं थाना अध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि मृतक शिक्षक के परिजन द्वारा आवेदन देने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

गैस गोदाम का ताला तोड़ लाखों रुपए के सामान की हुई चोरी

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के जटमलपुर के समीप स्थित श्री संतोष इंडियन गैस वितरण एजेंसी का अज्ञात चोरो के द्वारा मंगलवार की रात ताला तोड़कर लाखों रुपए की चोरी कर लेने का मामला प्रकाश में आया है। इस मामले में गैस एजेंसी के वितरक संतोष सिंह ने बताया कि 152 सिलेंडर 41 खाली सिलेंडर 99 पीस रेगुलेटर 15 पीस चूल्हा सहित अज्ञात चोरों के द्वारा चोरी कर ली गई है। जिसमें लाखों रुपए का नुकसान होने की बात बताई है। इस मामले को ले गैस एजेंसी के प्रबंधक द्वारा अज्ञात चोरों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई है। वहीं थाना अध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि आवेदन देने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

शिक्षक को आया हार्ट अटैक, इलाज के दौरान मौत

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के तीरा गांव निवासी छोटे लाल साह के 52 वर्षीय पुत्र शिक्षक अशोक कुमार के ईलाज के दौरान हार्ट अटैक होने के कारण मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि कुछ दिन पहले उनकी तबीयत खराब हो गई थी। इलाज के लिए पटना के एक निजी क्लीनिक में भर्ती कराया गया। जहां ईलाज के दौरान हार्ट अटैक आने के कारण मंगलवार को मौत हो गई। वहीं लोगों का बताना है कि मृतक युवक दरभंगा जिला के प्राथमिक विद्यालय छतौना में शिक्षक के पद पर कार्यरत थे। इसकी पुष्टि स्थानीय मुखिया अर्चना कुमारी ने भी किया है।

पुराने वारंटी पिता-पुत्र को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा

समस्तीपुर, मोरवा। ताजपुर थाने की पुलिस ने पुराने वारंटी पिता-पुत्र को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। उनकी पहचान मोतीपुर निवासी अशोक साह और उनके पुत्र पुत्र धीरज कुमार के रूप में की गई है। जिसे बुधवार कों ताजपुर थाने की पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

बिहार के लिए निराशाजनक बजट : ठाकुर मनोज भारद्वाज

समस्तीपुर जिला कांग्रेस के पूर्व महासचिव ठाकुर मनोज भारद्वाज के अनुसार केंद्रीय वित्त मंत्री के द्वारा सदन में पेश किए गए बजट में शिक्षा, स्वास्थ्य व मनरेगा योजना की राशि की कमी की गई है। इससे पहले भी मोदी सरकार केंद्रीय अंश की कटौती कर चुकी है। इन विभागों में बिहार जैसे गरीब राज्य के लिए निराशा के सिवा कुछ नहीं है।

पुलिस ने किया बाइक लूट मामले का खुलासा, लूट के सामान के साथ छह बदमाश गिरफ्तार

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

पुलिस ने बीते 23 जनवरी की देर शाम उजियारपुर थाना क्षेत्र के चंदौली कॉलेज के पास हुई बाइक और रुपए लूट की घटना का बुधवार को उद्भेदन कर दिया। पुलिस ने इस मामले में लूट के वाहन के साथ छह बदमाशों को गिरफ्तार किया है। इस बाबत समस्तीपुर पुलिस अधीक्षक विनय तिवारी के द्वारा उजियारपुर थाने पर एक पत्रकार वार्ता को संबोधित किया गया। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि इस बाइक और रुपए लूट की घटना के बाद इसके उद्भेदन के लिए दलसिंहसराय डीएसपी दिनेश कुमार पांडे के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया था और इस टीम ने काबिले तारीफ काम करते हुए मात्र एक सप्ताह के अंदर घटना में संलिप्त बदमाशों को लूट के सामान के साथ गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गई। इस मामले में पुलिस ने छह बदमाशों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार बदमाशों की पहचान उजियारपुर थाना क्षेत्र के चंदौली गांव के राजाराम सहनी के पुत्र कंचन कुमार, सुजीत सहनी का पुत्र विक्रम कुमार, बिन्दु सहनी का पुत्र विरजू कुमार, देवेंद्र सहनी का पुत्र देव सहनी, राम विलास राम के पुत्र छोटू कुमार व महिसारी गांव के सुरेश सहनी के पुत्र सोनू कुमार के रूप में बताई गई है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार बदमाशों से पुलिस के द्वारा विस्तृत पूछताछ की गई है और घटना में संलिप्त अन्य बदमाशों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस प्रयासरत है। उन्होंने बताया कि इस घटना में संलिप्त चंदौली गांव के ही रामचंद्र सहनी के पुत्र मंगल एवं नारायण सहनी के पुत्र विकास कुमार की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। उन्होंने बताया कि आरोपियों के पास से लूटी गई बाइक व मोबाइल के अलावे चार मोबाइल बरामद की गई। छापेमारी टीम में पुलिस निरीक्षक दलसिंहसराय उमाशंकर राय, थानाध्यक्ष अनिल कुमार, दरोगा इन्दल यादव, अर्जुन प्रसाद सिंह, प्रहलाद प्रसाद, शकील अहमद, सअनि राजीव रंजन कुमार, राधामोहन पासवान, सिपाही दीपक कुमार, सुजांत कुमार, चौकीदार राजकुमार चौधरी के अलावे डीआईयू टीम के एसआई अनिल कुमार व अखलेश कुमार शामिल थे। उन्होंने बताया कि लूटे गए मोबाइल को बदमाशों ने कंचन कुमार के हाथों बेच दिया था। जिसे पुलिस के द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके पास से लूट का मोबाइल बरामद भी कर लिया गया है। वहीं, लूटी गई बाइक को विरजू के पास से पुलिस ने बरामद किया है। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि कंचन से मोबाइल बरामद होने बाद पुलिस इन बदमाशों तक पहुंची।

भोजन में पिल्लू मिलने पर पॉलिटेक्निक कॉलेज के छात्रों ने भोजन का बहिष्कार

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत कामेश्वर नारायण सिंह राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज टभका के हॉस्टल में रहकर अध्ययन कर रहे छात्रो को घटिया भोजन व भोजन में पिल्लू मिलने पर छात्रो ने भोजन का बहिष्कार कर दिया। साथ ही वर्ग बहिष्कार करते हुए छात्र धरना पर बैठकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। छात्रो का कहना था कि मेंस इंचार्ज रामकिशोर चौधरी के द्वारा हॉस्टल के छात्रो को घटिया भोजन दिया जाता है। जिससे छात्रों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। छात्रो का कहना था कि जबतक मेंस इंचार्ज को बदला नही जाएगा तबतक आन्दोलन जारी रहेगा। दर्जनो छात्रों ने हस्ताक्षरित आवेदन कालेज के प्राचार्य को देकर मेंस इंचार्ज को बदलने की मांग किया है। धरना-प्रदर्शन में नितीश कुमार, मोहम्मद सफी अली, अंकित कुमार, पप्पू कुमार, प्रीतम कुमार, विवेक कुमार, प्रकाश कुमार, रितिक, मनोहर सिंह, चंद्रजीत कुमार, सचिन कुमार, मनीष कुमार, काजल कुमारी, निधि कुमारी, स्वाति कुमारी, राजेश कुमार, अजय कुमार, प्रशांत कुमार, अंकित कुमार, पप्पू कुमार, अभिषेक कुमार, ऋषिकेश कुमार सहित दर्जनो छात्र भाग ले रहे थे। वहीं इस संबंध में कॉलेज के प्राचार्य ने बताया कि आज छात्र भोजन व वर्ग को बहिष्कार कर धरना-प्रदर्शन कर रहे है। मामले को गंभीरतापूर्वक जांच की जाएगी।

नशा विमुक्ति केंद्र का हुआ शुभारंभ, मेयर एवं उप मेयर ने किया उदघाटन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर शहर के बाजार समिति रोड मथुरापुर वार्ड संख्या 13 स्थित मुस्कान नशा विमुक्ति शाह पुनर्वास केंद्र का उद्घाटन बुधवार को मेयर अनिता राम, उप मेयर राम बालक पासवान, सिविल सर्जन एसके चौधरी, वार्ड पार्षद अर्चना कुमारी, रंजीत कुमार साह के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित एवं फीता काटकर किया गया। उदघाटन के उपरांत मेयर अनिता राम ने बताया कि जिले में इस तरह के केंद्र का कमी था, जिसका आज शुभारम्भ हो गया। उन्होंने बताया कि वैसे व्यक्ति या नौजवान नशे का शिकार हैं और उन्हें नशा पान के आदत से निजात हासिल करना हो तो सीधे इस संस्था के लोगो से सम्पर्क कर लाभ उठा सकते हैं। वहीं सिविल सर्जन एसके चौधरी ने बताया कि वैसे मरीज जिन्हें शराब, गांजा, भांग, नशे कि सुई, टैबलेट, स्मैक, व्हाइटनर, सुलेशन, कफ सिरप एवं किसी भी तरह के नशे से पीड़ित व्यक्ति हैं। वह यहां भर्ती होकर अपना इलाज करा सकते हैं। इतना ही नहीं जो लोग नशे के आदि हैं मुस्कान नशा विमुक्ति सह पुनर्वास केंद्र में एक माह रहकर नशे की आदत से छुटकारा पा सकते हैं। इधर संस्था के व्यवस्थापक तनवीर आलम ने बताया कि हमारे यहां नशा पीड़ित एवं मानसिक रोगियों का इलाज सफलता पूर्वक किया जाता है। मौके पर मेयर अनिता राम, सिविल सर्जन एसके चौधरी, उप मेयर राम बालक पासवान, पूर्व उप प्रमुख शिव शंकर महतो, वार्ड पार्षद अर्चना कुमारी, धीरज कुमार शर्मा, रंजीत कुमार साह, राज कुमार राय, मो० असगर उर्फ. कल्लू, आफताब आलम, मुजफ्फरपुर के वार्ड पार्षद इकबाल हुसैन, रेयाज अंसारी, वसिउल हक रिजवी (हक साहेब), उमा शंकर प्रसाद उर्फ बब्लू, फिरोज खां, मोईन खां आदि मौजूद थे।

एटीएम में चोरी का प्रयास, विफल रहने पर किया क्षतिग्रस्त

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के विद्यापतिनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत मऊ बाजार स्थित इंडिया वन की एटीएम से चोरों ने मंगलवार की रात्रि कैश चोरी करने का प्रयास किया। हालांकि चोर एटीएम के कैश बॉक्स को नहीं निकाल पाए। इसके बाद बदमाशों ने एटीएम को पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना की जानकारी तब हुई जब आसपास के लोग बुधवार की सुबह टहलने के लिए निकले। लोगों ने एटीएम को खुला देख इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच की। चोरों की संख्या कितनी थी, इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है। एटीएम से चोरी का प्रयास विफल होने पर पुलिस ने राहत की सांस ली है। वहीं, घटना की सूचना पाकर एटीएम एजेंसी के कर्मी गुड्डू कुमार भी घटनास्थल पर पहुंच मामले की जांच की। क्षतिग्रस्त एटीएम को देख ऐसा लग रहा है कि चोरों ने कैश निकासी के लिए गैस कटर का प्रयोग किया हो। सीसीटीवी फुटेज देखने के बाद ही पता चलेगा कि चोरों की संख्या कितनी थी और एटीएम काटने के लिए किस हथियार का प्रयोग किया गया है। बताया जाता है कि प्रखंड में ऐसे कई एटीएम हैं जहां सुरक्षा गार्ड नहीं रहते हैं। ऐसे में एटीएम सुरक्षित नहीं है। कई बैंकों ने एटीएम से सुरक्षा गार्ड को हटा लिया है। मऊ बाजार स्थित एटीएम में भी सुरक्षा गार्ड नहीं था। इसी का फायदा चोरों ने उठाया और एटीएम से कैश चोरी करने का प्रयास किया। हालांकि चोरों को सफलता नहीं मिल पाई। थानाध्यक्ष प्रसुनजय कुमार ने बताया कि लोकल युवकों ने घटना को अंजाम देने का प्रयास किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। एटीएम अधिकारियों से सीसीटीवी फुटेज की मांग की गई है। सीसीटीवी देखने के बाद ही चोरों की संख्या की जानकारी मिल पाएगी।

केंद्रीय बजट सर्वस्पर्शी एवं विकसित राष्ट्र बनाने वाला वाला बजट : उपेन्द्र कुमार कुशवाहा

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुमार कुशवाहा ने केंद्रीय बजट जारी होने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के प्रति आभार व्यक्त किया है। कुशवाहा ने बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह बजट वंचितों को वरीयता देने वाला बजट है। इनकम टैक्स में आज तक की सबसे बड़ी छूट से मध्यवर्गीय परिवार को बहुत बड़ी राहत मिली है। गांव, गरीब, किसान, मध्यमवर्गीय परिवार एवं महिलाओं को मजबूती प्रदान करने वाली इस बजट से मजबूत भारत का निर्माण होगा। अमृतकाल का यह बजट सर्वस्पर्शी भारत-विकसित भारत एवं सभी प्रकार से सम्पन्न भारत का सपना पूरा करेगा। इस बजट के माध्यम से दूध उत्पादन एवं मछली उत्पादन के क्षेत्र में बहुत बड़ी मजबूती भी मिलेगी। देशवासियों को स्वस्थ जीवन मिले, एक मजबूत भारत का निर्माण करने वाले इस बजट से 2027 तक भारत को सभी क्षेत्रों में विश्व में प्रथम स्थान पर खड़ा करेगी। इतने बेहतर बजट के प्रति खुशियां व्यक्त करने वाले नेताओं में एमएलसी डॉङ्क तरुण कुमार चौधरी, रोसड़ा विधायक वीरेंद्र पासवान, मोहउद्दीननगर विधायक राजेश सिंह, जिला महामंत्री सुनील कुमार गुप्ता, प्रभात कुमार ठाकुर, राजीव चौधरी, जिला उपाध्यक्ष कौशल पांडेय, राकेश राज, अशोक चौधरी, रामयाद शांडिल, अशोक निषाद, अरविंद कुशवाहा, बीणा साह, जिला प्रवक्ता मुकेश कुमार सिंह, जिलामंत्री हीरा पासवान, सुनील चौधरी, शिवशंकर निषाद, जय प्रकाष राय, मनोरंजन राय, रामाकान्त राय, मनोरंजन मोदीन, वरीय नेता उमेश प्रसाद कुशवाहा, ललन सिंह, अनिल साह, पंकज लाल, सजंय सिंह, गीतांजलि, जगदेव राम, शम्भू साह, रविरंजन पांडेय, बैधनाथ झा, आदित्य प्रकाश भी शामिल रहे।

समाज और देश का प्रतिमान गढ़ते हैं शिक्षक : राजाराम महतो

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

स्थानीय मध्य विद्यालय खदियाही में प्रधानाध्यापिका गीता कुमारी सिन्हा की सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अध्यक्षता प्रधानाध्यापक राज कुमार चौधरी ने की। सभा को संबोधित करते हुए बिहार पंचायत नगर प्रारंभिक शिक्षक संघ के जिला उपाध्यक्ष राजा राम महतो ने कहा कि शिक्षक समाज और देश का नये प्रतिमान गढ़ने वाले होते हैं। उनके सम्मान से समाज में संस्कारों के बीज का प्रस्फुटन होता है। मुखिया सुलेखा देवी, स्थानीय शिक्षाप्रेमी रामचंद्र महतो, सत्यनारायण महतो, शिवशंकर प्रसाद, रामाशीष महतो, प्रधानाध्यापक किरणदेव पासवान, सुरेश दास, राम बालक कुमार, मो0शौकत अली ने गीता कुमार सिन्हा को योग्य, कुशल और आदर्श शिक्षिका के साथ साथ समर्पित प्रधानाध्यापिका कहा। पत्रकार राजेश कुमार, विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक अखिलेश कुमार, शिक्षक तारा बाबू सिंह, छत्तर कुमार, ललन कुमार, विनोद कुमार, शिक्षिका पूनम कुमारी, मीरा कुमारी, सिंधु कुमारी ने उन्हें मिलनसार व्यक्तित्व की मालकिन बताया और उनके सुखद, स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएँ दीं। समारोह में विद्यालय परिवार द्वारा आगत अतिथियों और सेवानिवृत प्रधानाध्यापिका को पाग, चादर और माला से स्वागत किया गया। छात्राएं सुप्रिया, ज्योति माला, सुनीति, वंदना, चुनचुन, रिमझिम ने स्वागत गीत और दीपमाला, सुनिधि, सोनाली, रीना ने विदाई गीत गाकर माहौल को भावप्रवण बना दिया।

सीमावर्ती मनोपुर चौर में मिली लाश की हुई पहचान, परिवार में छाया मातम

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर थाना क्षेत्र के भुसवर पंचायत के बसौना वार्ड 15 निवासी राम सुदीन महतो की निर्मम हत्या अज्ञात अपराधियों के द्वारा कर दी गई। मृतक राम सुदीन महतो का शव बेगूसराय जिले के भगवानपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत मोक्तियारपुर पंचायत के मानोपुर चौर वहीयार में कच्ची सड़क किनारे गेहूं के खेत में फेंका मिला।

शव को देखते ही स्थानीय लोगों ने इस घटना की सूचना स्थानीय भगवानपुर पुलिस को दी। भगवानपुर थाना अध्यक्ष संतोष कुमार शर्मा अपने दल बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर स्थानीय लोगों से शव की पहचान करवाने की कोशिश की, मगर शव की पहचान नहीं हो पाई।

इसके बाद थाना अध्यक्ष ने शुरूआती कागजी प्रक्रिया के बाद शव को अज्ञात मानते हुए कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल बेगूसराय भेज दिया। भगवानपुर थाना अध्यक्ष संतोष कुमार शर्मा ने बताया कि प्रथम दृश्या पीट-पीटकर एवं गले में फंदा लगाकर हत्या करने का मामला प्रतीत हो रहा है। हत्या किस तरह से की गई है इसका खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल पाएगा।

घटना के बाद मृतक की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल होने पर मृतक के परिजन तथा सगे संबंधियों ने सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे तस्वीर को देखते ही किसी अनहोनी की आशंका हुई।

इसके बाद परिजन सदर अस्पताल बेगूसराय जाकर शव की शिनाख्त की। मृतक अधेड़ व्यक्ति की पहचान समस्तीपुर जिले के विभूतिपुर थाना क्षेत्र के भुसवर पंचायत बसौना वार्ड संख्या 15 निवासी स्वर्गीय मुन्नीलाल महतो के इकलौते पुत्र राम सुदीन महतो उम्र 50 वर्ष के रूप में की गई। मृतक के परिजनों ने बताया कि मृतक प्रदेश में रहकर मजदूरी करते थे। किसी के साथ भी कोई दुश्मनी नहीं थी फिर भी ना जाने क्यों किसी ने उनकी हत्या कर दी। मृतक की पत्नी एवं बूढ़ी मां बार-बार शव से लिपटकर रो-रो कर बेसुध हो रही थी। मृतक अपने पीछे बूढ़ी मां सहित पुत्र दीपक कुमार, पत्नी रामपरी देवी एवं पुत्री निरो देवी, हीरा कुमारी, आरती कुमारी, स्वेता कुमारी को छोड़ स्वर्ग सिधार गए।

अभियंत्रण महाविद्यालय सेमिनार का हुआ आयोजन

- छात्रों को बताया कि कम्युनिकेशन स्किल्स पर सबसे जादा फोकस करना चाहिए
- विदेश में हायर एजुकेशन, विभिन्न एग्जाम की जर्मनी, जापान जैसे देशों में फ्री में कैसे एजुकेशन पा सकते हैं इन सब के बारे में बताया।

सरायरंजन, प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन प्रखण्ड के नरघोघी स्थित गवर्मेंट इंजीनियरिंग कॉलेज समस्तीपुर में पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, स्टार्टअप और एंटरप्रेन्योरशिप पर सेमिनार का अयोजन किया गया इस मौके पर सभी बैच के छात्रों ने बढ़ चढ़ के हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम की शुरूआत में प्रधानाचार्य महोदय डॉ राजकिशोर तुगनायत ने छात्रों से बातें की और उन्होंने अपने भविष्य के योजनाओं को बताया। प्रधानाचार्य ने छात्रों को बताया की किस तरह से हम लोग नए आईडिया पर काम कर कर सकते हैं

और किस तरह से मौजूदा संसाधनों का उपयोग कर के हम अच्छा कर सकते हैं। उन्होंने छात्रों को अनुशासन में रहने और ड्रेसिंग सेंस को इंप्रूव करने पर जोर दिया। उसके बाद कार्यक्रम के चीफ गेस्ट श्री श्रवण कुमार जो की बिजी मैकेनिक्स के फाउंडर हैं उन्हों ने छात्रों से बातें की। उन्हों ने छात्रों को बताया कि कम्युनिकेशन स्किल्स पर सबसे जादा फोकस करना चाहिए, जिसके लिए लिटरेचर पढ़ना सबसे जादा जरूरी है।

इसके बाद उन्होंने स्टार्टअप के बारे में बताया कि स्टार्टअप को कैसे शुरू कर सकते हैं शुरूआत में क्या क्या दिक्कतें आती हैं और उनका समाधान कैसे करें। स्टार्टअप के बाद उन्होंने जॉब के बारे में बातें किया, जॉब पाने के लिए क्या क्या चीजें हैं जो की जरूरी है।

इसी के साथ उन्होंने विदेश में हायर एजुकेशन की संभावनाओं और उसके लिए कौन-कौन से विभिन्न एग्जाम की जरूरत है और जर्मनी, जापान जैसे देशों में फ्री में कैसे एजुकेशन पा सकते हैं इन सब के बारे में बताया। उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं इस बात का आश्वासन दिया की इस बार संस्थान से कम से कम 100 छात्रों का प्लेसमेनट करवाएंगे। इस मौके पर संस्थान के प्रधानाचार्य डॉ राजकिशोर तुगनायत, संस्थान के टीपीओ ऑफिसर प्रो तनमय कुमार, बिजी मैकेनिक के को-फाउंडर धनंजय कुमार और पंकज कुमार सहित संस्थान के पूरे छात्र-छात्रा मौजूद थे।

डीआरएम कार्यालय के समक्ष सीपीआई कार्यकताओं ने किया प्रदर्शन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

रेलवे के मनमानी के विरुद्ध भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जिला समस्तीपुर के सैकड़ों कार्यकताओं के द्वारा बुधवार को समस्तीपुर डीआरएम के समक्ष आक्रोशपूर्ण प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कार्यालय बंगाली टोला से चलकर रेल के मनमानी के खिलाफ नारे लगाते हुए डीआरएम कार्यालय पर रोषपूर्ण प्रदर्शन के बाद धरना सभा में तब्दील हो गया। सभा की अध्यक्षता रामअवतार ठाकुर, ने किया तथा संचालन सुधीर कुमार देव, ने किया। प्रदर्शन कर्मियों के मुख्य मांगों में पैसेंजर ट्रेन का किराया स्पेशल के नाम पर एक्सप्रेस इतना लेना, वरिष्ठ नागरिकों, एवं महिलाओं को, टिकट में मिलने वाली रियायत चालू करने, लंबी दूरी की गाड़ी समस्तीपुर से परिचालन प्रारंभ करने, समस्तीपुर खगड़िया के बीच अप सवारी गाड़ी 05275 का समस्तीपुर पहुंचे का समय 10:30 बजे से 11:00 बजे तक निर्धारित करने, समस्तीपुर भोला टॉकीज एवं मुक्तापुर गुमती पर पुल निर्माण करने, मालगोदाम चौक से 41 नंबर गुमती जितवारपुर की ओर से सड़क का निर्माण जल्द पूर्ण करने, तथा रेल स्टेडियम से रेलवे का पानी बहाव का समुचित व्यवस्था करने, का माग प्रमुख था। सभा को रामप्रीत पासवान, अनिल प्रसाद, शत्रुघ्न प्रसाद पंजी, अनिल कुमार महतो, रामकुमार चौधरी, प्रेम नाथ मिश्रा, प्रयाग चन्द मुखिया, राम परीक्षण राय, संजय कुमार, जगत प्रसाद, उपेंद्र प्रसाद, अमित कुमार, सुधीर कुमार, अर्जुन कुमार, शंभू कुमार चौधरी, शंकर राय, के अलावे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला मंत्री सुरेंद्र कुमार सिंह मुन्ना एवं रामचंद्र महतो, ने संबोधित करते हुए घोषणा किया कि उपरोक्त मांगों का ससमय निदान नहीं होने पर सभी स्टेशनों पर आंदोलन किया जाएगा। पांच सदस्यों का प्रतिनिधि मांगों से संबंधित ज्ञापन डीआरएम को समर्पित किया।

बजट पूरी तरह से निराशाजनक, बिहार को किया नजरअंदाज : शाहीन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

-बिहार विधानसभा के उप मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने बुधवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किये बजट को निराशाजनक करार दिया है। उन्होंने कहा कि बजट में न तो बेरोजगारी कम करने के लिए रोजगार सृजन के उपायों का कोई प्रस्ताव है, और न ही किसानों को लाभकारी मूल्य दिलाने हेतु कृषि उत्पादन पर आधारित उद्योगों की स्थापना आदि का कोई प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत का वेतनभोगी वर्ग एवं मध्यम वर्ग महामारी, वेतन में चौतरफा कटौती और कमरतोड़ महंगाई के इस दौर में राहत की उम्मीद कर रहा था। वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री ने एक बार फिर से अपने प्रत्यक्ष कर से संबंधित कदमों से इन वर्गों को बहुत निराश किया है। विधानसभा के उप मुख्य सचेतक ने आरोप लगाया कि यह वेतनभोगी वर्ग और मध्यम वर्ग के साथ विश्वासघात है। बिहार को नजरअंदाज करने का आरोप लगाते हुए कहा, कि बिहार के लोगो को उम्मीद थी कि बिहार को विशेष पैकेज मिलेगा। लेकिन ये भी जुमला करार हुआ। यह बजट केवल वोट का हिसाब-किताब है। यह बजट उम्मीदों पर बिलकुल भी खरा नहीं उतरा। एक तरह से यह बजट मायूस करने वाला ही है।

संक्षिप्त खबरें

कांग्रेस पार्टी अलौली कार्यालय का हुआ उद्घाटन

अलौली। कांग्रेस पार्टी अलौली कार्यालय का सदर विधायक छत्रपति यादव ने फीता काटकर उद्घाटन किये। कार्यक्रम में कांग्रेस के जिला अध्यक्ष भानु प्रताप उर्फ गुड्डू पासवान अविनाश पासवान अधिवक्ता अरुण कुमार के अलावे पंच सरपंच संघ के जिलाध्यक्ष सह प्रदेश उपाध्यक्ष किरण देव यादव ने पार्टी के कार्यालय उद्घाटन पर बधाई एवं शुभकामनाएं दिया तथा कहा कि पार्टी कार्यालय खुलने से आम जनता की समस्या समाधान होगी एवं पार्टी वेहतर मजबूत होंगे। इस अवसर पर प्रखंड अध्यक्ष प्रवीण कुमार पंकज के अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह का आयोजन किया। कांग्रेस नेता रामचंद्र यादव, पूर्व अध्यक्ष विनोद राम, मंटू यादव, रंजीत कुमार, राजद नेता दानवीर यादव, तितली भारती , फरकिया मिशन के महासचिव दिनेश शाह, अशोक यादव आदि ने भाग लिया।

अपनी मांगों को पूरा करने की अपील के साथ मजदूरों का अनिश्चितकालीन अनशन

मधुबनी/रहिका। मधुबनी जिले के रहिका प्रखंड मुख्यालय परिसर में बीएसएफसी गोदाम में उचित मजदूरी एवं भुगतान की मांग को लेकर मजदूरों का निश्चितकालीन अनशन लगातार दूसरे दिन जारी रहा। अनशन का नेतृत्व कर रहे श्याम पासवान ने कहा मजदूर गोदाम से लेकर ट्रक तक अनाज की धुलाई करते हैं।इसके लिए उन्हें सरकार से निर्धारित राशि 12.54 पैसे प्रति क्विंटल दिया जा रहा हैं। उनका कहना हैं कि निर्धारित दर से मजदूरों को 6 रुपए प्रति क्विंटल मिलता हैं और यह सिलसिला करीब दो सालों से यूहीं चल रहा हैं जहां आधे से भी कम दर पर उन्हें मजदूरी का भुगतान किया जा रहा हैं। मजदूरों के हड़ताल पर जाने से गोदाम का कार्य ठप हो गया हैं। जिससे पीडीएस डीलरों का अनाज उठाव का कार्य भी बाधित हो गया हैं। मजदूरों ने कहा जबतक हमारी मांग पूरी नहीं होगी तबतक आमरण अनशन जारी रहेगा। इस अनशन में रत्ती लाल यादव बैजू यादव घुरन पासवान बाबाजी पासवान सहित दर्जनों मजदूर अनशन पर बैठे हैं।

अनुमंडल पदाधिकारी एवं पुलिस उपाधीक्षक ने परिक्षा केन्द्र का लिया जायजा

गया। बुधवार से बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट वार्षिक परीक्षा की शुरूआत गया सदर अनुमंडल के साथ-साथ अन्य अनुमंडल में शुरू हो गई। गया सदर अनुमंडल में कुल 45 केंद्रों पर इंटरमीडिएट की परीक्षा ली जा रही है। इस अवसर पर इंटरमीडिएट परीक्षा को स्वच्छ शांतिपूर्ण एवं कदाचार मुक्त कराने हेतु गया सदर अनुमंडल में अनुमंडल पदाधिकारी सदर गया इंद्रवीर कुमार एवं पुलिस उपाधीक्षक नगर पारस साहू के द्वारा गया के विभिन्न परीक्षा केंद्रों का भ्रमण किया गया है। भ्रमण के दौरान प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए हैं जिससे स्वच्छ एवं कदाचार मुक्त परीक्षा का संचालन किया जा सके। इसके साथ ही विभिन्न जगहों पर जहां भी ट्रैफिक जाम की समस्या बनी रहती है वहां भी विशेष रूप से पुलिस बल की तैनाती की गई थी जिससे परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र बनाने में कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। गया कॉलेज, मिर्जा गालिब कॉलेज, अनुग्रह नारायण कॉलेज, जगजीवन कॉलेज इत्यादि परीक्षा केंद्रों का भ्रमण किया गया है।

कोरवा नादरा गारलैण्ड ट्रेन्च का निर्माण कार्य

गया। बिहार सरकार की महत्त्वकांक्षी योजना हर खेत का सिंचाई का पानी योजना एवं जल-जीवन हरियाली अभियान के अन्तर्गत लघु जल संसाधन विभाग द्वारा बिहार के विभिन्न जिलो में युद्ध स्तर पर आहर पईन एवं पोखर का जीर्णोद्वार कार्य कराया जा रहा है। हर खेत का सिंचाई का पानी अन्तर्गत गया जिले के पंचायत हथियामा प्रखंड खिजरसराय में कौरवा नादरा गारलैण्ड ट्रेंच का निर्माण कार्य कराया जा रहा है। इस कार्य के पूर्व पहाड़ के तलहटी में गांव में गर्मी के दिनों में पीने का पानी का किल्लत हो जाति है एवं सिंचाई का कोई विस्तृत साधन नहीं था। इस योजना के तहत पहाड़ के तलहटी में रिसवर का कार्य कराया गया है ताकि वर्षा के जल का संचयन किया जा सकें।

मधुबनी के पत्रकार सुभाष और मनीष राजधानी में पूर्व केंद्रीय मंत्री के हाथों हुए सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी। बिहार की राजधानी पटना में मंगलवार को प्रदेश भर में पत्रकारिता में अपनी छाप छोड़ने वाले चुनिंदा पत्रकारों को सम्मानित किया गया। इसमें मधुबनी जिला के भी दो पत्रकारों सुभाष सिंह यादव और मनीष सिंह यादव को भी पूर्व केंद्रीय मंत्री पद्म श्री डॉ. सी. पी. ठाकुर द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन पटना से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र संपर्क आपतक द्वारा आईआईबीएम कॉलेज सभागार में किया गया था।

संपर्क आपतक और पत्रकार संघ के संपादक रंजीत कुमार सिंह ने कहा कि यह 16वां वार्षिक आयोजन था और हमलोग हर वर्ष बिहार के बेहतरीन पत्रकारों को सम्मानित करते रहे हैं। इस सम्मान समारोह में मधुबनी जिला से दो पत्रकारों

को चयनित किया गया था जिसमें दूरदर्शन डीडी न्यूज/डीडी बिहार के मधुबनी जिला संवाददाता और जयनगर न्यूज के संस्थापक सुभाष सिंह यादव और प्रातः किरण के मधुबनी ब्यूरो चीफ मनीष सिंह यादव को मंचासीन अतिथियों ने प्रमाण पत्र और अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। संपादक श्रेणी में मधुबनी के ही रहने वाले और बिहार हलचल पत्रिका तथा न्यूज पोर्टल के संपादक रामदुलार यादव को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ से जुड़े कुल छह पत्रकारों को सम्मानित किया गया जिसमें संगठन के उत्तर बिहार प्रभारी सुभाष सिंह यादव मधुबनी जिला महासचिव मनीष सिंह यादव सुपौल जिला संयोजक और पब्लिक सपोर्ट 24 के संपादक प्रेम आनन्द उपाख्य प्रमोद कुमार अनोखा न्यूज एक्सप्रेस के संपादक युगेश्वर पासवान और आराधना न्यूज चैनल के संपादक धीरेंद्र गुप्ता शामिल थे।

इस सम्मान समारोह में बिहार के सभी जिलों से पत्रकार शामिल हुए। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व केंद्रीय मंत्री पद्म श्री डॉ. सी. पी. ठाकुर पटना की महापौर सीता साहू एमएलसी रणवीर नंदन दूरदर्शन की पूर्व कार्यक्रम प्रमुख रत्ना पुरकायस्था थी। मंच संचालन का कार्य दूरदर्शन में एंकर अंशु अवस्थी और नीता सिन्हा के जिम्मे रहे। पटना में सम्मानित होने के बाद सुभाष सिंह यादव और मनीष सिंह यादव को जयनगर और मधुबनी में प्रशंसा हो रही है।

केंद्रीय बजट में बिहार के लिए कुछ भी विशेष नहीं: कुमार गौरव

प्रात : किरण संवाददाता

गया। जदयू नेता कुमार गौरव ऊर्फ गौरव सिन्हा ने केंद्रीय बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि केंद्रीय बजट (2023-24) बिहार के हित में नहीं है। इसबार के बजट में दूरदर्शिता की कमी और युवाओं के लिए रोजगार सृजन तक नहीं दिख रहा है।

राज्य सरकार की ऋण सीमा में वर्ष 2023-24 में कोई छूट नहीं दी गई है। बिहार सरकार के अपने ज्ञापन में इसे 4% तक रखने का आग्रह किया गया था जो पिछड़े राज्यों के विकास में तथा नए रोजगार सृजन में लाभप्रद होता। केन्द्रीय बजट में 1.3 लाख करोड़ का ब्याज रहित ऋण प्रदान करने का प्रावधान किया गया था लेकिन इसमें भी बिहार को कोई लाभ नहीं दिया गया है। इस बजट में राज्यों के वित्तीय स्थिति को नजरअंदाज किया गया है। केन्द्रीय प्रायोजित योजनाओं में राज्य के हिस्से में कोई बदलाव नहीं किया गया है जिससे राज्य कि वित्तीय स्थिति पर बुरा असर हो रहा है।

शराब मामले में देवधा और जयनगर थाना पुलिस ने की करवाई शराब समेत शराब मामले में 06 आरोपी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/जयनगर। मधुबनी जिला के देवधा और जयनगर बथाना पुलिस के शराब के अलग अलग मामले में करवाई करते हुए नेपाली देशी विदेशी शराब के साथ छः आरोपियों को गिरफ्तार किया। जयनगर पुलिस ने थाना क्षेत्र में अलग अलग स्थानों से 1383 बोतल नेपाली देशी व विदेशी शराब के साथ एक धंधेबाज को गिरफ्तार किया। इसके अतिरिक्त चार शराबियों को पकड़ा। जिसे न्यायिक हिरासत मे भेज दिया

गया। थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि डोरवाड़ गांव के निकट दो बाइक पर 9 सौ बोतल नेपाली शराब जब्त किया गया। इसी तरह शहीद चौक स्थित शंकर साह के घर से 450 बोतल शराब जप्त किया गया। हालांकि दोनो जगहो से धंधेबाज फरार होने में सफल रहे। शिलानाथ गांव स्थित आरोपित सुरेश सिंह के दुकान से 33 बोतल नेपाली देशी व विदेशी शराब जब्त किया गया। जिसमें 4 बोतल देशी तथा 29 बोतल विदेशी शराब है। इधर चार गिरफ्तार शराबियो में झंझारपुर के चमोरा के बैजू यादव व अजीत कुमार तथा अंधराठाढ़ी के विकास सिंह व इंद्रजीत सिंह बातया जाता है। मामला दर्ज कर आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। वही देवधा अध्यक्ष रमेश कुमार के द्वारा शराब मामले की करवाई के तहत दी गई जानकारी के मुताबिक थाना पुलिस द्वारा क्षेत्र में सघन गस्ती और जाँच के दौरान थाना क्षेत्र के अकोन्हा के पास से 90 बोतल नेपाली देशी शराब के साथ एक शराब तस्कर को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपी मुजफ्फरपुर जिला के कटरा थाना क्षेत्र के खैरा परसौल निवासी सुभाष चौधरी बताया जाता है । मामला दर्ज कर आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के 21वीं पुण्यतिथि एवं पूर्व कानून मंत्री शांति भूषण के निधन पर किया शोक व्यक्त, दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

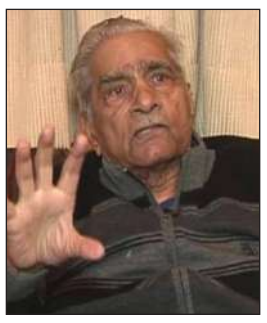

प्रात : किरण संवाददाता

● दिवंगत शांति भूषण सच्चे अर्थों में विधिवेत्ता , कानूनविद् एवं न्यायविद् थे : किरण देव यादव

खगड़िया। देश बचाओ अभियान फरकिया मिशन के संस्थापक अध्यक्ष किरण देव यादव ने महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के 21वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दिया तथा पूर्व कानून मंत्री, न्यायविद् , कानूनविद् , विधिवेत्ता शांति भूषण की 97 वर्ष की आयु में निधन होने पर शोक व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि वे मोरारजी देसाई के कार्यकाल में कानून मंत्री रहे। वे वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण के पिता थे। यह भी अपने पिता शांति भूषण के बताए रास्ते पर चलकर देश एवं जनहित में कानून को धरातल पर उतारने के लिए कई लोकप्रिय मुद्दे को लेकर जनहित याचिका दायर किये। दिवंगत शांति भूषण बतौर अधिवक्ता ने एक बार चुनाव में कदाचार होने पर इंदिरा गांधी के निर्वाचन को रद्द करवाए थे। श्री यादव ने कहा कि विधि के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई से निकट भविष्य भरपाई संभव नहीं दिखता। श्री यादव ने कहा कि वहीं स्मृति शेष कल्पना चावला ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में गौरवपूर्ण इतिहास रचने का कार्य की। पंच सरपंच संघ के मीडिया प्रभारी मोहम्मद सोहेल, जिला महासचिव मनोज कुमार, अलौली ग्राम कचहरी के सरपंच सह जिला कोषाध्यक्ष रंजू कुमारी ने 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दिए तथा कोटि-कोटि नमन किये।

जयनगर में पहले दिन इंटरमीडिएट की परीक्षा शांतिपूर्ण माहौल में हुई सम्पन्न

एसडीएम डीएसपी के द्वारा परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण कर कर्मियों को दिए आवश्यक दिशा निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/जयनगर। मधुबनी जिला के जयनगर अनुमण्डल क्षेत्र में पाँच परीक्षा केंद्रो पर बुधवार 01 फरवरी से शुरू हुई इंटरमीडिएट की परीक्षा पहले दिन दोनो पालियों में शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुई।

परीक्षा केंद्रों का एसडीएम बेबी कुमारी और डीएसपी विपल्व कुमार के द्वारा संयुक्त रूप से औचक निरीक्षण कर जायजा लिया एवं कदाचार मुक्त परीक्षा के सफल संचालन को लेकर केंद्राधीक्षक और परीक्षा केंद्रों पर तैनात दण्डाधिकारी पुलिस पदाधिकारियों एवं कर्मियों को कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए। परीक्षा में

शामिल होने के लिए प्रथम और द्वितीय पाली की परीक्षा केंद्रों पे परीक्षा में ससमय शामिल होने को ले काफी भीड़ और परीक्षार्थियों की लम्बी कतार देखी गई। केंद्र में प्रवेश से पूर्व इंट्री गेट पर परिसर में तैनात प्रशासन और नियुक्त दण्डाधिकारी और पदाधिकारियों एवं पुलिस कर्मियों के द्वारा परीक्षार्थियों के एडमिट कार्ड चेक किया गया। केंद्र के परिसर में बने केबिन पंडाल में महिला कर्मियों के द्वारा परीक्षार्थियों की जाँच भी की गई। परीक्षार्थियों को सिर्फ एडमिट कार्ड कलम और विभाग के द्वारा जारी गाईड लाईन के दिशा निर्देश के तहत सिर्फ सम्बंधित सामग्री ही सिर्फ अंदर ले जाने की अनुमति दी जा रही थी। केंद्र के बाहर लगी लिस्ट परीक्षार्थियों के द्वारा अपने कक्ष में परीक्षा देने जाने से पूर्व को ले चार्ट लिस्ट को देखते नजर आए। सभी केंद्रों पे सीसीटीवी और वीडियोग्राफी की निगरानी में दोनों पालियों में परीक्षा हो रही है।

कायस्थ समाज को एक मंच के नीचे लाकर उसका समुचित विकास करना इस संस्था का उद्देश्य

धूमधाम से मनाई गई ग्लोबल कायस्थ कांफ्रेंस की दूसरी वर्षगांठ

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बुधवार को ग्लोबल कायस्थ कॉन्फ्रेंस की दूसरी वर्षगांठ शहर के चांद चौरा स्थित मैत्री गार्डन में मनाई गई है। इस मौके पर उपस्थित लोगों ने भगवान श्री चित्रगुप्त के तैलचित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई है।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के जिलाध्यक्ष सह वार्ड पार्षद चित्रांश संजय कुमार सिन्हा एवं संचालन चित्रांश अरविंद चरण प्रियदर्शी ने की गई है।इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्था के जिला महासचिव चित्रांश राजीव रंजन प्रसाद अधिवक्ता ने आगत अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने केक काटकर संस्था का दूसरा वर्षगांठ एवं संस्था के संयोजक शाह राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन प्रसाद का जन्मदिन उत्सव पूर्वक मनाया गया है।इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मिर्जा गालिब कॉलेज के पूर्व प्राचार्य चित्रांश प्रो. अरुण कुमार प्रसाद ने संस्था के उद्देश्य के बारे में

लोगों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि ग्लोबल प्रेस कॉन्फ्रेंस एक संस्था नहीं बल्कि एक विचारधारा है। इसका उद्देश्य कायस्थ समाज को एक मंच के नीचे लाकर उसका समुचित विकास करना है। आज इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्था के जिलाध्यक्ष चित्रांश संजय कुमार सिन्हा ने कहा कि संस्था के द्वारा कायस्थ समाज एकजुट कर उसके समेकित विकास के लिए कार्य करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि संस्था समाज के गरीब तबके को एक साथ लेकर उनका भी विकास करने के लिए कटिबद्ध है। कारण है कि संस्था के द्वारा कई जगहों पर चित्रांश महिलाओं के लिए कुटीर उद्योग की भी स्थापना की जा रही है ताकि वह स्वरोजगार के माध्यम से स्वावलंबी बन सके।इस मौके पर संस्था के वरीय उपाध्यक्ष चित्रांश प्रभात शंकर उर्फ सुनील कुमार सिन्हा, वरीय उपाध्यक्ष सह वार्ड पार्षद चित्रांश राजीव कुमार सिन्हा उर्फ राजू, पूर्व पार्षद रजनी सिन्हा, नीलिमा सिन्हा, रीता रानी प्रसाद, चित्रांश प्रो. डॉ. राधा मोहन प्रसाद, चित्रांश नवीन कुमार सिन्हा, चित्रांश सुमित कुमार सिन्हा, चित्रांश सुजीत कुमार अम्बष्ठा, चित्रांश जितेंद्र कुमार सिन्हा उर्फ जीतू सहित सैकड़ों की संख्या में कायस्थ समाज के महिला-पुरुष उपस्थित थे।

विभिन्न योजनाओं को मूर्त रूप देने में निभा रही है अहम भूमिका 48 वीं वाहिनी एस एस बी जयनगर

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/जयनगर। जयनगर सीमांत मुख्यालय सशस्त्र सीमा बल पटना के निदेर्शानुसार 48वीं वाहिनी एस एस बी मुख्यालय जयनगर के कमांडेन्ट आई एस पनमई के निदेर्शानुसार दुल्लीपट्टी के कंपनी कमांडर उप निरीक्षक राजेंद्र कुमार के नेतृत्व में जयनगर प्रखंड क्षेत्र के दुल्लीपट्टी मध्य विद्यालय परिसर में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के केंद्रीय संचार ब्यूरो पटना द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव एवं 8 साल सेवा सुशान एवं गरीब कल्याण के लिए किये गए कार्यो से आम जनता को परिचित कराने के लिए दिसबिल्ड स्पोर्ट्स एंड वेल्फेयर एकेडमी के कलाकारों के द्वारा संस्कृति प्रदर्शनी कार्यक्रम सह जागरूकता कार्यक्रम का किया गया भव्य आयोजन। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए 48 वीं वाहिनी एस एस बी दुल्लीपट्टी ने कहा कि यह संस्कृति प्रदर्शनी कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दुल्लीपट्टी समेत सारे देश की जनता को आजादी दिलाने वाले सपूतों के बारे में प्रेरित करना

रहा है साथ ही केंद्र सरकार द्वारा आम जनता के लिए किये गए कार्यो को भी इस नाटक के माध्यम से जनजन तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अमृत महोत्सव के आयोजन से आम जनता को आजादी के लड़ाई और उसके नायकों के बारे में एक नई दृष्टि और ज्ञान मिल रहा है यह बहुत बड़ी बात हैं। साथ ही उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी जानत से अपील करते हुए कहा कि तन समर्पित मन समर्पित एवं जयनगर समेत सीमा क्षेत्र में जीवन यापन कर रहे लोगो के लिए हर दिन समर्पित सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के केंद्रीय संचार ब्यूरो पटना में पंजीकृत दिसबिल्ड स्पोर्ट्स एंड वेल्फेयर एकेडमी द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 8 साल सेवा सुशान एवं गरीब कल्याण विषयों पर आयोजित एक दिवसीय संस्कृति कार्यक्रम सह जागरूकता कार्यक्रम में लोगों ने भरपूर आनंद उठाया। साथ ही इस प्रदर्शनी के माध्यम से भारत सरकार के विभिन्न योजनाओं के विषय मे जानकारी प्राप्त भी किया। साथ ही उन्होंने ने यह भी कहा कि एस एस बी का हमेशा से मोटो रहा है सेवा सुरक्षा और बन्धुत्व एस एस बी जनकल्याण हेतू निरंतर इस तरह के योजनाओं से जोड़ने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। लिहाजा सामाजिक रूप में इसका सकारात्मक असर दिख रहा हैं। आवश्यक सामाजिक गतिविधियों का संचालन करते हुए एस एस बी आमलोगों को जागरूक कर रही है।

विदाई समारोह आयोजित कर थानाध्यक्ष को दी गई विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

आमस।थाना परिसर में बुधवार को विदाई समारोह का आयोजन किया इस मौके पर थानाकर्मियो,जनप्रतिनिधियों, प्रखंड क्षेत्र के गणमान्य लोगो ने पहुंच निवर्तमान थाना अध्यक्ष अरविंद किशोर को पुष्प माला,बुके एवं अंग वस्त्र भेटकर विदाई दी।आमस थाना परिसर में आयोजित विदाई समारोह के मौके पर उपस्थित मुखिया प्रतिनिधि दीपक कुमार सिंह,महेंद्र पासवान ने कहा कम ही समय में आमस थानाध्यक्ष अरविंद किशोर ने जो काम किया वह प्रशंसनीय है उनके के कार्यो को भुलाया नही जा सकता है।विदाई समारोह में उपस्थित सभी लोगो ने उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें विदाई दी। वहीं मुख्य अतिथि के रूप में आए सर्किल इंस्पेक्टर अजीत कुमार सिंह लोगो को संबोधित करते हुए कहा की सरकारी सेवा में आने-जाने

का क्रम लगा ही रहता हैं।इस मौके पर गुरुआ थानाध्यक्ष अनिल कुमार सिंह, झरी पैक्स अध्यक्ष सह मुखिया प्रतिनिधि दीपक सिंह,संदीप कुमार,पूर्व मुखिया कृष्णा यादव, मुखिया मनोज यादव,जानकी चौहान,महेंद्र पासवान,अर्जुन यादव, पंचायत समिति सदस्य बाबर अली,सरपंच संजय कुमार,परवीन यादव,शिक्षक प्रभात सिंह,रामाधार सिंह,दुलारचंद यादव,गोपाल सिंह सहित प्रखंड क्षेत्र के अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

सामाज सेवा में मिसाल कायम कर रही शिक्षिका

दानापुर रेल मंडल प्रशासन भी बढ़ चढ़ कर रहे सहयोग

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। एक शिक्षक शैक्षणिक कार्य के साथ समाजसेवा को दिनचर्या का हिस्सा बनाए तो समाज में परिवर्तन स्वभाविक है। कहते हैं कि शिक्षक देश का निमार्ता और समाज को नई दिशा देने वाला होता है। ऐसा ही कार्य नेमीचंद शास्त्री स्कूल की शिक्षिका बीनू कुमारी और उनके मित्र शिक्षिका पूजा कुमारी और अंचला भारती ने किया है और अन्य शिक्षकों के लिए मिशाल कायम की है। बीनू और उनकी साथी मित्र पूजा और अंचला नेमीचंद शास्त्री स्कूल में शिक्षक के पद पर सेवारत है। बतौर ये सभी शिक्षक के साथ साथ समाजसेवक के रूप में कार्य करके समाज को नई दिशा देने में जुटी हुई हैं।

बीनू और इनकी शिक्षक मित्र पटना के विभिन्न जगहों से 60 किलोमीटर दूरी तय कर प्रतिदिन पटना से आरा रेल के माध्यम से आरा के नेमीचंद शास्त्री स्कूल में पढ़ने जाती है। स्कूली बच्चों के साथ समाजसेवा के जज्बे से कई लोगों को जागरूकता, सामाजिक दायित्व का निर्वहन करती रही है। महिला समाज सेवी

तो है ही और लोगो के लिए दिन रात मेहनत करते हुए उनकी मदद करने में कभी पीछे नहीं रहती है।

यही कारण है कि समाजसेवी महिला को लोग आज पसंद करने लगे है। इनलोगो का मानना है की मानव सेवा सबसे बड़ी सेवा है। और कभी भी समय मिले तो पीड़ितों की मदद जरूर करना चाहिए। इससे न सिर्फ मन को शांति मिलती है बल्कि बहुत अच्छा लगता है। बीनू और उनके टीम ने ऐसे ही एक घटना में अपनी योगदान देकर मिशाल कायम किया है। बीते दिनों आरा से पटना रेल यात्रा के दौरान प्रातः किरण के संपादक अभय आर्या की अचानक बीच रास्ते में तबियत बिगड़ गई और वो बेहोश हो गए। चुकी सफर में उनके साथ कोई नही था। उनकी हालत गंभीर देख जहा ट्रेन के कुछ यात्री साइड हुए तभी कुछ युवक और इन वीरांगना ने मानवता का फर्ज बखूबी निभाया और उन्हें ठीक करने का हर संभव प्रयास किया। यही नहीं पटना जंक्शन आने के बाद ये लोग उनके साथ डटे रहे। वे सभी काम से लौटकर घर जाना भूल अभय आर्या के परिजन के आने तक रहने का फैसला लिया। स्टॉल कर्मचारी के माध्यम से स्टेशन अधीक्षक तक उन्हें सुपुर्द किया।

इसके बाद रेलवे अस्पताल में उनकी इलाज के लिए भर्ती कराया गया। बीनू और उनके सहकर्मियों ने निस्वार्थ भाव जो एक यात्री के लिए दिखाया यह मानवता का अद्भुत प्रकाष्ठा है। सूत्रों की माने तो अब तक उनकी टीम ने कई यात्रियों को इस तरह की मदद की है। दानापुर मंडल को भी ऐसे दैनिक यात्रियों को हर संभव मदद करनी चाहिए जो सामाजिक सरोकार रखते हैं। इन वीरांगनाओं ने कई मौके पर कठिन परिस्थिति में दूसरों की मदद करती है। ऐसे लोगो को रेल प्रशासन आवश्यक सुविधा व सम्मान दे ताकि अन्य यात्रियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकें।

सम्पादकीय

बेरोजगारी की समस्या एवं समाधान

हाल ही में हिमाचल में संपन्न हुए चुनावों में कांग्रेस पार्टी ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में राज्य में एक लाख रोजगार के अवसर सृजित करने का वादा किया था। यह कांग्रेस की दस गारंटियों में से एक है और उसको पूरा करने के लिए एक मंत्रिमंडलीय उपसमिति गठित की है। उद्योग मंत्री श्री हर्षवर्धन चौहान इसके अध्यक्ष हैं। बेरोजगारी की समस्या पूरे भारत में एक गंभीर तथा जटिल समस्या है। समय और अन्य प्राकृतिक आपदाओं जैसे कोविड के साथ-साथ यह और भी जटिल होती जा रही है। बेरोजगारी व्यक्ति के लिए निर्धनता, समाज के लिए अपमानजनक तथा राष्ट्र के लिए मानवीय संसाधन की हानि का प्रतीक है। बेरोजगार वे व्यक्ति होते हैं जो पन्द्रह से साठ वर्ष की आयु वर्ग में होते हैं और वे काम करने के इच्छुक हैं, पर उनके पास काम नहीं होता। जनवरी 2022 में सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामी ने रोजगार संबंधी आंकड़े जारी किए जिसमें भारत की बेरोजगारी दर 8.3 प्रतिशत रही जो पिछले 16 महीनों में सबसे ऊंची दर रही। बेरोजगारी दर शहरी क्षेत्रों में दिसंबर माह में 10.09 प्रतिशत रही जो नवंबर में 8.96 प्रतिशत थी। ग्रामीण क्षेत्रों में यह 7.44 प्रतिशत और 7.55 प्रतिशत रही। बेरोजगारी शहरी क्षेत्रों में बढ़ी है और ग्रामीण क्षेत्रों में घटी है। हिमाचल में यह दर 7.6 प्रतिशत रही जो चिंताजनक है। इस समय हिमाचल प्रदेश में 12 लाख से ज्यादा बेरोजगार हैं। बेरोजगारी के निवारण के लिए हिमाचल प्रदेश को ठोस नीति की आवश्यकता है। इसके लिए वेतनभोगी नौकरियों के साथ-साथ स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने हैं। छोटे तथा मध्यम व्यवसायों को प्रोत्साहन देना है। इसके लिए इन्हें सस्ती दर में साख उपलब्ध करवानी है।

इससे इनकी उत्पादन तथा बेचने की क्रियाएं बढ़ जाएंगी और इससे असंगठित क्षेत्र के कामगारों के हाथ में पैसा आएगा और वो अपनी जरूरी खरीददारी करके संबंधित कंपनियों की आय तथा उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होंगे। इससे और अधिक रोजगार के अवसर पैदा होंगे। हिमाचल प्रदेश में वेतनभोगी रोजगार या नौकरियां भिन्न-भिन्न विभागों में खाली पड़े पदों पर पारदर्शी प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से नियुक्तियों के द्वारा दी जा सकती हैं। इसके लिए बेरोजगार युवा पिछले कई वर्षों से प्रदर्शन करते रहे हैं। यह खाली पद हजारों की संख्या में स्वास्थ्य विभाग, विद्युत विभाग, परिवहन, शिक्षा, ग्रामीण विकास, लोक निर्माण विभाग, कृषि और बागवानी, आयुर्वेद, पशुपालन और राजस्व विभाग आदि में खाली पड़े हैं। इन खाली पदों के होने से जनता के काम सुचारू रूप से नहीं होते जिसके लिए जनता ने कई बार प्रदर्शन करके सरकार के ध्यान में लाया था। हिमाचल प्रदेश में वेतनभोगी रोजगार के साधन सीमित हैं परंतु गैर वेतनभोगी रोजगार या स्वरोजगार की अपार संभावनाएं हैं जो कृषि एवं बागवानी क्षेत्र, पर्यटन के क्षेत्र, हाइड्रो पावर परियोजनाओं तथा खनिज क्षेत्र में वेतनभोगी एवं स्वरोजगार दोनों तरह के रोजगार सरकार की सही नीति निर्धारण के द्वारा बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं। जो जमीन खाली या बंजर पड़ी है उसको कृषि योग्य बनाया जाए। उसमें फलदार पौधे तथा सब्जियां लगाई जाएं। इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्रों की सहायता ली जाए और वहां के लोकल युवाओं को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार प्राप्त करने में सहायता करें।

हिमाचल की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहां पर बहुत जगहों पर बेमौसमी सब्जियां होती हैं। सरकार को इनके भंडारण तथा मंडियों में पहुंचाने तथा उनके विक्रय करने में सहायता करने के लिए सहकारी समितियां बनाने में सहायता करनी चाहिए ताकि वहां के लोकल बेरोजगारों को इसमें स्वरोजगार मिल सके। टमाटर, आलू, अदरक, लहसुन, आम, किन्नु, संतरा, लीची, गलगल, नींबू, नाशपाती, प्लम, खुमानी, चैरी और सेब आदि हिमाचल में बहुत मात्रा में होते हैं। इससे तरह-तरह के उत्पाद बनाए जा सकते हैं जैसे चटनी, अचार, जूस आदि। इसके लिए सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्योग लगाने के लिए वहां के लोकल बेरोजगारों को सस्ती दर पर साख तथा तकनीकी ज्ञान उपलब्ध करवाकर स्वरोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं। हिमाचल में दूध का उत्पादन बहुत होता है। इसको इकट्ठा करके इससे बहुत से उत्पाद बनाए जा सकते हैं जिसके लिए सहकारी समितियां बनाकर स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार दिया जा सकता है। इसके अलावा रेशम उत्पादन, मुर्गी पालन, मछली पालन, मशरूम उत्पादन में सरकार युवाओं को प्रशिक्षण देकर तथा सस्ती साख देकर स्वरोजगार के अवसर पैदा कर सकती है। हिमाचल में तरह-तरह की जड़ी-बूटियां होती हैं। इनसे तरह-तरह की दवाइयां बनती हैं। इनको जंगलों से इका करने के लिए स्थानीय युवाओं को रोजगार दिया जा सकता है और सुविधा अनुसार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में उद्योग लगाए जा सकते हैं। इसके लिए आयुर्वेदिक तथा उद्योग विभाग की भूमिका अति आवश्यक होगी। इसके अतिरिक्त श्रम प्रधान उद्योग जैसे रतन भूषण, हथकरघा, हस्तशिल्प आदि उद्योगों को बढ़ावा देने से रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं। हिमाचल प्रदेश सैलानियों के लिए स्वर्ग है। लोग देश और विदेशों से हिमाचल प्रदेश में पर्यटक स्थल, धार्मिक स्थल, मंदिर आदि देखने आते हैं।

मुसलमानों को मुसलमान मार रहे

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

पाकिस्तान के शहर पेशावर में हुए विस्फोट ने पूरे देश और सरकार को हिलाकर रख दिया है। शाहबाज सरकार आर्थिक संकट से पहले ही जूझ रही है अब इस विस्फोट ने जले पर नमक छिड़क दिया है। इस विस्फोट में हताहतों की संख्या बढ़ती जा रही है। लगभग 100 लोग तो मर चुके हैं और डेढ़ सौ लोग बुरी तरह से घायल हो गए हैं। यह विस्फोट भी कहां हुआ है? पेशावर की एक मस्जिद में। और वह किस वक्त हुआ है? दोपहर की नमाज के वक्त! दूसरे शब्दों में तहरीके-तालिबान के आतंकवादियों ने इस्लाम का भी अपमान कर दिया है। वे लोग अपने को कट्टर इस्लामी कहते हैं और उन्होंने मस्जिद में ही विस्फोट करवा दिया। इस्लामी राष्ट्र होने का दावा करनेवाला पाकिस्तान इस घटना से कोई सबक सीखेगा या नहीं? उसने आतंकवाद को इसलिए बढ़ावा दिया कि वह भारत से कश्मीर छीन सकेगा। उसने भारत से लड़े युद्धों में विफल होने के बाद आतंकवाद को ही अपना हथियार बनाया लेकिन अब मियां की यह जूती मियां के सिर ही पड़ रही है। दहशतगर्दी के चलते जितने लोग भारत में मरते रहे हैं उनसे कहीं ज्यादा पाकिस्तान में मर रहे हैं। पिछले साल एक शिया मस्जिद पर हुए हमले में दर्जनों लोग मारे गए थे। इसी पेशावर में 2016 में हुए हमले के कारण लगभग डेढ़ सौ मासूम बच्चे कुर्बान कर दिए गए थे। वे बच्चे एक फौजी स्कूल में पढ़ रहे थे। इस मस्जिद में अभी मृतकों में ज्यादातर पुलिस के अफसर और जवान ही हैं। इस हमले की जिम्मेदारी ह्यतहरीके-तालिबान पाकिस्तानह्ल के कमांडर ने ली है। उसने कहा है कि यह हमला उस हत्या का बदला हे जो पिछले साल अगस्त में टीटीपी के कमांडर उमर खालिद खुरासानी की काबुल में की गई थी। ह्यतहरीकह्ल यों तो पाकिस्तानियों का संगठन है लेकिन यह अफगानिस्तान के तालिबान के साथ गहरे में जुड़ा हुआ है। अफगानिस्तान की तालिबानी सरकार और पाकिस्तानी सरकार के बीच भी लगातार खटपट चल रही है।

कविता-----

अपराधी

दिलीप कुमार दीपक

खुले बाजार के चौराहे पर
एक कातिल कहीं से आता है ,
वारदात कर हत्या की वह
भागना ही चाहता है ,
तभी पुलिस वहाँ आती है ,
उन्हें पकड़ ले जाती है ,
जेल से उनको अदालत की ,
कटघरे में बुलाया जाता है ।
खूनी के विरुद्ध गवाह कहाँ ,
ना सबूत कोई मिल पाता है ,
सत्य- न्याय पुतला के द्वारा ,
उन्हें रिहा किया जाता है ।
कोई रिहा हुआ तो रिहा हुआ ,
खून तो कोई कर जाता है ,
कानून के लंबे हाथ से बचकर अपराधी कहाँ जाता है ?

उच्च शिक्षा का हो पेशेवर प्रबंध

एसटी छात्रों ने लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। इसके मुताबिक उच्च शिक्षा में नामांकन 4 करोड़ से पार कर गया है। किस तरीके से उच्च शिक्षा में छात्रों के प्रवेश को और गति दी जा सकती है, इस विषय को बारीकी से स्टडी करने की जरूरत है। भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली पहले चुनिंदा लोगों की जरूरतें पूरी करने के मकसद से तैयार की गई थी। अब उसे ज्यादा लोगों के काम लायक बनाने के लिए बदलाव किया जाना चाहिए। इस समय उच्च शिक्षा में अभी करीब 3 .5 करोड़ छात्र-छात्राओं ने दाखिला ले रखा है। इनमें 1.96 करोड़ छात्र और 1.89 करोड़ छात्राएं हैं। यानी कुल एनरोलमेंट का 49 फीसदी छात्राएं हैं। साल 2025 तक उच्च शिक्षा में दाखिला लेने वाले सबसे अधिक छात्र और छात्राएं भारत में ही होंगे। 2030 तक उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले सबसे अधिक युवा भारत में होंगे। भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली दुनिया की सबसे बड़ी होने के बावजूद इसे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

डा. वरिंदर भाटिया-
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन ने एक रिपोर्ट जारी की है। इसके अनुसार उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के छात्रों का कुल नामांकन प्रतिशत 2014-15 से 2020-21 तक उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है जिसमें एसटी छात्रों ने लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। इसके मुताबिक उच्च शिक्षा में नामांकन 4 करोड़ से पार कर गया है। किस तरीके से उच्च शिक्षा में छात्रों के प्रवेश को और गति दी जा सकती है, इस विषय को बारीकी से स्टडी करने की जरूरत है। भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली पहले चुनिंदा लोगों की जरूरतें पूरी करने के मकसद से तैयार की गई थी। अब उसे ज्यादा लोगों के काम लायक बनाने के लिए बदलाव किया जाना चाहिए। इस समय उच्च शिक्षा में अभी करीब 3.5 करोड़ छात्र-छात्राओं ने दाखिला ले रखा है। इनमें 1.96 करोड़ छात्र और 1.89 करोड़ छात्राएं हैं। यानी कुल एनरोलमेंट का 49 फीसदी छात्राएं हैं। साल 2025 तक उच्च शिक्षा में दाखिला लेने वाले सबसे अधिक छात्र और छात्राएं भारत में ही होंगे। 2030 तक उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले सबसे अधिक युवा भारत में होंगे। भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली दुनिया की सबसे बड़ी होने के बावजूद इसे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ये चुनौतियां पठन-पाठन की गुणवत्ता, सरकारी-निजी भागीदारी, विदेशी संस्थानों का प्रवेश, रिसर्च क्षमता में वृद्धि और फंडिंग, इनोवेशन, अंतरराष्ट्रीयकरण, वैश्विक अर्थव्यवस्था की बदलती मांग जैसे क्षेत्रों में हैं। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती मांग को देखते हुए बीते दो दशकों में अनेक प्रयास हुए हैं, लेकिन नई चुनौतियां भी लगातार उभर रही हैं। छात्र जो शिक्षा ग्रहण करते हैं और रोजगार के लिए उन्हें जिस कौशल की जरूरत होती है, उनमें भी बड़ा अंतर होता है। इसकी प्रमुख वजह उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता की कमी भी है। इसके अलावा पाठ्यक्रम में कौशल विकास का न होना भी एक कारण है। हमें उच्च शिक्षा के संदर्भ में रिसर्च और अध्यापन को अलग करने के लिए अनेक प्रयासों की जरूरत है। बदलते समय के साथ लचीले पाठ्यक्रम की भी आवश्यकता है। पाठ्यक्रम तय करने और कौशल विकास में छात्र को काम देने वाले की भागीदारी बढ़ानी चाहिए। इसके अलावा अंतर-विषयी शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। कारगर अध्यापन की कमी, पुराने पड़ चुके पाठ्यक्रम और पुरानी शिक्षण विधि ने प्रशिक्षित फैकल्टी की कमी की समस्या को और बढ़ाया ही है। छात्रों को विभिन्न तरह की स्किल विकसित करने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। इनमें एनालिटिकल रीजनिंग, क्रिटिकल थिंकिंग, प्रॉब्लम सॉल्विंग और कोलैबोरेटिव वर्किंग जैसी स्किल शामिल हैं। इनकी पढ़ाई और इनका मूल्यांकन इस तरह हो कि छात्रों को रटना न पड़े। बहु-विषयी रिसर्च के अवसर न होने के कारण विज्ञान और समाजशास्त्र, दोनों में क्वालिटी रिसर्च की कमी है। इससे उद्योगों के साथ जुड़ाव प्रभावित हुआ है। उच्च शिक्षा में पेशेवर मैनेजमेंट के जरिए उत्कृष्टता हासिल करने के लिए नए गवर्नेंस मॉडल की आवश्यकता है जिसमें पारदर्शिता, समानता, जवाबदेही और समावेशिता जैसी विशेषताओं को शामिल किया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा संस्थानों को विकेंद्रीकृत गवर्नेंस की दिशा में भी कदम बढ़ाना चाहिए ताकि कामकाज के विभिन्न स्तरों पर स्वायत्तता, जवाबदेही, लचीलापन, विश्वास और पारदर्शिता कायम हो सके। भावी जरूरतें पूरी करने वाला विश्वविद्यालय बनाने के लिए रेगुलेटर को भी अपनी भूमिका बदलने की जरूरत है। वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा के साथ शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण को देखते हुए उच्च शिक्षा संस्थानों को पारंपरिक विश्वविद्यालय प्रशासन का तरीका छोडा चाहिए जो 19वीं सदी की जरूरतों पर आधारित है। उन्हें आधुनिक पेशेवर गवर्नेंस को अपनाना चाहिए। उच्च शिक्षा संस्थानों के कुलपति, डायरेक्टर, रजिस्ट्रार और अन्य सचिवालय कर्मी शैक्षणिक प्रशासकों में शुमार किए जाते हैं जिनके लिए अभी पेशेवर और प्रशासनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। इन संस्थानों में पेशेवर मैनेजमेंट की कमी होती है जिसे बदला जाना चाहिए। कुलपति को लीडरशिप प्रोग्राम में और अन्य प्रशासनिक कर्मचारियों को औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिरकत करनी चाहिए। अकादमिक प्लानिंग, भर्ती की बेहतर व्यवस्था, अच्छे कर्मचारियों को जोड़े रखने की रणनीति, कर्मचारियों का विकास और उनका प्रशिक्षण, व्यक्तिगत और प्रोफेशनल काउंसलिंग जैसे कदम उठाए जाने चाहिए। विश्वविद्यालयों के लिए ई-गवर्नेंस कार्यक्रम की संकल्पना और उन्हें लागू करने के साथ एक ईआरपी सिस्टम भी विकसित करने की जरूरत है ताकि प्रशासन और छात्रों तथा स्टाफ और लोगों के बीच सूचनाओं का सहज आदान-प्रदान हो सके। इससे आंतरिक कार्यों में गति आएगी और गुणवत्ता में भी सुधार होगा। पढ़ाने का पारंपरिक तरीका बदलने के लिए शिक्षकों को प्रौद्योगिकी आधारित सेवाओं का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। संस्थान भी इसमें मदद करें। यह भी महत्वपूर्ण है कि उच्च शिक्षा संस्थान दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पठन-पाठन का तरीका अपनाएं। अध्यापन और मूल्यांकन के प्रभावी वैश्विक तरीके अपनाकर फैकल्टी के पेशेवर विकास और मौजूदा तथा भावी जरूरतों के मुताबिक प्रौद्योगिकी आधारित इकोसिस्टम विकसित करके श्रेष्ठ पठन-पाठन सुनिश्चित किया जा सकता है। जरूरत इस बात की है कि हम शिक्षक केंद्रित अध्यापन व्यवस्था से छात्र केंद्रित व्यवस्था की तरफ जाएं, जो अनुभव आधारित हो तथा छात्रों की कल्पना को साकार करने में सक्षम हो। गूगल और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया तथा इंटरनेट का इस्तेमाल अध्ययन-अध्यापन में नियमित रूप से किया जाना चाहिए। इससे छात्रों और शिक्षकों दोनों को फायदा होगा। सामान्य और ऑनलाइन क्लास के मिश्रित रूप पर फोकस होना चाहिए। हमें उच्च क्वालिटी के मानव संसाधन तैयार करने होंगे जो दुनिया में सर्वश्रेष्ठ के समकक्ष हों, जिन्हें रिसर्च और इनोवेशन की गहरी समझ हो तथा जो विवेचनात्मक और गैर-पारंपरिक तरीके से सोच सकें। दूसरा, रिसर्च और इनोवेशन के लिए बड़ी संख्या में वैश्विक एक्सीलेंस केंद्र स्थापित करने की जरूरत है जिनका समाज और अर्थव्यवस्था के साथ मजबूत जुड़ाव हो। तीसरा, रिसर्च और इनोवेशन का फोकस बदल कर राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को केंद्र में रखा जाना चाहिए। देश को उच्च शिक्षा के पेशवर प्रबंध की जरूरत है ताकि एनरोलमेंट में वृद्धि हो सके। अभी से ही छात्रों को पठन-पाठन में लचीलेपन की जरूरत है ताकि वे अलग-अलग समय पर दाखिला ले सकें या बाहर निकल सकें। विश्वविद्यालयों को ऐसा नजरिया अपनाना पड़ेगा जिसमें छात्रों को अपना अध्ययन मार्ग खुद तय करने की आजादी हो। कौशल विकास की धारणा छात्रों में प्राथमिक स्कूल स्तर पर ही शुरू की जानी चाहिए जो उच्च शिक्षा ग्रहण करने तक जारी रहे।

पायलट के दौरों ने बढ़ाई गहलोत की धड़कन

प्रदेश की राजनीति में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मगर कांग्रेस आलाकमान द्वारा पायलट को ताकतवर बनाने की दिशा में अभी तक कोई सकारात्मक कार्यवाही नहीं हो पाई है। इससे सचिन पायलट का भी धीरज जवाब देने लगा है। इसीलिए वह एक बार फिर मुखर होकर बयान देने लगे हैं। कुछ दिनों पूर्व सचिन पायलट भारत जोड़ो यात्रा के दौरान पंजाब में राहुल गांधी से मिलकर राजनीतिक चर्चा की थी। उसके बाद लौटकर उन्होंने राजस्थान में जाट बहुल नागौर हनुमानगढ़ झुंझुनू पाली व जयपुर में बड़ी-बड़ी जनसभाएं कर अप्रत्यक्ष रूप से गहलोत सरकार पर निशाना साध रहें हैं। पायलट की मीटिंगो में हजारों की संख्या में लोग शामिल हो रहें हैं। हर जगह पायलट ने बेरोजगारों युवाओं किसानों दलितों व पीड़ितों के पक्ष में बातें रखकर गहलोत सरकार को घेरने का काम किया है।

रमेश सर्राफ धमोरा
लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लिए देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।

राजस्थान में सचिन पायलट की लगातार अनदेखी की जा रही है। कांग्रेस आलाकमान सचिन पायलट को बार-बार आश्वासन दे रहा है कि उन्हें उचित मान सम्मान मिलेगा। प्रदेश की राजनीति में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। मगर कांग्रेस आलाकमान द्वारा पायलट को ताकतवर बनाने की दिशा में अभी तक कोई सकारात्मक कार्यवाही नहीं हो पाई है। इससे सचिन पायलट का भी धीरज जवाब देने लगा है। इसीलिए वह एक बार फिर मुखर होकर बयान देने लगे हैं।

कुछ दिनों पूर्व सचिन पायलट भारत जोड़ो यात्रा के दौरान पंजाब में राहुल गांधी से मिलकर राजनीतिक चर्चा की थी। उसके बाद लौटकर उन्होंने राजस्थान में जाट बहुल नागौर हनुमानगढ़ झुंझुनू पाली व जयपुर में बड़ी-बड़ी जनसभाएं कर अप्रत्यक्ष रूप से गहलोत सरकार पर निशाना साध रहें हैं। पायलट की मीटिंगो में हजारों की संख्या में लोग शामिल हो रहें हैं। हर जगह पायलट ने बेरोजगारों युवाओं किसानों दलितों व पीड़ितों के पक्ष में बातें रखकर गहलोत सरकार को घेरने का काम किया है। सचिन पायलट की जनसभाओं में उमड़ रही भीड़ को देखकर गहलोत के हाथ पांव फूल गए। उन्होने अपने मंत्रियों को तुरंत प्रदेश के दौरे पर रवाना कर जन समस्याओं को सुलझाने के निर्देश दिए हैं। पायलट को यह बात अच्छी तरह समझ में आ चुकी है कि गहलोत के सामने कांग्रेस आलाकमान बेबस हो रहा है। सोनिया गांधी राहुल गांधी प्रियंका गांधी चाहे पायलट के धैर्य की कितनी भी तारीफ करें। गहलोत के मुख्यमंत्री रहते उनको कुछ भी मिलने वाला नहीं है। पायलट जान चुके हैं कि फिलहाल गांधी परिवार उन्हें सिर्फ दिलासा के अलावा और कुछ नहीं दे सकता हैं। मुख्यमंत्री गहलोत पायलट को बार-बार कांग्रेस से बगावत करने वाले नेता के तौर पर कठघरे में खड़ा करते रहते हैं। मगर गहलोत द्वारा स्वयं ही पार्टी आलाकमान के निदेर्शों को नहीं मानकर खुलेआम बगावत करने की घटना को गहलोत मात्र एक छोटी सी भूल बताकर उस पर कोई चर्चा नहीं करना चाहते हैं।

गहलोत समर्थक विधायकों द्वारा 25 सितंबर 2022 को जयपुर में कांग्रेस पर्यवेक्षक मलिकार्जुन खरगे व अजय माकन की उपस्थिति में कांग्रेस विधायक दल के समानांतर कैबिनेट मंत्री शांति धारीवाल के घर पर अलग से विधायकों की मीटिंग आयोजित कर विधानसभा अध्यक्ष को अपना इस्तीफा सौंपने की घटना को गहलोत सिर्फ माफी मांग कर समाप्त कर देना चाहते हैं। उस घटना के बाद गहलोत ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से माफी मांग कर अपने को पाक साफ कर लिया था। जबकि सचिन पायलट को गहलोत अभी तक भी गुनाहगार मानते आ रहे हैं।

सचिन पायलट को कांग्रेस आलाकमान से इस बात को लेकर भी गहरी नाराजगी है कि कांग्रेस पर्यवेक्षकों के सामने समानांतर मीटिंग बुलाने के दोषी कैबिनेट मंत्री शांति धारीवाल सरकारी मुख्य सचेतक महेश जोशी व पर्यटन निगम के अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ को कांग्रेस अनुशासन समिति द्वारा कारण बताओ नोटिस दिए हुए करीबन साढ़े तीन माह बीत जाने के बाद भी अभी तक उनके खिलाफ किसी तरह की कार्यवाही नहीं की गई है। इतना ही नहीं उस घटना के दोषी तीनों ही नेता पार्टी के हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। पायलट कई बार कारण बताओ नोटिस देने वाले नेताओं के खिलाफ कार्यवाही करने की मांग कर चुके हैं। उसके उपरांत भी अभी तक स्थिति जस की तस बनी हुई है।

इससे पायलट को लगता है कि मुख्यमंत्री गहलोत के दबाव में कांग्रेस आलाकमान इन तीनों नेताओं के खिलाफ किसी भी तरह की कार्यवाही को टाल रहा है। जबकि सचिन पायलट ने जब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की कार्यशैली के खिलाफ बगावत की थी तब उन्हें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व उपमुख्यमंत्री के पद से तथा उनके समर्थक तीन मंत्रियों महाराजा विश्वेंद्र सिंह रमेश मीणा मुरारी लाल मीणा को तत्काल पद से बर्खास्त कर दिया गया था। पायलट की नजरों में उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है।

पायलट समर्थक सैनिक कल्याण राज्यमंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा का कहना है कि 2013 में अशोक गहलोत के मुख्यमंत्री रहते उनके नेतृत्व में विधानसभा चुनाव लड़ा गया था। जिसमें कांग्रेस 200 में से महज 21 सीटों पर ही चुनाव जीत सकी थी। जबकि 2018 में सचिन पायलट कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे। तब कांग्रेस ने वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री रहते 100 सीटें जीतकर सरकार बनाई थी। ऐसे में उस वक्त 200 में से 21 सीट जीतने वाले को तो मुख्यमंत्री बना दिया गया था। जबकि 200 में से 100 सीट जीतने वाले को उप मुख्यमंत्री ही बनाया गया था। पायलट के साथ उस समय किया गया भेदभाव अभी तक जारी है। अब तो पायलट समर्थक भी मानने लगे हैं कि मुख्यमंत्री गहलोत ही अपने कार्यकाल का अंतिम बजट पेश करेगें। ऐसे में पायलट के मुख्यमंत्री बनने पर उन्हें राजनीतिक रूप से कोई भी लाभ मिलने वाला नहीं है। इसीलिए सचिन पायलट ने अपनी रणनीति बदल ली है।

हालांकि सचिन पायलट के पास सत्ता नहीं रहने के कारण विधायकों की संख्या कम है। विधायकों के संख्या बल पर ही मुख्यमंत्री गहलोत आलाकमान से अपनी हर बात मनवा लेते हैं। ऐसे में सचिन पायलट का पूरा फोकस युवा वर्ग पर हो गया है। सचिन पायलट गहलोत शासन में सरकारी परीक्षाओं के लगातार पेपर आउट होने पर खुलकर विरोध जता रहे हैं। पायलट ने तो यहां तक कह दिया की पेपर नकल करवाने वाले गिरोह के सरगनाओं को नहीं पकड़ा जा रहा है।

राजस्थान में पिछले 4 साल में 14 भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक हो चुके हैं। ऐसे में सरकारी नौकरियों के लिए तैयारी करने वाले नौजवानों के साथ बड़ा धोखा हो रहा है। पायलट का मानना है कि मुख्यमंत्री कहते हैं कि पेपर तिजोरी में बंद रहते हैं तो फिर बंद तिजोरी से पेपर कौन से जादू के बल पर आउट हो रहे हैं। सचिन पायलट द्वारा यह एक तरह से सीधा मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर निशाना साधा जा रहा है। पायलट के बयानों को युवाओं में भारी समर्थन मिल रहा है। इसी के चलते पायलट जहां भी जाते हैं बड़ी संख्या में नौजवान उनका समर्थन करने पहुंच रहे हैं।

छवि बदलने में कामयाब हुए राहुल गांधी!

डॉ श्रोपाल नारसन-

भारत को एकजुट करने और आमजनता के साथ मिलकर देश को मजबूत करने के लिए दक्षिण से उत्तर भारत तक निकाली गई ह्यभारत जोड़ो यात्राह्ल का 30 जनवरी को श्रीनगर जम्मू कश्मीर में भारी हिमपात के बीच खुले आसमान के नीचे समापन हो गया। इस यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने कहा कि वे देश में नफरत के खिलाफ मोहब्बत की दुकान खोलना चाहते हैं। उन्होंने जगह-जगह भाषण देते हुए और मीडिया के साथ बातचीत में कहा कि यह यात्रा कांग्रेस के लिए नही बल्कि देश को जोड़ने के लिए है। राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा और बेरोजगारी महंगाई भारत के सीमा क्षेत्र में चीन के दखल का मुद्दा भी उठाया। भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने करीब चार हजार किलोमीटर की दूरी तय की है। उन्होंने भारी ठंड में टी-शर्ट पहनकर यात्रा करते हुए उन गरीब बच्चों का उदाहरण भी दिया जिनके पास पहनने के प्रयाप्त कपड़े नही है। इसी कारण उनका टी-शर्ट पहनने का मुद्दा छाया रहा। आजाद भारत में पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की पदयात्रा के बाद राहुल गांधी की यह यात्रा खास चर्चा का कारण बनी है। राहुल गांधी ने इस यात्रा के माध्यम से अपनी छवि को भी सुधारा है और उनके साथ अन्य दलों के लोग भी समर्थन को आए है। तभी तो भारत जोड़ो यात्रा के द्वारा राहुल गांधी ने एक मजबूत और गंभीर नेता की छवि बनाई है। भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी कही बच्चों के साथ खेलते नजर आए तो कहीं बुजुर्ग महिला का हाथ थामकर उनका होंसला बढाते दिखाई दिए। तो कहीं आम लोगों को गले लगाकर उनका दुःख दर्द बांटते रहे। जिससे राहुल गांधी की एक सकारात्मक छवि बनकर उभरी है। कहा जा सकता है कि इस यात्रा ने राहुल गांधी के व्यक्तित्व को भी गंभीर बनाया है। राहुल गांधी ने इस यात्रा के द्वारा हिंदुस्तान को निकट से देखा हैजिससे उन्होंने देश के हर गंभीर मुद्दे को समझने की कौशिश की। इस यात्रा के माध्यम से राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी के मजबूत नेतृत्व के सामने एक ताकतवर विकल्प के रूप में खड़े होने की कोशिश इस यात्रा के जरिए की है। यदि राहुल गांधी को बराबर का नेता ना भी कहें तब भी अब वो कतार में तो आ ही गए हैं। चूंकि लोग अब लोग राहुल गांधी को मोदी के विकल्प के रूप में गंभीरता से ले रहे हैं। राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान सांप्रदायिकता का मुद्दा जोर शोर से उठाया और लोगों को मिलकर एक साथ रहने का संदेश दियाजो एक सार्थक पहल कही जा सकती है। राहुल गांधी की इस भारत जोड़ो यात्रा का मकसद सबसे पहले कांग्रेस पार्टी के भीतर ही उन्हें गंभीर नेता के तौर पर स्थापित करना थाजिसमे उन्होंने कामयाबी हासिल की है।

लोग सवाल उठा रहे थे कि पूरे देश में मोदी और बीजेपी के खिलाफ केंद्र में कौन होगा?विकल्प न होने के कारण ही न चाहते हुए भी मोदी को चुनना लोगो की मजबूरी बनी हुई थीलेकिन इस यात्रा से राहुल गांधी ने इसका जवाब देने की कोशिश की हैस्वयं को स्थापित करके स्वयं को मोदी का विकल्प सिद्ध किया है। नरेंद्र मोदी की सरकार आने के बाद से उनके विरोधियों को भारत जोड़ो यात्रा ने पहली बार इस तरह का प्लेटफॉर्म दिया है। भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता में आते ही पहला काम ये किया कि कांग्रेस को विपक्षी दल का दर्जा ना देते हुए उसे क्षेत्रीय दलों से भी कमतर साबित करने और राजनीति में किनारे करने की कोशिश की थी। ऐसे में राहुल गांधी के लिए सबसे जरूरी था कि देश की सबसे पुरानी कांग्रेस पार्टी को पुनर्जीवित किया जाए।

संक्षिप्त खबरें

राजद ने केन्द्रीय बजट को बताया आंकड़ों का दस्तावेज

गोपालगंज। राजद ने केंद्रीय बजट को पूरी तरह दिशाहीन बताया है। बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए राजद के प्रधान महासचिव इम्तेयाज अली भुट्टो ने कहा कि बजट में ऐसा कोई भी प्रस्ताव नहीं है, जिससे आम और मध्यम वर्ग के लोगों को बढ़ती महंगाई से राहत मिल सके। उन्होंने बजट को महज आंकड़ों का दस्तावेज बताते हुए कहा कि बजट में बिहार जैसे पिछड़े राज्यों की घोर उपेक्षा की गई है। कुल मिला कर कहा जाये तो ये बजट देश में बेरोजगारी के साथ-साथ महंगाई को और बढ़ावा देगी।

शराब पीने के आरोप में एक दर्जन गिरफ्तार

गोपालगंज। जिले के भोरे थाने की पुलिस ने थाना क्षेत्र के अलग अलग जगहों पर कार्रवाई करते हुए शराब पीने के आरोप में एक दर्जन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गये लोगों की मेडिकल जांच में शराब पीने की पुष्टि होने के बाद सभी को कोर्ट में पेश कर दिया गया। पकड़े गये लोगों में भोरे थाना क्षेत्र के धुरबंतरिया गांव के खुशीलाल राम, संतोष यादव, सिसई का साबिर अंसारी, विजय कुमार, भोरे गांव का शेषनाथ, बनियाछापर का रामध्यान, डूमर नरेंद्र गांव का विकास कुमार, बब्लू कुमार और जितेंद्र कुमार, फुलवरिया थाना क्षेत्र के राजपुर का जयप्रकाश यादव, यूपी के देवरिया जिले के खामपार का जयनारायण दुबे एवं छपियाँ का विनोद कुमार शामिल हैं।

ओझवलिया गांव से चोरी गई बाइक लावारिस हालत में बरामद

गोपालगंज। जिले के उचकागांव थाना क्षेत्र के ओझवलिया गांव में पांच दिन पूर्व चोरी गई बाइक को पुलिस ने बुधवार के दिन थाना क्षेत्र के सनाह माधो गांव के समीप लावारिस हालत में बरामद कर लिया।बताया जा रहा है कि 27 जनवरी की रात फुलवरिया थाना क्षेत्र के चमारीपट्टी गांव निवासी धर्मेंद्र पांडेय थाना क्षेत्र के ओझवलिया गांव निवासी धीरज तिवारी के घर तिलक समारोह में शामिल होने के लिए आए हुए थे। इसी दौरान चोरों ने उनकी बाइक चोरी कर ली थी।

इंटरमीडिएट की परीक्षा में 355 रहे अनुपस्थित

गोपालगंज। इंटरमीडिएट की वार्षिक परीक्षा में पहले दिन कुल 355 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे, जबकि एक परीक्षार्थी को डॉ। राजेंद्र प्रसाद परीक्षा केंद्र हथुआ से कदाचार के आरोप में निष्कासित कर दिया गया। पहले दिन की परीक्षा के प्रथमपाली में 12581 परीक्षार्थी उपस्थित रहे, जबकि 96 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। वही द्वितीयपाली में 18021 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। वही 259 परीक्षार्थी उनुपस्थित रहे। इस प्रकार पहले दिन की परीक्षा में 355 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। इस प्रकार पहले दिन की परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से कराने में प्रशासन सफल रहा।

गोपालगंज में ट्रांसपोर्ट व कुरियर एजेंसियों की उत्पाद विभाग ने की जांच

गोपालगंज। उत्पाद विभाग के द्वारा शहर के सभी ट्रांसपोर्ट व कुरियर एजेंसियों की विधिवत जांच की गयी। उत्पाद अधिकारियों के द्वारा अवैध शराब को ट्रांसपोर्ट व कुरियर एजेंसियों के द्वारा मंगाये जाने की सूचना पर जांच की गयी। जांच के दौरान शहर में हडकंप मची रही। इसकी जानकारी देते हुए उत्पाद अधीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि तस्करों के द्वारा ट्रांसपोर्ट व कुरियर एजेंसियों के माध्यम से शराब मंगाये जाने को लेकर विभागीय निर्देश के आलोक में शहर की सभी ट्रांसपोर्ट व कुरियर एजेंसियों की जांच की गयी।

विद्यालय का चहारदीवारी गिरा

टेटिया बंबर। मध्य विद्यालय बिच्छीचांचर की चहारदीवारी गिरा जाने से वहां की व्यवस्था बिगड़ गई है . छात्र असुरक्षित महसूस कर रहे हैं. विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक रामखेलावन मंडल ने बताया कि विद्यालय का चार दीवाली काफी पुराना हो गया था . जो कि अचानक आज गिर गया है चारदीवारी गिर जाने के कारण विद्यालय के बच्चे पढ़ाई करने के बदले शिक्षकों को झांसा देकर फरार हो जाता है रात में असामाजिक तत्वों का विद्यालय में आना जाना लगा रहता है ग्रामीण मुकेश कुमार अभिमन्यु कुमार प्रमोद यादव ने प्रखंड विकास पदाधिकारी टेटिया बंबर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी दिसंबर से विद्यालय सहित अन्य व्यवस्था सुचारू रहे इसके लिए चारदीवारी बनवाने की मांग किया।

ग्रामीणों ने एसडीपीओ कार्यालय के सामने किया प्रदर्शन

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। खड़गपुर प्रखंड के मुड़ेरी पंचायत के ग्रामीणों ने लोजपा नेता चंडी मंडल के नेतृत्व में मुढैरी गांव के दर्जनों ग्रामीणों ने एसडीपीओ कार्यालय के सामने रोज पूर्ण प्रदर्शन गत सोमवार को किया। प्रदर्शनकारियों का आरोप था कि पंचायत के मुखिया कुंदन मंडल पर झूठा मुकदमा दर्ज किया गया है , जिसे ग्रामीणों ने वापस लेने का और आरोप मुक्त करने का मांग किया है।

सीएम पर पीके का हमला कुछ घंटो में कैसे होगा समस्याओं का समाधान

हमारी वजह से बंगले से निकल सामाधान यात्रा कर रहे है सीएम: पीके

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

जन सुराज अभियान के 123वें दिन प्रशांत किशोर ने गोपालगंज में मीडिया से बातचीत की। प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से उन्होंने विस्तार से जन सुराज अभियान के बारे में बताया और पदयात्रा के दौरान हुए अबतक के अपने अनुभवों को साझा किया।

गोपालगंज जिले की समस्याओं पर बात करते हुए बताया कि पदयात्रा के दौरान हमनें जितनी समस्याओं के बारे में बताया है उसे नीतीश कुमार या उनके लोग झूठा साबित करके दिखा दे तो मैं मानूं। नीतीश कुमार बड़े आदमी हैं, वो तो इसपर जवाब नहीं देंगे मगर जो उनसे छोटे लोग हैं वही कम से कम जवाब दे दें। आज नीतीश कुमार 5 घंटे की यात्रा कर समाधान करने की कोशिश कर रहे हैं, तो इसे तो 17 साल पहले ही हो जाना चाहिए था। आगे प्रशांत ने कहा कि हमारी सफलता इसी में है कि नीतीश कुमार कम से कम इसी बहाने बंगले से बाहर तो निकले। उन्होने नीतीश कुमार पर हमला करते हुए कहा कि जिन लड़कों ने नीतीश कुमार से सवाल पूछा और उनका विरोध किया, उसे गिरफ्तार कर लिया। उसने सही सवाल पूछा था। विरोध करने वाले लड़कों को तुरंत रिहा करना चाहिए। प्रशांत ने कहा कि जिस लड़के ने नीतीश कुमार पर सवाल उठाया है, कोई गलत सवाल नहीं उठाया है। फिजूल की बात में उस लड़के को गोपालगंज पुलिस ने गिरफ़्तार किया है। नीतीश कुमार के गोपालगंज आने से पहले कम से कम लोकतांत्रिक मूल्यों को ध्यान में रखकर ही उस लड़के को तुरंत रिहा कर देना चाहिए। उन्होने कहा कि जन सुराज अभियान के माध्यम से बिहार के युवाओं के लिए यूथ क्लब के जरिए बच्चों की पढ़ाई में मदद और खेलकूद की व्यवस्था की जा रही है। पदयात्रा के दौरान गोपालगंज में ही 500 ऐसे क्लब खुले हुए हैं और हर क्लब में 100 से अधिक युवा जुड़े हैं। प्रशांत ने बताया कि अभी यूथ क्लब की संख्या हर पंचायत में 2 से 3 है, ये संख्या बढ़कर हर पंचायत में 5 से 7 तक हो जाएगी। युवा क्लब की कार्यशैली को समझाते हुए प्रशांत किशोर ने कहा कि इन क्लबों के माध्यम से युवा अपने पंचायतों में खेलकूद, गरीब बच्चों की पढ़ने की व्यवस्था और और सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों को चिन्हित कर उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सके, ऐसे सकारात्मक प्रयास किए जा रहें हैं। प्रशांत ने बताया कि जन सुराज अभियान के माध्यम से इन यूथ क्लब में गरीब बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था फ्री में की जाएगी। नेताओं से पैसे लेने से जुड़े एक सवाल का जवाब देते हुए पीके ने कहा कि मैंने कभी किसी नेता से एक रुपया नहीं लिया है। मैंने नेताओं की मदद की उनकी सरकार बन गई। आज जिसकी सरकार बन गई है, उनमें कुछ लोगों से हम मदद मांग रहे हैं।

नेशनल जूनियर ताइक्वांडो प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए खिलाडी रवाना

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

विशाखापट्टनम में 3 से 5 फरवरी तक आयोजित होने वाली 39वीं नेशनल जूनियर ताइक्वांडो प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए गोपालगंज के एकमात्र खिलाडी हिमांशु तिवारी बुधवार को रवाना हो गए। जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन के महासचिव कमल कुमार पटेल ने बताया यह ताइक्वांडो प्रतियोगिता 3 फरवरी से 5 फरवरी तक चलेगी जिसके लिए जिले ताइक्वांडो संघ से एकमात्र खिलाड़ी हिमांशु तिवारी का चयन हुआ है जो आज पटना से आंध्र प्रदेश विशाखापट्टनम के लिए रवाना हुए।

इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष प्रेम सागर यादव ने हिमांशु तिवारी को जीत की अग्रिम बधाई देते हुए शुभकामनाएं दी। इसके साथ ही संघ के उपाध्यक्ष सोहेल अहमद, जिले का चीफ कोच विनीत कुमार शर्मा, संघ के कोषाध्यक्ष विद्यासागर प्रसाद और हिमांशु तिवारी के माता पिता भाई बहनों ने शुभकामनाओं के साथ हिमांशु तिवारी को रवाना किया। जिला ताइक्वांडो संघ के महासचिव कमल कुमार पटेल ने बताया बिहार में एकमात्र ताइक्वांडो संघ है जिसे बिहार ताइक्वांडो एसोसिएशन के नाम से जाना जाता है जो राष्ट्रीय स्तर पर चयनित सभी ताइक्वांडो खिलाड़ियों को बिहार ताइक्वांडो संघ के कोष से सभी खिलाड़ियों का खर्च वहन किया जाता है।

अंकित हत्याकांड के तीन आरोपियों ने न्यायालय में किया सरेंडर

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

नगर थाने के पसरमा गांव के अंकित हत्याकांड के तीन आरोपियों ने बुधवार को पुलिस दबिस के कारण कोर्ट में सरेंडर कर दिया। जिसके बाद न्यायालय में तीनों आरोपियों को जेल भेज दिया। इसकी जानकारी देते हुए एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि नगर थाने के बसडीला गांव में हुयी अंकित कुमार की हत्या में शामिल नामजद अभियुक्त सहादत मिंया, शमशेर मिया और सुभान अहमद ने लगातार बढ रही पुलिस दबिस व कुर्की के डर से बुधवार को न्यायालय में सरेंडर कर दिया है। उन्होने बताया कि हत्याकांड में शामिल सात अभियुक्तों को पुलिस पूर्व में ही गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। फरार अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए गठित एसआइटी लगातार छापेमारी कर रही है। जल्द ही घटना में शामिल सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। गौरतलब हो कि नगर थाने के बसडीला गांव में क्रिकेट खेलने के विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुयी मारपीट में एक युवक की मौत हो गयी थी। इस मामले को लेकर मृतक अंकित कुमार के पिता के द्वारा 16 लोगो को नामजद अभियुक्त बनाया गया था। जिसके बाद पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुए सात आरोपियो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। वही लगातार बढ रही पुलिस दबिस के कारण तीन आरोपियों ने बुधवार को न्यायालय में सरेंडर कर दिया।

200 बोतल शराब और बाइक जब्त, कारोबारी फरार

गोपालगंज । जिले के भोरे थाने की पुलिस ने थाना क्षेत्र के लामिचैर में कार्रवाई करते हुए 200 बोतल शराब और एक बाइक जब्त कर लिया। जबकि इस दौरान दो कारोबारी पुलिस को चकमा देकर फरार होने में कामयाब रहे। बताया जाता है कि थानाध्यक्ष को यह सूचना मिली थी कि सकतौली की तरफ से दो युवक बाइक से शराब लेकर आ रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस ने लामिचैर में वाहनों की जांच शुरू कर दी। इस दौरान पुलिस ने शराब लेकर आ रहे दो युवकों को रोका, पुलिस को देखते ही दोनों युवक शराब व बाइक छोड़ कर फरार हो गये। मामले में स्थानीय थाने में उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर छानबीन की जा रही है।

स्पीडी ट्रायल कर आरोपियों को फांसी की सजा दिलाए प्रशासन: सम्राट चौधरी

डीएम से बात कर मुआवजा व त्वरित कारवाई करने का निर्देश

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज के बसडीला में छात्र अंकित हत्याकांड को लेकर विपक्ष महागठबंधन सरकार पर हमलावर है। बुधवार को बिहार विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष सम्राट चैधरी ने पसरमा गांव पंहुचकर पीडित परिजनों से मुलकात की और महागठबंधन सरकार पर हमला करते हुए कहा कि एक दशक पूर्व जो अनुचित कार्य सजायाफ्ता लालू यादव के राज में होता था। आज नीतीश जी के राज में भी वही हो रहा है।

सूबे में सांप्रदायिक शक्तियों की ओर से उन्माद फैलाया जा रहा है लेकिन पटना में बैठे कुछ लोगों के कारण इन उन्मादियों को विशेष छूट दी जा रही है, जिसे भारतीय जनता पार्टी बर्दाश्त नहीं करने वाली है। उन्होने कहा कि हमलोग जनहित में पटना प्रेसर को नाकाम साबित कर के ही मानेंगे। उन्होने डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी से बातकर परिजनों को 25 लाख मुआवजा और सभी आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी समेत त्वरित कार्रवाई करते हुए उनके ठिकाने को ध्वस्त करने की मांग की। उन्होने पुलिस प्रशासन को बाहरी लोगो पर विशेष नजर रखने की हिदायत दी। उन्होने कहा कि ये घटना रोंगटे खड़ी कर देने वाली है। जिस तरीके से रास्ते चलते अंकित को मुख्यारोपी समेत सभी ने महिलाओं के साथ मिलकर गला दबाकर मारने का काम किया ये हैरान करने देने वाला वाक्या है। जिला प्रशासन तुरंत स्पीडी ट्रायल चलाकर आरोपियों को फांसी की सजा दिलाए। अगर जिला प्रशासन के द्वारा जल्द कार्रवाई नहीं की गयी तो भाजपा अंकित के परिजनों को न्याय दिलाने के लिए सडक से सदन तक आवाज उठायेगी और अगर जरूररत पडी तो कोर्ट का भी सहारा लेगी। इस मौके पर भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष मिथिलेश तिवारी, सदर विधायक कुसुम देवी, भाजपा जिलाध्यक्ष विनोद कुमार सिंह, ओमप्रकाश सिंह, राजू सिंह सहित अन्य भाजपा नेता मौजूद थे।

कड़ी चौकसी के बीच बिहार इंटरमीडिएट की परीक्षा शुरू

डीएम एसपी सहित अन्य अधिकारी परीक्षा केन्द्र का लेते रहे जायजा

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज में कड़ी चैकसी के बीच बुधवार से इंटर की परीक्षा शुरू हो गई। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति ने इंटर परीक्षा के मद्देनजर छात्र छात्राओं के लिए कई दिशा निर्देश जारी किए हैं, इनमें सबसे प्रमुख है कि कोई भी परीक्षार्थी केंद्र पर जूता मोजा पहन कर नहीं पहुंचे यदि कोई भी छात्र छात्रा परीक्षा केंद्र पर जूता मोजा पहन कर आते हैं तो उन्हें केंद्र में प्रवेश की इजाजत नहीं होगी। जिले के 21 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा दो पालियों में आयोजित हो रही है। जिले भर के परीक्षा केंद्रों पर 39233 छात्र-छात्राओं की परीक्षा में शामिल होने की उम्मीद है। इनमें छात्रों की संख्या 19,422 है जबकि छात्राओं की संख्या 19,988 है। परीक्षा केंद्रों के 500 गज के दायरे में अनुमंडल पदाधिकारी के द्वारा धारा 144 लागू कर दी गयी है। जिला प्रशासन के कडे चैकसी के कारण किसी भी परीक्षा केन्द्र पर नकलचियो का बोल बाला नही पाया जा सका। यहाँ तक की हर परीक्षा केन्द्र के वीक्षक प्रशासनिक निर्देश से इतने सहमे हुये थे कि किसी परीक्षार्थी को उतर पुस्तिका के अलावा कही भी ताक झाक नही होने दे रहे थे। डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी व एसपी स्वर्ण प्रभात ने अपने दल बल के साथ हर परीक्षा केन्द्रो पर किये गये दुरस्त व्यवस्था की निगरानी तथा परीक्षा केन्द्रो के अंदर शांतिपूर्ण चल रहे परीक्षा का निरीक्षण किया। इनके अलावा उपविकास आयुक्त अभिषेक रंजन, अपर समाहर्ता सुनील कुमार, एसडीएम डॉ. प्रदीप कुमार, हथुआ एसडीएम राकेश कुमार, सहित कई वरीय अधिकारियो का टीम हर केन्द्रो पर उडनदस्ता के रूप में निगरानी कर रहे थे। किसी भी परीक्षा केन्द्र के बाहर कोई भी अभिभावक या नकल कराने वाले नकलची दुर दुर तक नजर नही आ रहे थे। परीक्षा शुरू होने के पूर्व ही हर केन्द्रो पर तैनात दण्डाधिकारियो ने केन्द्र के अंदर प्रवेश करने के पूर्व ही परीक्षाथीयी की तलाशी लेने के बाद ही अनुमति प्रदान कर रहे थे।

विद्यालय में सुरक्षा कार्यक्रम के तहत शिक्षकों को दिया गया प्रशिक्षण

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

बिहार शिक्षा परियोजना के बैनर तले विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम अंतर्गत विद्यालय सुरक्षा से संबंधित एवं कोविड-19 संक्रमण से सफलता हेतु शिक्षक-शिक्षिकाओं का एक दिवसीय गैर-आवासीय प्रशिक्षण के प्रथम बैच बुधवार को बीआरसी में शुरू की गयी। विभागीय निर्देश के आलोक में प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों को विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय सुरक्षा से संबधित चार दिवसीय आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण का शुभारंभ मास्टर ट्रेनर आदम अली, विजय कुमार भास्कर एवं पूर्व डीडीओ ललन मिश्रा के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस दौरान पूर्व डीडीओ ललन मिश्रा ने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उदेश्य प्राकतिक आपदा की पूरी जानकारी और विपदा की परिस्थिति को पूर्व से ही चिह्नांकित कर उस पर पूर्व तैयारी से बचाव के तरीकों को अपनाकर विद्यालयी बच्चों को जागरूक कर भयमुक्त वातावरण में अपने विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने का माहौल तैयार कराना है।

उन्होंने बताया कि पचास-पचास शिक्षकों का बैच बनाकर प्रत्येक विद्यालयों के सभी शिक्षकों को इस एक दिवसीय प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाएगा। वहीं मास्टर ट्रेनर आदम अली ने प्रशिक्षण के दौरान बताया कि किसी भी प्रकार की आपदा के लिए तत्पर रहकर निरंतर शिक्षण कार्य चलती रहे और किसी प्रकार आपदा के कारण शिक्षण कार्य प्रभावित ना हो सके। यह सुनिश्चित करने के लिए यह प्रशिक्षण काफी आवश्यक है। प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि आपदाएं दो प्रकार की होती है जिसमें प्राकृतिक आपदा एवं कृत्रिम आपदा होती है। यह हमारी लापरवाही के कारण होता है। जिसमें विभिन्न प्रकार के महामारी, बाढ़, तूफान, आगलगी, बिजली का गिरना, चक्रवात, सुखा, ओलावृष्टि, विद्युतघात, सर्पदंश आदि आपदाएं शामिल है। उन्होंने कहा की उक्त आपदाओं के कारण शिक्षण व्यवस्था भी प्रभावित होती है और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

आंगनबाड़ी केंद्रों पर लगाये जायेंगे डस्टवीन, प्रत्येक दिन होगा कचरा का उठाव

डीएम ने बैठक के दौरान सभी सीडीपीओ को दिया निर्देश

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

अब सभी आंगनबाड़ी केंद्रों पर डस्टवीन लगाये जायेंगे। वही प्रत्येक दिन आंगनबाड़ी केंद्र से भी कचरा का उठाव किया जायेगा। अब तक स्वच्छ भारत मिशन एवं लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत गांव के प्रत्येक घर से गीला एवं सुखा कचरा का उठाव होता है, लेकिन अब आंगनबाड़ी केंद्र से भी कचरा का उठाव होगा। इसको लेकर जिला समन्वय समिति के बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी ने सभी सीडीपीओ को निर्देश दिया कि अपने-अपने क्षेत्र के आंगनबाड़ी केंद्रों से डस्टवीन की उपलब्धता की रिपोर्ट मांगे। वही जिस किसी केंद्र पर डस्टवीन नहीं है। वहां स्वच्छता कोषांग से समन्वय स्थापित कर डस्टवीन उपलब्ध कराया जाय। साथ ही प्रत्येक दिन कचरा का उठाव भी कराया जाय, ताकि आंगनबाड़ी केंद्रों पर व्यापक साफ-सफाई रखा जा सके। वही डीडीसी अभिषेक रंजन के द्वारा स्वास्थ्य विभाग से सात दिनों के अंदर गर्भवती, धात्री महिलाओं, बच्चों के टीकाकरण, अतिकुपोषित बच्चों की रिपोर्ट मुहैया कराये जाने का निर्देश दिया गया। वही सभी आंगनबाड़ी केंद्रों पर नल-जल योजना के तहत स्वच्छ जल मुहैया कराया जायेगा। डीडीसी ने कहा कि जिस किसी केंद्र पर नल का जल नहीं पहुंचा है। वहां शीघ्र ही पहुंचाया जायेगा। बैठक में डीपीओ आइसीडीएस सीमा कुमारी, सहित सभी सीडीपीओ शामिल थी

सारण स्नातक व शिक्षक निर्वाचन के मतदान केंद्रों पर लगी मुहर

राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की सहमति से लिया गया निर्णय

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

सारण स्नातक व शिक्षक निर्वाचन के मतदान केंद्रों के निर्धारण पर बुधवार को मुहर लग गयी। सारण स्नातक व शिक्षक निर्वाचन के सहायक निवार्ची पदाधिकारी-सह डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी की अध्यक्षता में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की बैठक हुई। जिसमें मतदान केंद्रों के गठन से संबंधित चर्चा की गयी। बैठक में उपस्थित राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों से सभी प्रखंडों में प्रस्तावित मतदान केंद्रों के गठन पर विचार विमर्श किया गया। जिसमें गोपालगंज जिला अंतर्गत सभी प्रखंडों में मतदान केंद्रों का गठन किया जाना है। साथ ही शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के लिए अंचल कार्यालय में मतदान केंद्रों के गठन पर चर्चा की गई। उप निर्वाचन पदाधिकारी डॉ शशि प्रकाश राय के द्वारा बताया गया कि अगर सारण स्नातक और शिक्षक निर्वाचन का चुनाव एक साथ होता है, तो सारण स्नातक के लिए प्रखंड कार्यालय में मतदान केंद्र बनेगा। वही शिक्षक निर्वाचन को लेकर अंचल कार्यालय में मतदान केंद्र बनाया जायेगा। वही बैकुंठपुर, बरौली, गोपालगंज, कुचायकोट और हथुआ प्रखंड में सारण स्नातक के अधिक मतदाता होने के कारण भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर एक-एक सहायक मतदान केंद्रों की स्थापना की जा रही है। वहीं शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के लिए कुल 14 मतदान केंद्रों का गठन किया जाएगा। बैठक में उपस्थित सभी राजनैतिक दलों के किसी प्रतिनिधि द्वारा कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराया गया और सर्वसम्मति से मतदान केंद्रों के गठन संबंधी प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त की गयी। बैठक में भाजपा से मनीष किशोर नारायण, राजद से इम्तेयाज अली भूटो, कांग्रेस से जुल्फिकार अली भूट्टो, शिव नारायण बारी आदि उपस्थित थे।

पदाधिकारी के साथ मारपीट और सरकारी काम में बाधा डालने के आरोप में बीडीओ ने दर्ज कराया प्राथमिकी

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। खड़गपुर अनुमंडल की जनता अब जाग चुकी है और भ्रष्ट पदाधिकारियों को जूते चप्पल से मारपीट की घटना को जन्म दे रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार खड़गपुर थाने में प्रखंड विकास पदाधिकारी सत्यनारायण पंडित द्वारा एक प्राथमिकी खड़कपुर थाना में दर्ज कराया है। जिसमें वरुण कुमार यादव पिता सीताराम यादव ग्राम लोहची थाना श्यामपुर में आवेदन देकर कहा है कि लिपिक के कक्ष में घुसकर वरुण कुमार यादव 10 अज्ञात ने गाली-गलौज और मारपीट किया तथा मेरा मोबाइल्स छीनने की कोशिश की और लिपिक के टेबल पर रखे सरकारी दस्तावेज को पाटकर नष्ट कर दिया श्री पंडित ने सरकारी काम में बाधा डालने और मारपीट गाली-गलौज करने की प्राथमिकी दर्ज करने की थाना प्रभारी से गुहार लगाई है। खड़गपुर थाना प्रभारी नीरज कुमार ने बताया कि आवेदन प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा दिया गया है। प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और प्राथमिकी अभियुक्तों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई कर रही है। थाना अध्यक्ष ने बताया कि घटना मंगलवार के करीब 11 बजे के 40 मिनट पर प्रखंड कार्यालय परिसर में हुई है। पुलिस के अनुसार प्रखंड विकास पदाधिकारी सत्य नारायण पंडित अंचल अधिकारी संतोष कुमार सिंह प्रखंड कल्याण पदाधिकारी, प्रखंड कृषि पदाधिकारी ने आरोपित को पकड़कर थाना के हाजत में लाकर बंद करवाया है।

तारापुर में पहले दिन कदाचार मुक्त संपन्न हुआ इंटरमीडिएट की परीक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट की परीक्षा तारापुर के आर एस कॉलेज, प्लस टू आदर्श उच्च विद्यालय, एवं महावीर चौधरी प्लस टू उच्च विद्यालय शांति नगर, परीक्षा केंद्र पर पूरी तरह से कदाचार मुक्त परीक्षा संचालित कराया गया । गौरतलब है कि सभी तीन परीक्षा केंद्रों पर दोनों ही पाली में लगातार अपनी नजर रख रहे अनुमंडल पदाधिकारी रंजीत कुमार ने बताया कि दोनों पाली को मिलाकर आर एस कॉलेज परीक्षा केंद्र पर 538, आदर्श उच्च विद्यालय में 902, एवं महावीर चौधरी प्लस टू उच्च विद्यालय, परीक्षा केंद्र पर 342 कूल 1782 छात्र एवं छात्राएं परीक्षा में भाग लिया है। आगे कहा कि सभी परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में 144 धारा लागू किया गया है। सभी तीन परीक्षा केंद्रों के लिए सुपर दंडाधिकारी के रूप में अपर अनुमंडल पदाधिकारी वसीम अकरम, प्रखंड विकास पदाधिकारी संजय कुमार एवं बैंक से प्रश्न पत्र निकालने के लिए अंचलाधिकारी बंदना कुमारी सहित पुलिस बल तैनात किया गया है। वहीं आदर्श परीक्षा केंद्र के रूप में प्लस टू आदर्श उच्च विद्यालय को बनाया गया है। सभी परीक्षा केंद्रों पर सुबह 8:00 बजे से ही छात्र एवं छात्राओं की भीड़ परीक्षा देने को लेकर जुटने लगी। मौके पर तैनात सुपर दंडाधिकारी, केंद्राअधीक्षक एवं परीक्षा केंद्र पर तैनात शिक्षक के द्वारा पूरी जांच पड़ताल के बाद छात्र एवं छात्राओं को परीक्षा केंद्र के भीतर प्रवेश मिला।

गोपालगंज में जेईई मेन की परीक्षा दे रहे दो मुन्ना भाई गिरफ्तार

दानापुर व जहानाबाद के निवासी है दोनो परीक्षार्थी, दुसरे छात्र की जगह देने आये थे परीक्षा

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) द्वारा संचालित जेइइ मेन 2023 के सेशन वन की परीक्षा के छठे दिन गोपालगंज सेंटर पर दूसरे छात्रों के बदले परीक्षा देने पहुंचे दो फर्जी परीक्षार्थियों को दबोच लिया गया। पटना के दानापुर व जहानाबाद के रहने वाले फर्जी परीक्षार्थियों को हिरासत में लेकर पुलिस जांच कर रही है। पुलिस को आशंका है कि ये सॉल्वर गैंग के सदस्य है, जो ठेका लेकर दूसरे परीक्षार्थियों के बदले मुन्ना भाई बनकर परीक्षा देते हैं। बता दें कि शहर के कॉलेज रोड में स्थित जनक सुपर मार्केट के कंप्यूटर संस्थान अपेक्स को परीक्षा केंद्र बनाया गया है। यहां बेगूसराय जिले के मुंगेरगंज थाने के सोनार पट्टी के रहने वाले रवि रौशन कुमार के पुत्र रिषभ राज के बदले में जहानाबाद के 42 ए कुंती नगर के रहने वाले कुंदन मिश्रा का पुत्र रवि मिश्रा तथा पटना बेली रोड के मनोज कुमार के पुत्र आर्यन आर्या के बदले दानापुर, पटना के आनंद बाजार के सुमित कुमार के पुत्र मनोज कुमार परीक्षा देने पहुंचे थे। जब इनकी जांच-पड़ताल की गई तो ये लोग असहज हो गए। इसी दौरान पूछताछ में दोनों को केंद्राधीक्षक आनंद अग्रवाल ने पकड़ लिया। उसके बाद पूछताछ के बाद नगर थाने की पुलिस को सौंप दिया गया। केंद्र संचालक की ओर से लिखित तहरीर भी पुलिस को दी गयी है। इस संबध में एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि पुलिस दोनों फर्जी छात्रों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। आगे जांच होगी कि इनका किन लोगों से तार जुड़े थे। ये दूसरे के बदले क्यों परीक्षा देने आए थे। मुन्ना भाइयों की गिरफ्तारी के बाद एक बार फिर जेईई मेन परीक्षा को लेकर केंद्र पर सख्ती बढ़ा दी गई है।

संक्षिप्त खबरें

बीपीएससी का दूसरा बैच हुआ शुरु

आरा। अनुसूचित जाती एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग, बिहार सरकार, पटना द्वारा संचालित प्राक परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र ,भोजपुर में इढरउ का दूसरा बैच प्रारंभ किया गयो इस मौके पर नोडल पदाधिकारी राज लक्ष्मी कुमारी , अर्थशास्त्र के पूर्व विभागाध्यक्ष सह डीन राघवेंद्र प्रसाद सिंह , परीक्षा नियंत्रक प्रोङ्क अनवर इमाम , डॉ. नरेंद्र प्रताप पालित, संतोष कुमार , सुधांशु शेखर, राज कुमार सिंह, संजय कुमार गुप्ता, मुन्ना कुमार सिंह, ललन कुमार, ईशरार अंसारी,आदि लोग उपस्थित होकर छात्रों का मनोबल बढाया तथा बच्चों को अपने भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए प्रेरित कियो इस केंद्र पर टोटल 60 सीट है जिसमे 30 छात्र उपास्थित्त थे।

जीआरपी आरा ने गिरा हुआ मोबाइल को बरामद कर किया सुपुर्द

आरा। रेलवे स्टेशन पर एक यात्री का मोबाइल ट्रेन पकड़ने के क्रम में भीड़भाड़ के कारण गिर गया था जिसे थाना में लाकर जांच पड़ताल कर सूचना दी गई तत्पश्चात प्रिंस कुमार पिता दीनानाथ गुप्ता जज बाजार बिहिया थाना बिहिया जिला भोजपुर के आने पर उचित पहचान पर उनका रेडमी कंपनी का टच स्क्रीन मोबाइल सिम सहित सही सलामत सुपुर्द किया गया।

विकासोन्मुखी बजट : महेश जालान

पटना। प्रस्तुत किए गए केंद्रीय बजट को राष्ट्रीय स्तर पर एक विकासोन्मुखी बजट कहा जा सकता है जिसमें हर वर्ग को कुछ न कुछ मिला है। वरिष्ठ नागरिकों की जमा योजना की उच्चतम सीमा दुगनी कर दी गई है तो महिलाओं के लिए बचत पत्र योजना शुरू की गई है। नए उद्योगों को एक कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है किसानों को भी उपलब्ध कराए जाने वाले ऋण की राशि में वृद्धि की गई है। पेंशन धारी वर्ग को सुविधा प्रदान की गई है तो आम आदमी को राहत देते हुए सात लाख तक की आय पर करदेयता शून्य कर दी गई है जो स्वागत योग्य है। देश में 157 मेडिकल कॉलेज और 50 एयरपोर्ट देना विकास को रफ्तार देगा।

झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले बच्चों के बीच दौड़ प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

मुंगेर सदर। मंगलवार को मुंगेर रेलवे स्टेशन के पास दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन सामाजिक कार्यकर्ता आमिर उल इस्लाम के द्वारा किया गया। इस दौड़ प्रतियोगिता में झुग्गी झोपड़ी के बच्चों के बीच 200 मीटर लगाया। दौड़ प्रतियोगिता सामाजिक कार्यकर्ता आमिर उल इस्लाम बच्चों के बीच शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद प्रतियोगिता भी लगातार कराते आ रहे हैं। आज मुंगेर स्टेशन के पास बच्चों के लिए 200 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया कुल 20 बच्चों ने भाग लिया फाइनल में 7 बच्चों ने हिस्सा लिया- प्रथम स्थान रोहन मांझी, द्वितीय स्थान प्रीति कुमारी, तृतीय स्थान सोनी कुमारी को मिला आमिर ने कहा ऐसे बच्चे नशा एवं सलूशन की दुनिया में कदम रखने वाले थे लेकिन इन्हें शिक्षा एवं खेलकूद कराकर कुछ हद तक सफलता मिली है।

मुंगेर के डीएओ हुए सेवानिवृत्त दी गई भावभीनी विदाई, समारोह में उपस्थित हुए अधिकारी एवं वैज्ञानिक

मुंगेर। मुंगेर के जिला कृषि पदाधिकारी ललिता प्रसाद मंगलवार को सेवानिवृत्त हो गए। उनकी सेवानिवृत्ति के मौके पर जिला कृषि विभाग द्वारा आयोजित विदाई समारोह का आयोजन किया गया। विदाई समारोह में उन्हें कृषि के विभिन्न विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। मौके पर उपस्थित अधिकारियों ने उनके कार्यकाल के दौरान उनके साथ कि अपने अनुभव को याद करते हुए उन्हें आगे के जीवन के लिए शुभकामनाएं दी।

देश के आम बजट को भाजपा ने सभी वर्गों के लिए कल्याणकारी बताया

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। देश के वितमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद मे पेश किए गए बजट को भारतीय जनता पार्टी भोजपुर के नेताओं और कार्यकताओं ने सराहना करते हुए कहा कि आम बजट अगले 25 वर्ष मे 'हमारा भारत विकसित भारत' के लक्ष्य को पूरा करने वाला बजट है।

भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. प्रेम रंजन चतुवेर्दी ने बजट को गरिबो,किसानों, युवाओं, महिलाओं, छात्रो सहित सभी वर्गों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बताया।उन्होने बजट की सराहना करते हुए कहा कि यह बजट मध्यमवर्गीय लोगो के लिए सुनहला पल लेकर आया है।बजट मे आयकर मे छूट की सीमा सात लाख कर वितमंत्री ने सभी को खुश कर दी। किसानों के बजट मे पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन पर ध्यान देते हुए ऋण लक्ष्य को 20 लाख करोड़ रुपया कर दिया गया है। वैकल्पिक उर्वरकों को बढावा देने के लिए पीएम प्रणाम योजना की शुरूआत और गोबरधन योजना के तहत 500 नए संयत्रों की स्थापना से किसानों को भी लाभ प्राप्त होगा।

बजट मे युवाओं के रोजगार पर विशेष ध्यान देते हुए 'आत्मनिर्भर भारत' की तरफ आगे बढते हुए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 की शुरूआत की की गई, जिससे उनको अंतरराष्ट्रीय अवसरों के लिए कौशल प्रदान करने हेतु 30 स्किल डंडिया सेक्टर से युवा और छात्र आत्मनिर्भर बनेंगे।

बजट मे शिक्षा के क्षेत्र मे भी वितमंत्री ने ध्यान देते हुए 740 एकलव्य माँडल आवासीय विद्यालयो मे 3 वर्षो के लिए 38000 शिक्षको की भर्ती सराहनीय है। बच्चो और किशोरो के लिए राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय सचमुच मे एक अनमोल प्राप्ति है। 2014 के वजट मे 157 मेडिकल काँलेजो के स्थापना के बाद अब उन सभी जगह नर्सिंग काँलेज खोलने की सरकार का फैसला रोजगारपरक है। आम बजट मे गरिबो के लिए बहुत से प्रावधान किए गए है जिसमे अंत्योदय योजना के तहत मुफ्त खाद्यान की आपूर्ति एक वर्ष के लिए बढाकर सरकार ने उनकी सेवा करने का काम की है।प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 2 लाख करोड़ रुपए का वहन कल्याणकारी है। जिलाध्यक्ष ने कृषि से जुड़े स्टार्टअप के लिए युवा उद्योमियो को प्रोत्साहित देने के लिए सरकार की प्रशंसा रते हुए कहा कि इससे कृषि और रोजगार दोनो मे वृद्धि होगी जिससे आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त होगा।

इसी प्रकार बजट मे महिलाओं के लिए महिला सम्मान बचत पत्र योजना की शुरूआत महिलाओं के सम्मान और सशक्त बनाने के लिए सरकार की चिन्ता को दशार्ता है। यही नही प्रधानमंत्री मोदी जी सबका साथ सबका विकास के मूलमंत्र को धारण करते हुए बुजुर्गो को भी बजट मे स्थान देते हुए उनके खाता स्कीम की सीमा 4.5 लाख से 9 लाख कर उनको सम्मान दिया। भाजपा नेताओं ने बजट 2023 की 7 प्राथमिकताएँ गिनाते हुए कहा कि यह बजट समावेशी विकास, अंतिम छोर तक पहुंचना, बुनियादी ढांचा और निवेश,क्षमत को उजागर करना, ग्रीन ग्रोथ,युवा शक्ति और वितीय क्षेत्र है।

बजट को सभी वर्गो का कल्याणकारी और आत्मनिर्भर भारत बनाने वाले बजट बताने वाले मे जिला उपाध्यक्ष शंभु चौरसिया, कौशल यादव,नरेन्द्र तिवारी, लव पांडेय,प्रतिमा चंद्रवंशी, आदित्य विजय प्रताप, महामंत्री श्रीभगवान सिंह,अभिषेक राय,मदन स्नेही,मंत्री वंदना राजवंशी, पुनम कुशवाहा, कृष्णा देवी,वरूण सिंह,पवन सिंह,ध्रुव राय, मीडिया प्रमुख संजय कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष दीपक सिंह,सचिन कुमार, प्रवक्ता नवीन प्रकाश,सुरेन्द्र सागर,राजीव तिवारी, धीरज सिंह,आईटी संयोजक कुमार गौतम,सभी मोर्चा, प्रकोष्ठ अध्यक्ष,प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ,जनप्रतिनिधि ,वरिष्ठ कार्यकर्ता थे।

बजट ने देश के वरिष्ठ नागरिकों को किया निराश : वरिष्ठ नागरिक संघ

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम।वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा वुधवार को लोकसभा में पेश की गई बजट को नेशनल सीनियर सिटीजन एसोसिएशन ने देश के लगभग 18 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों के साथ धोखा एवं निराशाजनक बताया है। बजट पर प्रतिक्रिया देते हुए संगठन के राष्ट्रीय महासचिव रामायण पांडेय "एलौन" ने कहा की बजट में वरिष्ठ नागरिक सेविंग स्कीम की लिमिट 15 से बढ़ाकर 30 लाख तथा सेविंग अजाउंट की साढ़े चार लाख से बढ़ाकर 9 लाख करने का नाटक किया गया है,कमरतोड़ महंगाई से मिडिल क्लास से नीचे के बुजुर्ग पहले से ही त्रस्त है तो वे बचत क्या खाक करेंगे? जो सरकार के इस लोकलुभावन स्किमो में रखेंगे व उसका फायदा लेंगे। कहा केंद्र सरकार बुजुर्गो के साथ लगातार धोखा कर रही है।जहा दुनिया के अन्य देश अपने वरिष्ठजनों को अतिरिक्त सुविधाएं प्रदान कर रहे है वही हमारी सरकार पहले से मिलने वाली सुविधाओं को बन्द कर पैसा कमा रही है,उनकी सुविधाओं पर होने वाली खर्च को बोझ बता रही है।कहा की कोरोना के बहाने से रेल किराया रियायत को बन्द कर दिया गया।दुबारा बहाल करने के लिए टाल-मटौल किया जा रहा है।पीएम एवं रेलमंत्री को कई बार मांगपत्र सौपकर रियायत बहाली की मांग की गई थी,उम्मीद जताई जा रही थी की सरकार इस बजट में किराया रियायत बहाल करने की घोषणा करेगी लेकिन सरकार की नीयत ठीक नही है।हम वरिष्ठ नागरिकों एवं पेंशनरों को आयकर से मुक्त रखने की मांग कर रहे थे इसपर भी कोई घोषणा नही की गई।

गीला कचरा से जैविक खाद बनने में आएगी तेजी : इंदु देवी

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आरा नगर निगम क्षेत्र में निकलने वाले गीले कचरा उठाव हेतु नगर निगम द्वारा क्रय किये गये ऑटोटीपर डंफर का महापौर इंदु देवी ने विधिवत पुजा कर कचरा उठाव हेतु परिचालन करवाया गया।

इस अवसर पर महापौर इंदु देवी ने बताया कि गिला कचरा से खाद बनाने का कार्य नगर निगम के स्तर से किया जा रहा है। इसके लिए सब्जी मंडी बाजार समिति से गीला कचरा लाने हेतु वाहन नहीं था। इस वाहन के आ जाने से ससमय कचड़ा उठाव होगा साथ ही जैविक खाद बनाने की गति भी तेज हो जाएगा और सफाई भी रहेगा। वही नगर आयुक्त निरोज कुमार भगत ने कहा कि नगर के स्वच्छता व सौंदयकरण पर नगर निगम प्रयासरत है और कचरे का निष्पादन हेतु जैविक खाद निर्माण एक मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर सीटी मैनेजर ओपी, महापौर प्रतिनिधि व समाजसेवी प्रेम पंकज ललन , प्रेम मिश्रा, पर्यावरणप्रेमी आनंद कुमार , राजेन्द्र सिंह, मुन्नु सिंह, विशाल सिंह, आदित्य सिंह आदि,सुमित कुमार, शुभम कुमार, विकास कुमार, संजीव पांडेय , सहित निगम के कर्मी उपस्थित थें।

मांगों को ले सीनियर सिटीजन एसोसिएशन ने किया सड़क मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

भभुआ।राज्य में सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत दिए जा रहे वृद्धापेंशन ,विधवा व दिव्यांग पेन्शन की राशि चार सौ रुपये से बढ़ाकर दो हजार करवाने,वरिष्ठ नागरिकों की बन्द की गई रेल किराया रियायत को पुर्व की भांति पुनः बहाल कराने के लिए नेशनल सीनियर सिटीजन एसोसिएशन ने शहर में सड़क मार्च कर सम्बंधित अधिकारियों को मांगपत्र सौपा।संगठन के बैनर तले सैकड़ो वरिष्ठ नागरिकों ने जगजीवन स्टेडियम से जुलूस निकाल प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी को मांगपत्र सौपकर मुख्य बाजार में अपनी मांगो के समर्थन में नारे लगाते हुए प्रदर्शनकारियों का हुजूम समहणालाय पहुचा एवं जिलाधिकारी को मांगपत्र सौपा।

कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष माया पांडेय ने कहा की वरिष्ठ नागरिकों एवं पेंशनरों की पांच सुत्री लंबित मांगों को पुरा कराने के लिए आगामी 16 मार्च को देश के वरिष्ठ नागरिकों के साथ नई दिल्ली में प्रधानमंत्री के समक्ष प्रदर्शन किया जाएगा।वही 17 मार्च को आठवाँ ऐतिहासिक सम्मेलन आयोजित की जाएगी।उन्होंने अधिक संख्या में दिल्ली पहुचने का आह्वान बुजुर्गो से किया।संघ के राष्ट्रीय महासचिव रामायण पांडेय एलौन ने कहा की वर्तमान महंगाई में चार सौ रुपया पेंशन काफी कम है।दिल्ली, हरियाणा,गोवा सहित अन्य राज्यों में दो से तीन हजार रुपये बुजुर्गो को प्रतिमाह पेंशन दिया जा रहा है। हम बिहार में भी पेंशन राशी बढ़वाने के लिए हम हरसंभव प्रयास कर रहे है।

कहा की वरिष्ठ नागरिकों की बन्द की गई रेल किराया पुनः बहाल करने में सरकार बहाने बनाकर टाल-मटौल कर रही है।संघ की मुख्य मांगों में वरिष्ठ नागरिकों की बन्द की गई रेल किराया रियायत बहाल कराने, वृद्धापेंशन की राशी दो हजार प्रतिमाह करने,शहर के चौक चौराहों पर मूत्रालय एवं शौचालय का निर्माण कराने,वृद्धापेंशन योजना में छूटे हुए बुजुर्गो का नाम जोड़वाने तथा उनका अंगूठा सत्यापन के लिए गावों में कैम्प लगाने,जिले के सभी थानों में सीनियर सिटीजन सेल का गठन कराना,जिला मुख्यालय सहित सभी प्रखण्ड मुख्यालयों में वृद्धाश्रम का निर्माण कराना शामिल है।कार्यक्रम में सचितानंद सिहं, माया पांडेय, आर.पी.एलौन, धर्मराज पाठक,वरिष्ठ पत्रकार सुनील तिवारी,शिवमूरत सिहं,रामजी सिह,सूर्यनाथ सिह,अशोक श्रीवास्तव,रंगीलाल गुप्ता,जयकुमार सिह,वशिष्ठ चौबे, रंग बहादुर पांडेय, राजकिशोर त्रिपाठी, रामसोहर राम,रामजी राम,सीताराम सिहं,देवी बसन्ती त्रिपाठी सहित,डॉ. गुप्तेश्वर प्रसाद,अनिल तिवारी,रामचंद्र चंद्रवंशी, भगवत सिह,बिशम्भर तिवारी,मुन्ना तिवारी,गोधन सिहं,जयकुमार,अयोध्या सिह,शिवप्रश्नन सिहं,भरत साह, रामसागर पांडेय,शिवपूजन सिह,अनिल पांडेय,सरस्वती कुँवर,मूसा देवी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

भोजपुर में निगरानी विभाग ने पंचायत न्याय सचिव को दस हजार घूस लेते रंगे हाथ किया गिरफ्तार

न्याय पंचायत सचिव ने जमीन मोटेशन के नाम पर दस हजार रुपये घूस की थी मांग

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले में निगरानी विभाग की टीम ने एक न्याय पंचायत सचिव को दस हजार रुपये घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। निगरानी विभाग ने उसे जगदीशपुर प्रखंड के जगदीशपुर थाना क्षेत्र के जगदीशपुर वार्ड नंबर 4 स्थित उसके कार्यालय से गिरफ्तार किया है। जानकारी के अनुसार गिरफ्तार न्याय पंचायत सचिव जगदीशपुर थाना क्षेत्र के हेतमपुर गांव निवासी मंतोष कुमार राम है। वह संविदा पर न्याय पंचायत सचिव के पद पर कार्यरत था एवं जगदीशपुर वार्ड नंबर 4 में किराये के रूम में अपना कार्यालय चलाता था। बताया जाता है कि जगदीशपुर थाना क्षेत्र के जगदीशपुर वार्ड नंबर 17 निवासी मो.इमरान ने सवा 16 डिसमिल जमीन का मोटेशन कराने न्याय पंचायत सचिव के पास गए थे। जिसको लेकर न्याय पंचायत सचिव मंतोष कुमार राम द्वारा उनसे दस हजार रुपये घूस की मांग की गई थी। जिसके बाद मो.इमरान अली द्वारा इसकी शिकायत निगरानी विभाग के पटना कार्यालय में की गई। जिसके बाद निगरानी विभाग द्वारा इसकी जांच की गई और जांच के दौरान मामला सत्य पाया गया। जिसके बाद निगरानी विभाग की टीम द्वारा एक टीम का गठन किया गया। इसके बाद रणनीति के तहत निगरानी की टीम ने बुधवार की दोपहर जगदीशपुर वार्ड नंबर 4 स्थित उसके कार्यालय से दस हजार रुपये घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। इसके पश्चात निगरानी विभाग की टीम उसे अपने साथ पटना ले गई। वहीं इस मामले में निगरानी विभाग के डीएसपी आलोक कुमार ने बताया कि जगदीशपुर निवासी मो.इमरान अली से दाखिल खारिज के संबंध में रिश्वत की मांग की गई थी। जिसके बाद मोहम्मद इमरान अली द्वारा इसकी शिकायत कुछ दिन पूर्व निगरानी विभाग पटना में की गई थी। जिसके बाद निगरानी थाना ने इसकी जांच कराई और सत्यापन में इनका आरोप सत्य पाया गया। जिसके बाद मेरे नेतृत्व में धावा दल का गठन किया गया और इनको दस हजार रुपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया। उन्होंने बताया कि आरोपी अनुबंध पर न्याय पंचायत सचिव के पद पर कार्यरत था। वह राजस्व कर्मचारी एजेंट के रूप में काम कर रहा था और राजस्व कर्मचारी के तरफ से पैसा लेने का काम करता था। वही निगरानी विभाग में गिरफ्तार करने आए टीम में डीएसपी आलोक कुमार,गोपाल कृष्णा,इंस्पेक्टर मिथिलेश कुमार जसवाल, आसिफ इकबाल मेहंदी, शालिग्राम कुमार,एएसआई शैलेंद्र शुक्ला,जय प्रकाश,मिथिलेश कुमार सिंह एवं सत्यापन करता कृष्ण मुरारी शामिल थे।

भोजपुर में ट्रैक्टर ने पैदल जा रहे युवक को रौंदा, मौत

पुलिस ने शव का सदर अस्पताल में कराया पोस्टमार्टम

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। आरा-अरवल मुख्य मार्ग पर जिले के उदवंतनगर थाना क्षेत्र के सरथुआ गांव स्थित आहर के समीप मंगलवार की देर शाम ट्रैक्टर ने पैदल जा रहे एक युवक को रौंद दिया। हादसे में उसकी मौत हो गई।

इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाने के दौरान उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। घटना को लेकर लोगों के बीच अफरा-तफरी का आलम रहा। जानकारी के अनुसार मृतक उदवंतनगर थाना क्षेत्र के सरथुआ गांव निवासी रामजी यादव का 40 वर्षीय पुत्र डिग्री यादव है। वह पेशे से किसान था एवं गांव पर ही रहता खेती किया करता था। इधर मृतक के दोस्त शंभू कुमार ने बताया कि वह मंगलवार की देर शाम अपने गांव से खरौनी गांव किसी काम से पैदल आ रहा था। उसी दौरान सरथुआ गांव स्थित आहर के समीप पीछे से आ रहे ट्रैक्टर ने उसे रौंद दिया। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जिसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया जा रहा था तभी उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। बावजूद इसके परिजन उसे आरा सदर अस्पताल ले आए जहां चिकित्सक ने देख उसे मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजनों ने इसकी सूचना टाउन थाना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही टाउन थाना पुलिस सदर अस्पताल पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम करवाया।बताया जाता है कि मृतक अपने दो भाई में छोटे थे। मृतक के परिवार में पत्नी मीरा देवी व तीन पुत्री नेहा, अमीषा,ज्योति एवं एक पुत्र अभिषेक कुमार है। घटना के बाद मृतक के घर में हाहाकार मच गया है। इस घटना के बाद मृतक की पत्नी मीरा देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

शांति मेमोरियल हॉस्पिटल को मिला टॉप परफॉर्मिंग अस्पताल का दर्जा

सीएस ने हॉस्पिटल के सीएमडी डॉ. विकास को प्रदान किया प्रशंसा सर्टिफिकेट

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर के शांति मेमोरियल अस्पताल को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत टॉप परफॉर्मिंग अस्पताल का दर्जा प्राप्त हुआ है। इसको लेकर सिविल सर्जन कार्यालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में सीएस सुरेश प्रसाद सिंह ने शांति मेमोरियल हॉस्पिटल आरा के सीएमडी डॉ. विकास सिंह को प्रशंसा सर्टिफिकेट प्रदान किया। शांति मेमोरियल अस्पताल को लगातार चौथी बार यह सर्टिफिकेट प्राप्त हुआ है। बता दें की दिल्ली से आई विशेष टीम द्वारा तकरीबन जिले के विभिन्न इलाको में जाकर निजी अस्पतालों का जायजा लिया था। इसमें टॉप परफॉर्मिंग अस्पतालों में शांति मेमोरियल अस्पताल का चयन किया गया। इस अस्पताल में 24 7 दिन मरीजो का ईलाज एवं ऑपरेशन किया जाता है। चिकित्सक द्वारा लेप्रोस्कोपिक व अन्य विधि से स्वयं ऑपरेशन किया जाता है। शांति मेमोरियल अस्पताल को प्रशंसा सर्टिफिकेट मिलने पर जिले के चिकित्सकों, बुद्विजीवियों एवं समाजसेवियों ने सीएमडी डॉ. विकास सिंह को बधाई दी है। बधाई देने वाले में सदर अस्पताल के प्रभारी उपाधीक्षक डॉ. अरुण कुमार, पूर्व उपाधीक्षक डॉ. बीके प्रसाद, आईएमए भोजपुर के डॉ. मधुकर प्रकाश, डॉ. बीके शुक्ला, डॉ. राजीव आदि है।

आरा में ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत, घर में मचा कोहराम

पुलिस ने शव का सदर अस्पताल में कराया पोस्टमार्टम

- दानापुर-पीडीडीयू रेलखंड पर आरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक के पश्चिमी साइड डाउन लाइन पर बुधवार की दोपहर घटी घटना

आरा। दानापुर-पीडीडीयू रेलखंड पर आरा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक के पश्चिमी साइड डाउन लाइन पर बुधवार की दोपहर ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई।घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। घटना की सूचना मिलते ही आरा रेल पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया। जानकारी के अनुसार मृतक चौरी थाना क्षेत्र के धनछुआं गांव निवासी स्व. बसंत राम का 36 वर्षीय पुत्र गौरीशंकर राम है।

वह दिल्ली में रहकर प्राइवेट कंपनी में काम करता था। इधर मृतका के डेरसस खूनसी देवी ने बताया कि वह दो महीने पूर्व दिल्ली से वापस गांव आए थे और आज सुबह अपने गांव से दिल्ली जाने के लिए निकले थे। उसी दौरान ट्रेन की चपेट में आने से उनकी मौत हो गई। इसके बाद आरा पुलिस द्वारा उनके पॉकेट से मिले आधार कार्ड और फोन नंबर से फोन कर इसकी सूचना मृतक के परिजनों को दी गई। सूचना पाकर मृतक के परिजन आरा सदर अस्पताल पहुंचे और पोस्टमार्टम गृह में जाकर शव को देख उसकी पहचान की।

इसके पश्चात परिजन शव को दाह-संस्कार के लिए वापस अपने गांव ले गए। बताया जाता है कि मृतक अपने दो भाई व दो बहन में सबसे छोटे थे। मृतक के परिवार में मां भगवानों देवी,पत्नी सविता देवी व दो पुत्री शिवानी,छोटी एवं एक 10 दिन का पुत्र आदर्श है। घटना के बाद मृतक के घर में कोहराम मच गया है। इस घटना के बाद मृतक की मां भगवानों देवी,पत्नी सविता देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

संग्रामपुर प्रखंड प्रमुख के चुनाव को लेकर 15 फरवरी की तारीख निर्धारित

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)।सरकार के निदेर्शानुसार नगर पंचायत संग्रामपुर के गठन के बाद नगर पंचायत में शामिल कुसमार एवं झिकुली पंचायत से निर्वाचित पंचायत प्रतिनिधियों की अधिकारिता समाप्त हो गई थी। नवगठित नगर पंचायत में शामिल झिकुली पंचायत से निर्वाचित पंचायत समिति सदस्य सुधीर कुमार दास प्रखंड प्रमुख चुने जाने के बाद से अपना कार्य कर रहे थे। नवगठित नगर पंचायत में झिकुली पंचायत के शामिल हो जाने के बाद से बतौर पंचायत समिति सदस्य इनकी अधिकारिता समाप्त हो जाने के कारण प्रखंड प्रमुख पद रिक्त हो गया था।जिससे विकास कार्य बाधित हो रहा था। इस आलोक में विशेष कार्य पदाधिकारी राज्य निर्वाचन आयोग, बिहार द्वारा संग्रामपुर प्रखंड प्रमुख के चुनाव को लेकर 15 फरवरी 2023 की तिथि निर्धारित कर दी गयी है. राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किये गये पत्र में विहित प्राधिकारी को निर्देश दिया गया है कि वे इससे संबंधित सूचना 7 फरवरी 2023 तक प्रखंड के प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों से निर्वाचित सभी सदस्यों को उपलब्ध करा दें . चुनाव को पूरी तरह स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रुप से संपन्न कराने को लेकर आयोग द्वारा जिला के अपर समाहर्ता स्तर, उप सचिव स्तर या इसके समकक्ष स्तर के अधिकारी को पर्यवेक्षक नियुक्त कर उनके नाम पदनाम एवं मोबाइल नंबर सहित सूचना चुनाव आयोग को 6 फरवरी 2023 तक उपलब्ध कराने को कहा गया है. चुनाव के दौरान विधि संधारण को लेकर पुलिस अधीक्षक मुंगेर को इसकी सूचना उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है।

चुनाव की पारदर्शिता के लिए पूरे निर्वाचन प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराकर आयोग को समय एवं तिथि के साथ चुनाव संपन्न होने के बाद आयोग को भेजने का निर्देश विहित प्राधिकारी को दिया गया है. निर्वाचन प्रक्रिया पूरी होने के बाद उसी दिन सक्षम पदाधिकारी द्वारा नव निर्वाचित प्रखंड प्रमुख को शपथ ग्रहण भी कराया जाएगा. चुनाव के दौरान राज्य गृह विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी कोविड-19 के नियमों का पालन किया जाना अनिवार्य होगा. पत्र के आलोक में विहित प्राधिकारी को तत्काल चुनाव की कार्यवाही सुनिश्चित करते हुए इसकी सूचना आयोग को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है।

मोबाइल इस्तेमाल पर ध्यान दे लडकिया : महिला थानाध्यक्ष

गया।महिला थाना कि थाना अध्यक्ष रवि रंजना कुमारी के द्वारा राजीव रिजनिंग कोचिंग सेंटर लाइन के पास पुलिस लाइन के पास साइबर जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया है। पुलिस मुख्यालय के द्वारा प्रत्येक महीने के पहले बुधवार को साइबर जागरूकता अभियान का आयोजन प्रत्येक थाने में किया जाता है।इस अवसर पर राजीव रीजनिंग कोचिंग सेंटर के संचालक डायरेक्टर राजीव कुमार एवं महिला थाना की थानाध्यक्ष रवि रंजना कुमारी, टेक्निकल सेल गया के एक्सपोर्ट एसआई ददन कुमार एवं साइबर एक्सपर्ट दीपक कुमार गुप्ता मौजूद थे।इस अवसर पर राजीव कुमार संचालक राजीव रीजनिंग कोचिंग सेंटर ने सभा का शुरूआत तीनों अतिथि गणों को अंग वस्त्र प्रदान कर शुरूआत की गई है।उसके बाद महिला थानाअध्यक्ष रवि रंजना के द्वारा साइबर क्राइम के बारे में विस्तार से बताया गया है।उन्होंने बताया कि किस प्रकार हम आए दिन साइबर फ्रॉड के शिकार होते हैं किस प्रकार युवा ना चाहते हुए भी अपराधिक गतिविधियों में फंस जाते हैं।और अपराध के शिकार हो जाते हैं उन्होंने बताया कि खासकर युवतियों को अपने मोबाइल में किसी एप्स को लोड करने से पहले कौन कौन सी सावधानियां बरतनी चाहिए साथ ही यह भी बताया कि किसी के इमोशन में आकर अपने आपत्तिजनक तस्वीर नहीं खींचवाय वैसा कोई भी तस्वीर अपने फोन में ना रखें जिसे सार्वजनिक रूप से दिखाया नहीं जा सके।

इसके साथ ही युवाओं को जागरूक करते हुए बताया कि आईटी एक्ट के तहत दोष सिद्ध हो जाने पर अपराध सिद्ध हो जाने पर पहले अपराध किए जाने पर 5 वर्षो की सजा और 1000000 तक का जुमार्ना है एवं दूसरी बार गलती दोहराने पर 7 साल की सजा एवं 1000000 तक की जुमार्ना है साथ ही युवाओं को इस संबंध में भी जागृत किया गया कि अक्सर अपनी नासमझी के कारण किसी से बदले की भावना में आकर द्वेष की भावना में आकर किसी का फोटो एडिट करके उससे वायरल करना परेशान करना किस हद तक जुर्म है और इसकी क्या सजा है किसी तरह की अफवाह को फैलाना किस तरह की सांप्रदायिक भावना को ठेस पहुंचाने वाला मैसेज करने से समाज पर किस प्रकार का दुष्परिणाम होता है और अफवाह फैलाने वालों को क्या सजा मिलती है इन सब के बारे में जागृत किया गया है। वही टेक्निकल सेल गया के एक्स्पन प्रसाद ने स्टूडेंट्स को संबोधित करते हुए बताया कि अपराधी चाहे कितना भी शातिर हो पुलिस के पास वह टेक्निक है जो किसी भी प्रकार अपराधियों को पकड़ ही लेती है यानी कि अपराध करने वाले सावधान हो जाएं पुलिस के हाथ ,कानून के हाथ बहुत लंबे हैं और साथ ही यह बताया कि मोबाइल फोन से बात करके मोबाइल का नंबर डिलीट कर देना मोबाइल को फॉर्मेट कर देना या कुछ भी अपराध करके अपने मोबाइल के साथ कुछ भी छेड़छाड़ करेंगे तो पुलिस इसका पता लगा ही लेगी। इसके साथ ही दीपक कुमार गुप्ता साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट के द्वारा अपने विचारों को रखते हुए बताया गया कि किस प्रकार फेसबुक पर फेक आईडी को पुलिस 2 मिनट में बंद कर देती है और अपराधी की पहचान हो जाती है जिस प्रकार अपराधी 2 मिनट में फेसबुक अकाउंट खोल लेते हैं उसी प्रकार पुलिस दो ही मिनट में फेसबुक का अकाउंट बंद करा सकती है।

संक्षिप्त खबरें

महंगाई और बेरोजगारी से तबाह आमलोगों के संकट को दूर करने के मामले में बजट फ्लॉप -माले

मुजफ्फरपुर।भाकपा-माले जिला सचिव कृष्णमोहन ने कहा है कि केन्द्रीय बजट महंगाई और बेरोजगारी से त्रस्त आमलोगों के संकट को दूर करने के मामले में फ्लॉप साबित हुआ है। मजदूरों, किसानों व छात्र-नौजवानों के लिए बजट में कुछ भी नहीं है। शिक्षा और स्वास्थ्य के स्तर को ठीक-ठाक करने के लेहाज से भी बजट निराशा पैदा करने वाला है। उन्होंने कहा है कि बजट देश के संसाधनों को कॉरपोरेट घरानों के हवाले करने वाला तथा निजीकरण को और बढ़ाने वाला है। कुल मिला कर मोदी सरकार का यह बजट भी जनविरोधी और आमलोगों के लिए तबाही लाने वाला साबित होगा।

विक्षिप्त के नदी में डूबने से हुई मौत,यूडी केश दर्ज

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)।खड़गपुर थाना क्षेत्र के तुलसीपुर गांव के 18 वर्षीय सौरभ कुमार की मौत डंगरी नदी में डूब जाने से हो गई है. पुलिस सूत्रों ने बताया कि सौरभ कुमार विक्षिप्त मान का था नदी में नहाने के क्रम में डूब जाने से मौत हो गई है. मृतक सौरभ के पिता नरेश पाठक ने बताया कि सौरभ काफी दिनों से विक्षिप्त अवस्था में था.आज नदी नहाने के लिए डंगरी नदी में गया और डूब जाने से उसकी मौत हो गई। पुलिस ने लाश को डंगरी नदी से बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए मुंगेर भेज दिया है। पुलिस ने यूडी केस थाने में दर्ज किया है।

नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ-सह-कलश यात्रा से हुआ प्रारंभ

संग्रामपुर।प्रखंड के सरकटिया में आज से 4 दिवसीय 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ- सह- प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन किया। समारोह का आयोजन 1 फरवरी सुबह 8:00 बजे से कलश शोभायात्रा के साथ शुरू किया गया, ये कार्यकरम 4 फरवरी तक होगा।उक्त जानकारी सरकटिया है गांव के गुड्डू सिंह द्वारा दिया गया।

लाईन होटल में मिला स्टाफ का शव,परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

बोचहा।शरफुद्दीनपुर स्टाफ लाईन होटल में वहां काम करने वाले एक युवक की लाश मिली है।परिजनों ने हत्या कर दिए जाने का आरोप लगाया है।. इस घटना की खबर फैलते ही मौके पर स्थानीय लोगो की भीड़ जुट गई।. लोगों ने मामले की जानकारी पुलिस को दिया।. सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल की जांच कीजिस कमरे में युवक की लाश पाई गई उस कमरे का दरवाजा भीतर से बंद था।उसे तोड़कर पुलिस अंदर गई. फिर, शव को बाहर लाया गया।मृतक की पहचान इसी थाने के विशुनपुर जगदीश पंचायत अंतर्गत गुढमी गांव निवासी नितीश कुमार के रूप में हुई है।पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए एसकेएमसीएच भेज दिया है। मामले मे थानेदार अरविंद प्रसाद ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है।. हत्या व आत्महत्या की बिंदु पर भी जांच चल रही है। इस घटना को लेकर परिजनों ने हत्या का आरोप लगाया है।. मामले मे मृतक की मां मीना देवी ने बताया की उनका बेटा पिछले चार महीनों से 5 हजार रुपए वेतन पर होटल मे काम करता था।.

रिलायंस निप्पों लाइफ इंश्योरेंस में बेहतर प्रदर्शन करने वाली श्रीमती मंजू को एमडीआरटी सम्मान से किया सम्मानित

भागलपुर। स्थानीय एक होटल में रिलायंस निप्पॉन लाइफ इंश्योरेंस के द्वारा इंश्योरेंस में बेहतर प्रदर्शन करने वाली श्रीमती मंजू देवी को एमडीआरटी सम्मान से सम्मानित किया गया है। कार्यक्रम के दौरान रीजनल मैनेजर नितीश जयसवाल और ब्रांच मैनेजरो के द्वारा प्रशस्ति पत्र के साथ साथ मोमेंटो प्रदान करते हुए सम्मानित किया है। वहीं कंपनी को आगे अच्छा काम करने को लेकर अन्य एजेंटों को भी प्रोत्साहित किया गया। वही प्रतिभा सह सम्मान कार्यक्रम के दौरान रीजनल हेड के द्वारा लोगों को इसी तरह से काम करने की प्रेरणा दी और सभी से कहा गया है कि जो बेहतर काम करेंगे, उनको इसी तरह से कंपनी के द्वारा सम्मान दिया जाएगा।

आज से शुरू हुई इंटर की परीक्षा ,बनाए गए 67 परीक्षा केन्द्र

मुजफ्फरपुर।जिले मे आज से इंटर परीक्षा की शुरूआत हो चुकी है। वही परीक्षा के मध्य नजर जिले में यातायात सुचारू रूप से रखने को लेकर पुलिस व्यवस्था भी चुस्त-दुरुस्त रही जिले मे कुल 67 परीक्षा केंद्र बनाये गए हैं जहां 56 हजार परीक्षार्थी परीक्षा दे रहे हैं। इसमें पूर्वी क्षेत्र में 52 व पश्चिमी में 15 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। दो पालियों में परीक्षा आयोजित की गई है। प्रथम पाली सुबह 9:30 से 12:45 और दूसरी पाली 1:45 बजे से शाम 5:00 बजे तक होगी। परीक्षा को देखते हुए एसएसपी राकेश कुमार ने सभी डीएसपी और थानाध्यक्षों के साथ बैठक की। जाम की समस्या पर चर्चा की गई। इस दौरान एसएसपी ने कहा कि बुधवार सुबह सात बजे से सभी थानेदार ऑन रोड रहेंगे।

नवप्रशिक्षित शिक्षकों की वरीयता को लेकर उठाई आवाज

एनआईओएस से प्रशिक्षण प्राप्त एवं उत्तीर्ण शिक्षकों के लिए परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ ने उठाई आवाज

प्रात : किरण संवाददाता

गया.परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ के प्रदेश कार्यकारी संयोजक नवनीत कुमार और प्रदेश संगठन महामंत्री शिशिर कुमार पांडेय ने मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री और शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव को पत्र लिखकर नव प्रशिक्षित शिक्षकों की वरीयता के निर्धारण हेतु राज्य से जिलों को स्पष्ट निर्देश जारी करने की मांग की है।

पत्र के माध्यम से कहा गया है कि राज्य के अप्रशिक्षित कार्यरत शिक्षकों को विभाग द्वारा प्रशिक्षित कराया गया। जिसके अंतर्गत एनआईओएस के माध्यम से बड़ी संख्या में शिक्षक प्रशिक्षित हुए। विभिन्न जिलों में पदाधिकारियों द्वारा शिक्षकों को यह बताया जा रहा है कि वह ऐसे शिक्षक जिनका परीक्षाफल 31 मार्च 2019 के उपरांत प्रकाशित हुआ है उन्हें नवनियुक्त शिक्षक मानते हुए उनके पे इंडेक्स में कटौती की जाएगी। पत्र के माध्यम से कहा गया है कि इनमें अधिकांश शिक्षक कई वर्षों से कार्यरत हैं। एनआईओएस का प्रशिक्षण फरवरी माह में ही पूरा हो चुका था एवं इसकी परीक्षा का आयोजन भी 31 मार्च 2019 के पूर्व हो चुका था। ऐसी स्थिति में परीक्षाफल प्रकाशन में हुए विलंब का खामियाजा निर्दोष शिक्षकों को भुगतना पड़ सकता है।

वहीं प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने मांग किया कि सभी जिलों के डीईओ एवं डीपीओ को राज्य द्वारा स्पष्ट निर्देश जारी किया जाय ताकि शिक्षकों के हितों की रक्षा हो सके एवं एनआईओस से प्रशिक्षित शिक्षक भयमुक्त एवं तनावमुक्त होकर विद्यालय मे अपने दायित्वों का निर्वहन कर सके।

घोर आर्थिक संकट का नकली प्रतिरूप है यह आम बजट : एसयूसीआई कम्युनिस्ट

प्रात :किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर आफ इण्डिया (कम्युनिस्ट)केंद्रीय कमेटी ने आम बजट 2023-24 को घोर आर्थिक संकट का नकली प्रतिरूप बताया है। एसयूसीआई (सी) ने 2023-24 के बजट को असलियत को छिपाने के लिए अर्थहीन शब्दजाल से भरे एक अन्य नकली दस्तावेज करार दिया है।पार्टी की केन्द्रीय कमिटी के कार्यालय सचिव स्वप्न घोष द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में एसयूसुआई कम्युनिस्ट के महासचिव प्रभास घोष कहा है की जैसा कि पूवार्नुमान लगाया गया था, बजट 2023 देश में व्याप्त बढ़ते घोर आर्थिक संकट का एक नकली प्रतिरूप है, जिसका खामियाजा लगातार करोड़ों मेहनतकश लोगों को भुगतना पड़ रहा है। कुछ 'फील-गुड' आवंटनों में मामूली वृद्धि या व्यक्तिगत करों में सांकेतिक उपहार या 80 करोड़ लोगों के लिए एक और वर्ष के लिए मुफ्त राशन बनाए रखने की शेखी बघारने वाले दावे (यह इस बात की पुष्टि करता है कि अधिकांश लोग गरीब हैं), जिसे पीएम मोदी ने चुनाव से कुछ दिन पहले मुफ्त की 'रेवड़ियाँ' करार देकर उपहास किया था, हद दर्जे का छलावा हैं, क्योंकि पिछले चार वर्षों में 30 प्रतिशत बढ़ चुकी महंगाई की तुलना में दरें बहुत कम हैं और इस तरह लोगों को कोई राहत नहीं, बल्कि पीड़ा अधिक दे रही है। भाजपा के वित्त मंत्री का पूरा ध्यान निवेश को बढ़ावा देने और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आड़ में एकाधिकारी पूंजीपति घरानों को अधिक से अधिक फायदे देना जारी रखते हुए रश्म-रिवाज के तौर पर "करेंगे", "स्थापित किया जाएगा" के साथ-साथ "होने की संभावना" है जैसे वाक्यांशों की बकबक और सरकारी योजनाओं के नए-नए हिंदी नामकरण पर केंद्रित है।

चुनाव से पहले प्रधानमंत्री ने जो बड़े-बड़े वादे किए थे, उनमें से हर किसी संदर्भ को सावधानी से टाला गया है। बाहरी प्रतिकूलताओं का सामना करने के लिए अर्थव्यवस्था के 'लचीलेपन' पर जोर देना बिना किसी विश्वसनीय सहायक साक्ष्य के है। जहां वित्तमंत्री ने डिजिटल लेनदेन में 66% इजाफा होने का दावा किया है, वहीं हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट बताती है कि नोटबंदी से पहले के दौर की तुलना में नकद लेनदेन में 72% की भारी वृद्धि हुई है। बढ़ती मुद्रास्फीति के साथ-साथ बढ़ती मंदी, तेजी से बढ़ती महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी और बड़े पैमाने पर छंटनी या उद्योगों के एक के बाद एक बंद होने के कारण नौकरियां के नुकसान, असाधारण रूप से बढ़ती असमानता, एकाधिकारी पूंजीपति घरानों द्वारा संपत्ति पर स्वामित्व बढ़ाने के लिए कृत्रिम रूप से शेयरों के दाम बढ़ाने के लिए की गई कथित धोखाधड़ी, बैंकों में बढ़ते एनपीए और एशियाई मुद्राओं के बीच रुपये का सबसे खराब प्रदर्शन का इसमें कहीं कोई उल्लेख नहीं है। घरेलू खर्च में वृद्धि का दावा एक मिथ्या धारणा है, क्योंकि खपत की मांग कथित तौर पर उच्च आय वाले वर्ग में आने वाले परिवारों द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के पक्ष में अत्यधिक विषम है। इसके अलावा, निजी बचतों में गिरावट और बैंक उपभोक्ता ऋण में 83.5 ट्रिलियन रुपये की वृद्धि, मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के परिवारों के सुझाव हैं कि वे बुनियादी जरूरतों (उधारी पर संचालित विकास) पर खर्च करने के लिए उधार ले रहे हैं क्योंकि आय के रास्ते तेजी से सिकुड़ रहे हैं। यह पाया गया है कि सरकार अभी भी बजट घाटे को पूरा करने के लिए 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बाहरी उधारी पर निर्भर है, जबकि वर्तमान में, कुल ऋण का आंकड़ा 155.31 लाख करोड़ रुपये बताया गया है, जिसका मतलब है कि हर देशवासी पर 1,09,373 रुपये का बोझ है। हाल ही के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि केवल एक अरबपति, गौतम अडानी पर 2017-2021 से अप्राप्त लाभ पर एकमुश्त ऑफ-टैक्स बढ़कर 1.79 लाख करोड़ रुपये हो गया है या 10 सबसे अमीर अरबपतियों पर एकमुश्त टैक्स 5 प्रतिशत बढ़ा देने से देश को 1.37 लाख करोड़ रुपये मिल सकते हैं। इसके अलावा, कर राजस्व में वृद्धि की शेखी बघारने का कारण यह है कि 2021-22 में वसूले गए माल और सेवा कर (जीएसटी) में कुल 14.83 लाख करोड़ रुपये की 64 प्रतिशत राशि नीचे हिस्से की 50 प्रतिशत आबादी से आया था, जबकि इसमें शीर्ष 10% अमीरों का योगदान केवल 3 प्रतिशत था। कई बड़े कारोबारियों ने अंतिम ग्राहकों को देने के बजाय क्रेडिट इनपुट लाभ को हड़प लिया और फिर भी युक्तिकरण के नाम पर उनके लिए और अधिक छूट की घोषणा की गई।इसलिए, बजट पेश करने का यह वार्षिक अनुष्ठान वास्तव में एक तमाशा बन गया है, क्योंकि यह लोगों के किसी भी मुद्दे पर तवज्जो नहीं देता है, लेकिन यह पीएम की वीभत्स चाटुकारिता और शासक एकाधिकारी पूजीपतियों की ताबेदार और जनहितों की पूरी तरह से विरोधी भाजपा सरकार की घोर विफलताओं को ढकने के लिए भारी-भरकम आर्थिक शब्दजाल और आंकड़ों की बाजीगरी से भरपूर है।

नवयुग विधालय के बच्चों को बताया सी पी आर देने की विधि

विद्यालय के छात्र छात्राओं के साथ साथ विद्यालय के शिक्षकों ने संस्था के चिकित्सक का किया धन्यवाद

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। आम लोगों के जीवन को बचाने के लिए आभियान में जुटी जीवन जागृति सोसायटी के द्वारा नवयुग विद्यालय परिसर में प्रिंसिपल सुबोदीप डे व दर्जनों सिक्षको की उपस्थिति में छात्रों को हृदय रोग व दुर्घटना ग्रसित लोगों को सीपीर के माध्यम से जीवन देने की विधि सिखाने का डेमोस्ट्रेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान छात्रों को सीपीआर (कार्डियो पल्मोनरी रीससीटेशन) यानि हृदय और सांस को पुनजार्गृत करने की विधि सिखाने की विधि सिखाया गया है।

इस दौरान जीवन जागृति सोसायटी की टीम द्वारा विद्यालय के करीब दो सौ बच्चों एवं शिक्षकों को डमी(पुतले) पर सीपीआर डेमोस्ट्रेशन करके उन्हे सीपीआर विधी सिखायी गयी है। इस दौरान संस्था के अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह ने बताया कि चाहे किसी को घर या ऑफिस में हार्ट अटैक हो या सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति हो या डूब रहे व्यक्ति को बचाने के बाद की स्थिति हो जाय तो ऐसी स्थिति में यादि वह अचेत है और लगाता हो कि उसकी सांसे नहीं चल रही है, एवम धडकन यानि पल्स नहीं चल रहा हो तो उसके छाती के बीचों बीच दोनों हथेलियों को इंटरलॉक करते हुए छाती के सबसे निचले हड्डी से दो अंगुली की चौड़ाई के ऊपर दोनों निपल के बीच एक मिनट में 100 के रफ्तार से 25बार छाती दो इंच तक दबाना होता है, और फिर 2बार मुंह में सांस देना है। यह प्रक्रिया कई मिनट तक करना है और इस बीच एम्बुलेंस और पुलिस को फोन लगाकर अस्पताल पहुंचना है। इस तरह से कोई भी आम व्यक्ति जो चिकित्सक नही है वैसे लोग भी मरते हुए व्यक्ति की जान बचा सकता है। उक्त जानकारी देने के उपरान्त बच्चों को भी इसको कराया गया। वही इस कार्यक्रम में उपस्थित एनडीआरएफ के ट्रैंड आशीष कुमार ने दुर्घटना होने पर आर्टिफिशल स्ट्रेचर गर्दन में चोट होने पर पेपर का कालर भी बच्चों कों बना के डेमोस्ट्रेशन कर बताया गया साथ ही कहीं से रक्त स्राव हो रहा हो तो उसको बंद करने का उपाय के साथ साथ बताया कि यदि किसी के शरीर में कील या छड़ किसी अंग में घुस गया हो तो क्या करना बातों को के साथ साथ उसकी जानकारी भी साझा की ।

डॉ. सिंह ने बच्चों को दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को असपताल पहुंचाने पर सुप्रीम कोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि अब डरें नहीं, बल्कि सरकार ऐसे गुड सिमेरिटन को जो दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाती है, उन लोगों को 5000 रुपए ईनाम भी देती है। उन्होने जीवन जागृति सोसायटी द्वारा बनी हैल्मेट पहनने के लिए प्रेरित करने वाली लघु फि ल्म"लाठी बरसेगा आँगन चाहकेगा" का वीडियो भी दिखाया गया। इस दौरान विद्यालय के छात्रों व शिक्षको ने जीवन जागृति के संस्थापक व उनकी टीम कोकार्यक्रम के माध्यम से जानकारी साझा करने के लिए धन्यवाद किया।

15 फरवरी को गांधी मैदान पटना में माले की रैली होगी ऐतिहासिक : मीना तिवारी

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। मोदी राज में दमनकारी अभियानों व भगवा ब्रिगेड के जरिए देश के संविधान व लोकतंत्र को कुचलने का सिलसिला जारी है। मनुस्मृति को ही देश का विधान बना देने की हर रोज साजिशें रची जा रही हैं। सभी संस्थाओं को मैनेज कर तथा नियम-कानून को ठेंगा दिखला कर अडानी-अंबानी सरीखे गिने-चुने कॉरपोरेटों के हाथों में सबकुछ सौंपा जा रहा है। जल-जंगल-जमीन, खाद-खदान समेत तमाम प्राकृतिक संसाधनों को उनके हवाले किया जा रहा है। रेल-सेल-बैंक-बीमा सहित सार्वजनिक क्षेत्र के तमाम संस्थाओं व सेवाओं को उनके हाथों गिरवी रखा जा रहा है। मोदी राज में देश की आम जनता महंगाई और बेरोजगारी की भयानक मार झेल रही है।

इसीलिए भाकपा-माले के 11वें महाधिवेशन की शुरूआत 15फरवरी को गांधी मैदान पटना में लोकतंत्र बचाओ-देश बचाओ रैली से हो रही है। रैली में लाखों लोगों के भाग लेने की संभावना है जिसे पार्टी के महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य व अन्य राष्ट्रीय नेता संबोधित करेंगे। पार्टी केन्द्रीय कमिटी सदस्य व ऐपवा के राष्ट्रीय महासचिव मीना तिवारी ने यह बात मालीघाट-कन्हौली पार्टी कार्यालय में आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहीं। कार्यशाला में पार्टी जिला सचिव कृष्णमोहन, बोचहां प्रखंड सचिव रामबालक सहनी, गायघाट प्रखंड सचिव जितेंद्र यादव, मुशहरी प्रखंड सचिव शत्रुघ्न सहनी, बंदरा प्रखंड सचिव रामबली मेहता, सकरा-मुरौल प्रखंड प्रभारी राजेश रंजन, पारू-सरैया प्रखंड प्रभारी वीरबहादुर सहनी, पार्टी नगर सचिव सूरज कुमार सिंह, खेत मजदूर सभा के नेता रामनंदन पासवान, नौजवान सभा के नेता आफताब आलम व विवेक कुमार, ऐपवा नेत्री रानी प्रसाद व चंद्रकला देवी, किसान नेता बिन्देश्वर साह, आइसा नेता दीपक कुमार, पार्टी जिला कमिटी सदस्य बिरेन्द्र पासवान, संजय कुमार दास व अन्य शामिल थे। कार्यशाला को संबोधित करते हुए मीना तिवारी ने आगे कहा कि मोदी राज में दलितों-पिछड़ों के आरक्षण को खत्म कर देने की कोशिश जारी है। मुसलमानों व अल्पसंख्यकों के खिलाफ तरह-तरह से नफरत का माहौल बनाया जा रहा है तथा एनआइए जैसी संस्थाएं भाजपा -आरएसएस के हाथों की कठपुतली बन गई है। संघीय ठांचा खतरे में है। न्यायालय से लेकर चुनाव आयोग की स्वायत्तता खत्म किया जा रहा है। देश पर फासीवादी हिटलरशाही हावी है। ऐसे ही राजनीतिक दौर में माले का 11वां राष्ट्रीय महाधिवेशन व रैली पटना में आयोजित है। बिहार शुरू से ही प्रतिरोध आंदोलनों की ऐतिहासिक धरती रही है। 1975 की इमरजेंसी के खिलाफ देश में लोकतंत्र की स्थापना का शंखनाद इसी धरती से हुआ था। उन्होंने कहा कि 16 से 20 फरवरी तक पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित पार्टी महाधिवेशन के दौरान 16फरवरी को वामपंथी दलों के राष्ट्रीय नेता भाग लेंगे। 18फरवरी को फासीवाद हमले से लोकतंत्र व संविधान की रक्षा के लिए राष्ट्रीय कन्वेंशन आयोजित है जिसमें बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन तथा कॉग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अन्य राष्ट्रीय नेताओं को आमंत्रित किया गया है।

जिला सचिव कृष्णमोहन ने कहा कि लोकतंत्र बचाओ-देश बचाओ रैली में मुजफ्फरपुर के विभिन्न क्षेत्रों से 5 हजार से ज्यादा लोग भाग लेंगे। गांव-मुहल्लों में जनता की बैठकों का दौर तथा जनसंपर्क अभियान जारी है। बड़ी संख्या में कार्यकताओं द्वारा पर्चा-फोल्डर लोगों तक पहुंचया जा रहा है। पोस्टरिंग, दीवाल लेखन, होर्डिंग व झंडा लगाया जा रहा है।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संसद में किया पेश देश का 75वां बजट

प्रात : किरण ब्यूरो।

● आम बजट में बिहार की हुई है उपेक्षा आम जनता के लिए केंद्र सरकार की ओर से कुछ भी नहीं : विधायक

भागलपुर। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश का 75वां बजट संसद में पेश किया है। इस दौरान राजनीतिक गलियारों से अलग-अलग प्रतिक्रिया सामने आ रही है। कांग्रेस विधानमंडल दल के नेता व सह विधायक अजीत शर्मा ने इसे लोगों को सपना दिखाने वाला बजट करार देते हुए, इसे देश और बिहार के लिए निराशाजनक करार दिया है, उन्होंने कहा कि इस बजट में बिहार की उपेक्षा की गई है। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलना था वह भी नहीं मिला और ना ही आम लोगों के लिए किसी तरह की फायदे की बात सामने आ रही है, यह सिर्फ और सिर्फ व्यक्तिगत स्वार्थ वाली बजट पेश की गई है। आम जनता सब कुछ समझ रही है। विधायक शर्मा ने यह भी कहा कि यह रणनीति केंद्र सरकार की ज्यादा दिन तक नहीं चलने वाली, जनता सब कुछ समझ रही है। उसे 2024 के चुनाव में इसका जवाब देगी और उसे सत्ता से उखाड़ फेकेगी।

अंबेडकर आवासीय विद्यालय में बच्चों के नामांकन को लेकर महिलाएं कर रही जगरात

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। राज्य सरकार बच्चों को स्कूल भेजने के लिए कई तरह के कार्यक्रम चला रही है। वही अब बच्चों की मां भी अपने बच्चों के एडमिशन के लिए रतजगा करने का मामला सामने आया है।

महिलाएं अपने बच्चे के अच्छे जीवन शैली की राह ओर बढ़े इसके लिए रात भर जग कर मंदिर के बाहर बैठी हुई है, जिससे उनके बच्चों का अम्बेडकर आवासीय विद्यालय में एडमिशन हो जाए और उनका बच्चा भी पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बन सके। समाहरणालय गेट के समीप बजरंगबली मंदिर के समक्ष दर्जनों महिला बैठी हुई है। दरअसल अंबेडकर विद्यालय में एडमिशन के लिए कल्याण विभाग में सुबह 6 बजे से फॉर्म भरा जाना है। जिसको लेकर महिलाएं यहां रतजगा कर पहले लाइन लग कर फॉर्म भरने के लिए बैठी हुई है। महिलाओं ने खाना भी नहीं खाया है, क्योंकि इन्हें बाथरूम ना लगे। क्योंकि यहां पर बाथरूम तक की भी व्यवस्था नहीं है, और मां अपने बच्चों के दाखिले को लेकर तपस्या कर रही है, कि एडमिशन हो जाने पर उनका बच्चा भी बड़ा आदमी बन सके।

गरीबों के लिए पूरा ध्यान दिया गया बजट में : डा प्रेम कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

गया। भाजपा गया जिला ने केन्द्रीय आम बजट 2023-2024 को स्वागत किया है।भाजपा के वरीय नेता सह पूर्व विधान पार्षद कृष्ण कुमार सिंह उर्फ कुमार वाबू ने केंद्रीय बजट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि पूरे विश्व में मंदी का दौर जारी है और इस मंदी के दौर भारत सरकार ने बेहतरीन बजट पेश किया है।इस बजट में सभी वर्गों के लिए लाभ का बजट है। पूर्व मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने कहा कि आम बजट गरीबों, वंचितों, पिछड़ों सहित आम नागरिकों के हित में है।यह बजट देश के विकास में मील का पत्थर साबित होगा। भाजपा जिलाध्यक्ष धनराज शर्मा ने कहा कि यह बजट यह साबित करता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था काफी मजबूत स्थिति में है।80करोड़ लोगों का मुफ्त राशन देकर भारत सरकार ने विश्व रिकॉर्ड कायम किया है।यह सशक्त सरकार और भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व के कारण संभव हो सका है।यह बजट ऐतिहासिक है।

इस बजट का स्वागत करने वालों में भाजपा विधायक विरेन्द्र सिंह, पूर्व सांसद हरी मांझी, रामजी मांझी, पूर्व विधायक डॉ श्यामदेव पासवान, राजीव नंदन दांगी, पूर्व जिलाध्यक्ष जैनेन्द्र कुमार, अनिल स्वामी, ललिता सिंह, क्षितिज मोहन सिंह, महादेव प्रसाद, अखौरी निरंजन प्रसाद, हरेराम सिंह, कौशल शर्मा,जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र राम, प्रेम प्रकाश, राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता,अजय कुमार, नरेन्द्र सिंह दांगी, भाजपा जिला मिडिया प्रभारी युगेश कुमार, संतोष ठाकुर, विनोद सिंह, नीमा कुमारी।

किसानों, मजदूरों, नौजवानों की उम्मीद तोड़ने वाला है बजट : भाकपा

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिवमंडल सदस्य अजय कुमार सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि वित्त मंत्री द्वारा आज संसद में पेश बजट में महंगाई से कोई राहत नहीं है, उल्टे इस बजट से महंगाई बढ़ेगी। बेरोजगारी दूर करने की कोई ठोस योजना नहीं। शिक्षा बजट घटाकर 2.64प्रतिशत 2.5प्रतिशत करना दुर्भाग्यपूर्ण तथा स्वास्थ्य बजट घटाकर 2.2 प्रतिशत से 1.98प्रतिशत करना हानिकारक है। किसानों की आय दोगुना करने की सपना दिखाने वाली मोदी सरकार का कृषि बजट में करीब 6प्रतिशत कटौती करना किसानों के साथ धोखा है। इन्होंने कहा कि जब मनरेगा बजट को बढ़ाने की सबसे ज्यादा जरूरत थी, तब बजट में कटौती समझ से परे है। बीजेपी सरकार ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि वो गरीब और मजदूर विरोधी है। इन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा करने वाले जवानों, सरकारी नीतियों से त्रस्त किसानों और बेरोजगारी के दंश से बदहाल नौजवानों की उम्मीदों को एक बार फिर मोदी सरकार ने तोड़ दिया है। बजट 2023-24 में इनके लिए कुछ भी नहीं है। साथ ही आर्थिक और सामाजिक रूप से हाशिये पर पड़े हुए मजदूर, आदिवासी और दलितों के लिए यह बजट भद्दा मजाक है। सबका साथ और सबका विकास का नारा देने वाली सरकार केवल अपने कारपोरेट मित्रों का साथ दे रही है। देश की जनता ये धोखा बर्दाश्त नहीं करेगी।

कांटी में जन प्रदर्शन की सारी तैयारी पूरी, प्रदर्शन होगा ऐतिहासिक :अजीत

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। कांटी प्रखंड मुख्यालय पर आज होने वाले भ्रष्टाचार व गरीबों के साथ हो रहे नाइंसाफी के खिलाफ टीम अजीत कुमार के द्वारा आहूत जन प्रदर्शन की सारी तैयारी पूरी कर ली गई है। जन प्रदर्शन ऐतिहासिक हो इसके लिए बुधवार को पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कांटी नगर परिषद के विभिन्न वार्डों में जनसंवाद चला कर लोगों उक्त जन प्रदर्शन में अपनी बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने का अपील किया।

इस मौके पर श्री कुमार ने कहा कि अंचल, प्रखंड, आंगनबाड़ी कार्यालय तो पूर्व से ही भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ था, आज जब आम आवाम के बीच संवाद में पहुंचा हूं तो पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि कांटी का नगर परिषद भी भ्रष्टाचार का बड़ा अखाड़ा बन गया है। स्थिति है की नगर परिषद में पदस्थापित अधिकारी व कर्मी लोगों को मदद करने के बजाय केवल ही केवल लूटने में लगे हैं, जो बड़ा ही गंभीर चिंता का विषय है। उन्होंने गरीबों का आवाहन करते हुए कहा कि आप अब अपने अधिकार के लिए किसी के पास झुकिए नहीं, हक की लड़ाई के लिए सड़क पर आइए हम आपके साथ आपकी लड़ाई लड़ कर हर हालत में न्याय दिलाएंगे। श्री कुमार ने कहा कि आज मुख्य रुप से सरकारी आवास, वृद्धावस्था पेंशन, दाखिल खारिज जैसे समस्याओं के निदान के लिए अंचल एवं नगर परिषद में नियुक्त कर्मी बड़े पैमाने पर गरीबों को लूट रहे हैं। जब गरीब उनसे अपनी हक की बात करते हैं तो उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। इसे हम अब कतई बर्दाश्त नहीं करेंगें।

इस क्रम में पूर्व मंत्री ने नगर परिषद के बिशुनपुर सुमेर, कोठियां दलित बस्ती, कोठियां सहनी टोला, कांटी गोसाईटोला, कांटी तिवारी टोला, कांटी तुरहा टोला, कांटी शिव मंदिर, स्टेशन टोला, किशु नगर आदी मोहल्ले में जनसंवाद चलाकर 2 फरवरी के प्रदर्शन में बड़ी भागीदारी सुनिश्चित करने का लोगों से अपील किया।

इस मौके पर संवाद कार्यक्रम में नुनू मिश्रा, चुन्नू मिश्रा, संजीत सम्राट, पूर्व मुखिया नंदकिशोर सिंह, मुरारी झा, विजय राम, जय सिंह, सुरेंद्र सहनी, वार्ड पार्षद विनोद सहनी, मुन्ना पासवान ,सतनारायण पासवान, नंदकिशोर चौधरी, वार्ड पार्षद शंकर महतो, आदित्य कुमार मिश्रा ,अखिलेश साह, भरत गुप्ता, प्रोफेसर अशोक गुप्ता, प्रभु गुप्ता, दिनेश गुप्ता, चीकू झा, देवेंद्र झा, अर्जुन झा, झूलन पंडित, सुरेंद्र चौधरी, राम रतन चौधरी ,रत्नेश्वर चौधरी, महेश पासवान, नंदन महतो, महेंद्र राय, महेश जी, कमल चौधरी, अनिल चौधरी, आदी मुख्य रूप से शामिल थे।

नशा व अपराध मुक्त हो समाज को लेकर किया बैठक का आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। बरारी थाना के एसआई सूरज भूषण एवं वार्ड संख्या 25 के पार्षद गोविंद बनर्जी की अध्यक्षता में छोटी खंजरपुर मकबरा स्थित एक बैठक का आयोजन किया गया। आयोजित बैठक का मुख्य उद्देश्य वार्ड में हो रहे क्राइम को कंट्रोल करना साथ ही वार्ड को नशा मुक्त बनाने को लेकर नयी नीति बनाये जाने को लेकर की गई है। इस बैठक के माध्यम से स्थानीय लोगों को विशेष रुप से मकबरा के समीप रहने वाले लोगों को नशा मुक्त करने व अपराध से जुड़ी हुई गतिविधियों से अवगत कराते हुए समझाया गया है। इस दौरान पुलिस टीम ने स्थानीय लोगों से सहयोग करने के साथ साथ उनके संबंधित सुझाव भी मांगा है। इस बैठक के क्रम में कई लोगों ने विभिन्न प्रकार के सुझाव दिये है। इसी क्रम में लोगों ने सुझाव दिया कि समाज के प्रत्येक मोहल्ले में कम से कम 10 की संख्या में पुलिस मित्र बनाया जाए जो कि समाज से संबंधित समस्याओं के प्रति जागरूक होकर समाज को बेहत

संक्षिप्त खबरें

बजट 2023-24 को पिछले बजट की बुनियाद पर निर्माण की उम्मीद : सीतारमण

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को कहा कि आम बजट 2023-24 को पिछले बजट की बुनियाद और इंडिया एट 100 के मसौदे पर निर्माण की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि यह अमृत काल में पहला बजट है। अगले साल होने वाले आम चुनाव से पहले भाजपा की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार के दूसरे कार्यकाल का यह आखिरी पूर्ण बजट है। सीतारमण जुलाई, 2019 में वित्त मंत्री का पद संभालने के बाद अपना पांचवां पूर्ण बजट पेश कर रही हैं।

आजादी के 75वें वर्ष में दुनिया ने भारत को एक आकर्षक स्थल माना : सीतारमण

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को कहा कि वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत ने अच्छी आर्थिक वृद्धि हासिल की है और इसलिए विश्व ने उसे एक आकर्षक स्थल माना है। वित्त मंत्री ने बजट भाषण में कहा कि चालू वित्त वर्ष में भारत के सात प्रतिशत की वृद्धि हासिल करने का अनुमान है, जो प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में सर्वाधिक है। उन्होंने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था सही रास्ते पर बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि विश्व भारत की उपलब्धियों की सराहना कर रहा है और आजादी के 75वें वर्ष में भारत को पूरी दुनिया एक आकर्षक स्थल मान रही है। वित्त वर्ष 2022-23 में देश की अर्थव्यवस्था के सात फीसदी की दर से और 2023-24 में 6.5 फीसदी (6.0-6.8 फीसदी) की दर से बढ़ने का अनुमान है।

सरकार 2,200 करोड़ रुपये का आत्मनिर्भर स्वच्छ संयंत्र कार्यक्रम शुरू करेगी : सीतारमण

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को कहा कि सरकार 2,200 करोड़ रुपये का आत्मनिर्भर स्वच्छ संयंत्र कार्यक्रम शुरू करेगी। उन्होंने आम बजट 2023-24 पेश करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि-स्टार्टअप इकाइयों को प्रोत्साहित करने के लिए एक कृषि उत्प्रेरक कोष भी स्थापित किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि अतिरिक्त लंबे स्टेपल वाले कपास की उपज बढ़ाने के लिए सरकार एक क्लस्टर-आधारित नजरिया अपनाएगी। सरकार हैदराबाद स्थित कदन्न अनुसंधान संस्थान का उत्कृष्टता केंद्र के रूप में समर्थन करेगी।

महामारी के समय कोई भूखा नहीं रहा, 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त अनाज दिया: सीतारमण

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को अपने बजट भाषण में कहा कि केंद्र सरकार ने कोविड-19 महामारी के समय 80 करोड़ गरीब लोगों को मुफ्त अनाज उपलब्ध कराकर यह सुनिश्चित किया कि देश में कोई व्यक्ति भूखा न रहे। उन्होंने कहा कि वैश्विक चुनौतियों के समय जी20 की अध्यक्षता मिलने से हमारे पास वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका को मजबूत करने का अवसर है। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाए) के तहत गरीब लोगों को निःशुल्क अनाज उपलब्ध कराने की योजना का क्रियान्वयन कर रही है जिस पर एक जनवरी से शुरू करके दो लाख करोड़ रुपये का व्यय आएगा। उन्होंने बताया कि 2020-21 में कृषि क्षेत्र में निजी निवेश बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो गया है जो 2019-20 में सात फीसदी था।

केंद्रीय बजट 2023-24 : जानिए इस बार के बजट की खास बातें

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में मध्यमवर्गीय नागरिकों के लिए बड़ा एलान किया है। अब सात लाख रुपये तक की आय पर सरकार कोई टैक्स नहीं लेगी। अब तक पांच लाख रुपये से अधिक आय पर टैक्स देना पड़ता था। सरकार ने टैक्स स्लैब को भी बदल दिया है। बजट 2023-24 की खास बातें...

बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किया जाएगा। पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन पर ध्यान देते हुए कृषि ऋण लक्ष्य को बढ़ाकर 20 लाख करोड़ रुपये किया जाएगा। कृषि से जुड़े स्टार्ट अप को प्राथमिकता दी जाएगी। युवा उद्यमियों द्वारा कृषि-स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए कृषि त्वरक कोष की स्थापना की जाएगी। पीएम विश्व कर्म कौशल सम्मान पैकेज की परिकल्पना पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों के लिए की गई है, जो उन्हें एमएसएमई मूल्य श्रृंखला के साथ एकीकृत करते हुए अपने उत्पादों की गुणवत्ता, पैमाने और पहुंच में सुधार करने में सक्षम बनाएगा। बजट 2023 की 7 प्राथमिकताएं समावेशी विकास, अंतिम छोर तक पहुँचना, बुनियादी ढांचा और निवेश, क्षमता को उजागर करना, ग्रीन ग्रोथ, युवा शक्ति और वित्तीय क्षेत्र हैं। 2014 से स्थापित मौजूदा 157 मेडिकल कॉलेजों के साथ सहस्थान में 157 नए नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। विशेष रूप से जनजातीय समूहों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए विकास मिशन शुरू किया जाएगा, ताकि बस्तियों को मूलभूत सुविधाएं दी जा सके। अगले 3 साल में योजना को लागू करने के लिए 15,000 करोड़ उपलब्ध कराए जाएंगे। बजट में रेलवे के लिए 2.40 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत परिव्यय का प्रावधान किया गया है।

पीएम आवास योजना के परिव्यय को 66% बढ़ाकर 79,000 करोड़ किया जा रहा है। सदस्यता में दोगुनी वृद्धि, जो अब 27 करोड़ है, से यह परिलक्षित होता है कि अब अर्थव्यवस्था बहुत अधिक औपचारिक हो गई है, वढकके माध्यम

से 2022 में 126 लाख करोड़ रुपये के 7,400 डिजिटल भुगतान हुए। सभी अंत्योदय और प्राथमिकता परिवारों को एक वर्ष के लिए मुफ्त खाद्यान्न की आपूर्ति के लिए पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत लगभग 2 लाख करोड़ रुपये का पूरा खर्च केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जा रहा है। कोविड महामारी के दौरान हमने यह निश्चित किया कि कोई भूखा न सोए। हमने 80 करोड़ से ज्यादा लोगों को 28 महीने तक मुफ्त राशन दिया। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना को एक साल के लिए बढ़ा दिया गया है। 2014 से ही सरकार की कोशिश लोगों की जिंदगी को बेहतर बनाना और क्वालिटी देना रहा है। प्रतिव्यक्ति आय 1.97 लाख यानी दोगुने से ज्यादा हो गई है। दुनिया भारत को चमकदार सितारे की तरह देख रही है। ग्लोबल स्लोडाउन के चलते हमारी विकास दर 7% रही है। बाकी देशों की तुलना में सबसे मजबूत है। बच्चों और किशोरों के लिए राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय स्थापित किया जाएगा। अगले 3 साल में 740 एकलव्य स्कूलों के लिए 38 हजार 800 टीचर्स और सपोर्ट स्टाफ नियुक्त किए जाएंगे। कोविड-19 महामारी के समय 80 करोड़ गरीब लोगों को मुफ्त अनाज उपलब्ध कराकर यह सुनिश्चित किया कि देश में कोई व्यक्ति भूखा न रहे। उन्होंने कहा कि वैश्विक चुनौतियों के समय जी20 की अध्यक्षता मिलने से हमारे पास वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका को मजबूत करने का अवसर है। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाए) के तहत गरीब लोगों को निःशुल्क अनाज उपलब्ध कराने की योजना का क्रियान्वयन कर रही है जिस पर एक जनवरी से शुरू करके दो लाख करोड़ रुपये का व्यय आएगा। उन्होंने बताया कि 2020-21 में कृषि क्षेत्र में निजी निवेश बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो गया है जो 2019-20 में सात फीसदी था। सरकार ने पीएम-किसान योजना के तहत 2.2 लाख करोड़ रुपये का नकद हस्तांतरण किया है। उन्होंने 2024 के आम चुनाव से पहले भाजपा की अगुवाई वाली राजग सरकार के दूसरे कार्यकाल का अंतिम पूर्ण बजट पेश करते हुए कहा कि सरकार का मिशन ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना है। उन्होंने आगे कहा कि डिजिटल भुगतान में महत्वपूर्ण वृद्धि के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक संगठित हो गई है। कृषि क्षेत्र में संस्थागत ऋण वित्त वर्ष 2021-22 में बढ़कर 18.6 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो 2020-21 में 15.8 लाख करोड़ रुपये था। उन्होंने कहा कि पीएम-किसान, पीएम-फसल बीमा योजना और कृषि अवसंरचना कोष बनाने जैसी पहल ने इस क्षेत्र की मदद की है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही सामाजिक-आर्थिक विकास में डिजिटल बुनियादी ढांचे की भूमिका बढ़ी है और भारत ने खुद को ज्ञान केंद्र के रूप में मजबूती से स्थापित किया है। महामारी से प्रभावित टस्टए को राहत दी जाएगी। संविदागत विवादो के निपटान के लिए स्वैच्छिक समाधान योजना लाई जाएगी। पूंजी निवेश परिव्यय 33% बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपये किया जा रहा है, जो कि सकल घरेलू उत्पाद का 3.3% होगा। 740 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के लिए अगले 3 वर्षों में 38,000 शिक्षकों और सहायक कर्मचारियों की भर्ती की जाएगी। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.ड की शुरूआत की जाएगी।

बजट में किसान, महिलाएं, वरिष्ठ नागरिक व अन्य क्षेत्र

नई दिल्ली। महिला सम्मान बचत पत्र योजना शुरू होगी। इसमें महिलाओं को 2 लाख की बचत पर 7.5% का ब्याज मिलेगा। ये योजना वर्ष 2025 तक चलेगी। वरिष्ठ नागरिक खाता स्कीम की सीमा 4.5 लाख से 9 लाख की जाएगी। आर्थिक क्षेत्रों में ऊर्जा के कुशल उपयोग के लिए हरित ईंधन, हरित ऊर्जा आदि जैसे कार्यक्रमों को लागू किए जा रहे हैं हरित विकास के ये प्रयास अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को कम करने में मदद करते हैं और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। पीएम विश्व कर्मा कौशल सम्मान : इसके तहत पहली बार पारंपरिक कारीगरों व शिल्पकारों के लिए सहायता पैकेज की परिकल्पना की गई है यह उन्हें एमएसएमई मूल्य श्रृंखला के साथ एकीकृत करते हुए अपने उत्पादों की गुणवत्ता, पैमाने व पहुंच में सुधार करने में सक्षम बनाएगा। प्रौद्योगिकी संचालित व ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आर्थिक एजेंडा तीन बिंदुओं पर केंद्रित है...अवसरों को सुविधाजनक बनाना, रोजगार सृजन को मजबूत गति देना, व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत करना। 2022-2023 के लिए संशोधित राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 6.4% है। 2023-2024 के लिए राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 5.9% रहने का अनुमान है। क्षेत्रीय हवाई संपर्क में सुधार के लिए 50 अतिरिक्त हवाई अड्डों, हेलीपॉड्स, वाटर एयरोड्रोम और उन्नत लैंडिंग ग्राउंड का पुनरुत्थान किया जाएगा। सिगरेट पर आकस्मिकता शुल्क को 16 फीसदी बढ़ाया गया। 3 करोड़ के टर्नओवर वाले माइक्रो उद्योग को कर में छूट दी जाएगी। 7 लाख तक सालाना कमाने वालो को कोई कर नहीं देना होगा।

पीएम-किसान योजना के तहत 2.2 लाख करोड़ रुपये का नकद हस्तांतरण किया: सीतारमण

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को कहा कि सरकार ने पीएम-किसान योजना के तहत 2.2 लाख करोड़ रुपये का नकद हस्तांतरण किया है।

उन्होंने 2024 के आम चुनाव से पहले भाजपा की अगुवाई वाली राजग सरकार के दूसरे कार्यकाल का अंतिम पूर्ण बजट पेश करते हुए कहा कि सरकार का मिशन ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना है। उन्होंने आगे कहा कि डिजिटल भुगतान में महत्वपूर्ण वृद्धि के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था अधिक संगठित हो गई है। कृषि क्षेत्र में संस्थागत ऋण वित्त वर्ष 2021-22 में बढ़कर 18.6 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो 2020-21 में 15.8 लाख करोड़ रुपये था। उन्होंने कहा कि पीएम-किसान, पीएम-फसल बीमा योजना और कृषि अवसंरचना कोष बनाने जैसी पहल ने इस क्षेत्र की मदद की है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही सामाजिक-आर्थिक विकास में डिजिटल बुनियादी ढांचे की भूमिका बढ़ी है और भारत ने खुद को ज्ञान केंद्र के रूप में मजबूती से स्थापित किया है।

बजट के सप्तर्षि, वित्त मंत्री ने बताया क्या है सप्तर्षि? वित्त मत्री निर्मला सीतारमण ने बजट के सात आधार बताए। इन्हें सप्तर्षि कहा गया है। 1. समावेशी विकास, 2. वंचितों को वरीयता, 3. बुनियादी ढांचे और निवेश, 4. क्षमता विस्तार 5. हरित विकास, 6. युवा शक्ति, 7. वित्तीय क्षेत्र।

वित्त मंत्री ने कहा कि अमृत काल का विजन तकनीक संचालित और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है। इसके लिए सरकारी फंडिंग और वित्तीय क्षेत्र से मदद ली जाएगी। इस जनभागीदार के लिए सबका साथ, सबका प्रयास अनिवार्य है।

केंद्रीय बजट पेश होने के पहले शेयर बाजार में तेजी का रुख

नई दिल्ली, एजेंसी

2023-24 के आम बजट के दिन आज घरेलू शेयर बाजार की शुरूआत मजबूती के साथ हुई है। निफ्टी और सेंसेक्स दोनों सूचकांक बजट पेश होने के पहले लगातार बढ़त के साथ कारोबार करते नजर आ रहे हैं। शुरूआती 1 घंटे के कारोबार में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में 1,938 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही है। इन शेयरों में 1,530 शेयर बढ़त के साथ हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं, वहीं 408 शेयर बिकवाली के दबाव की वजह से लाल निशान में कारोबार कर रहे हैं। शुरूआती 1 घंटे के कारोबार के दौरान स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से डिवीज लेबोरेट्रीज, ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक, हिंडाल्को इंडस्ट्रीज और टाटा स्टील के शेयर 2.67 प्रतिशत से लेकर 1.75 प्रतिशत की बढ़त के साथ कारोबार करते नजर आ रहे हैं। दूसरी ओर इंडस टॉवर्स, अडाणी इंटरप्राइजेज, सन फार्मास्युटिकल्स, कैन फिन होम्स और बैंक ऑफ बड़ौदा के शेयर 3.32 प्रतिशत से लेकर 1.52 प्रतिशत कमजोरी के साथ कारोबार करते दिख रहे हैं। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) के सेंसेक्स ने आज 451.27 अंक की उछाल के साथ 60,001.17 अंक के स्तर से कारोबार की शुरूआत की। कारोबार शुरू होते ही बाजार में लिवालों और बिकवालों के बीच खींचतान की स्थिति बन गई, जिसकी वजह से सेंसेक्स की चाल में भी लगातार उतार-चढ़ाव होता नजर आया। बाजार में लगातार जारी खरीद बिक्री के बीच शुरूआती 1 घंटे के कारोबार के बाद सुबह 10.15 बजे में सूचकांक 459.32 अंक की मजबूती के साथ 60,009.22 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा था। सेंसेक्स की तरह ही नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के निफ्टी ने भी आज 149.45 अंक की बढ़त के साथ 17,811.60 अंक के स्तर पर कारोबार की शुरूआत की। बजट के पूर्व की आशंकाओं और अनुमानों के कारण नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के शेयरों में भी लगातार खरीदारी और बिकवाली होती रही, जिसकी वजह से निफ्टी की चाल भी लगातार ऊपर नीचे होती रही। लगातार उतार-चढ़ाव के बावजूद इस सूचकांक ने लगातार हरे निशान में अपनी स्थिति बनाए रखी। बाजार में लगातार जारी लिवाली और बिकवाली के बीच शुरूआती 1 घंटे का कारोबार होने के बाद सुबह 10.15 बजे निफ्टी 127.05 अंक की बढ़त के साथ 17,789.20 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा था। इससे पहले आज प्री ओपनिंग सेशन में भी घरेलू शेयर बाजार ने बढ़त के साथ ही कारोबार की शुरूआत की थी। इस सेशन में बीएसई का सेंसेक्स 510.45 अंक यानी 0.86 प्रतिशत की तेजी के साथ 60,060.35 अंक के स्तर पर था। वहीं निफ्टी प्री ओपनिंग सेशन में 216.95 अंक यानी 0.85 प्रतिशत की मजबूती के साथ 17,811.65 अंक के स्तर पर पहुंचा हुआ था। इसके पहले पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को सेंसेक्स 49.49 अंक की तेजी के साथ 59,549.90 अंक के स्तर पर बंद हुआ था। निफ्टी ने 13.20 अंक की बढ़त के साथ 17,662.15 अंक के स्तर पर मंगलवार के कारोबार का अंत किया था।

ग्लोबल मार्केट से तेजी के संकेत, ज्यादातर एशियाई बाजारों में बढ़त

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत में आज बजट का दिन होने की वजह से शेयर बाजार भले ही बजटीय प्रावधानों को लेकर सतर्क मुद्रा में है, लेकिन दुनियाभर के बाजारों से आज मजबूत संकेत मिल रहे हैं।

पिछले कारोबारी सत्र में वॉल स्ट्रीट के तीनों इंडेक्स 1 प्रतिशत से अधिक की बढ़त के साथ बंद होने में कामयाब रहे। यूरोपीय बाजार भी पिछले कारोबारी सत्र के दौरान दबाव होने के बावजूद सपाट स्तर पर मिलाजुला कारोबार करते रहे। दूसरी ओर एशियाई बाजारों में आज आमतौर पर तेजी का रुख बना हुआ है। पिछले कारोबारी सत्र में वॉल स्ट्रीट में जोरदार तेजी का रुख बना रहा। तीनों सूचकांकों में पिछले कारोबारी सत्र के दौरान जमकर खरीदारी होती रही। नैस्डेक 190.74 अंक यानी 1.67 प्रतिशत की बढ़त के साथ 11,584.55 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह एसएंडपी 500 इंडेक्स ने 1.46 प्रतिशत की मजबूती के साथ 4,076.60 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसके अलावा डाऊ जोंस 368.95 अंक यानी 1.09 प्रतिशत की छलांग लगाकर 34,086.04 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

यूरोपीय बाजार में पिछले कारोबारी सत्र के दौरान लगातार दबाव बना रहा, जिसकी वजह से यहां के तीनों इंडेक्स सपाट स्तर पर कारोबार कर के बंद हुए। एफटीएसई इंडेक्स 0.17 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 7,771.70 अंक के स्तर पर बंद हुआ। दूसरी ओर सीएसी इंडेक्स ने 0.01 अंक की सांकेतिक बढ़त के साथ 7,082.42 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। इसी तरह डीएएक्स इंडेक्स भी 0.01 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 15,128.27 अंक के स्तर पर बंद हुआ। एशियाई बाजारों में आज आमतौर पर तेजी का रुख नजर आ रहा है। यहां के 9 प्रमुख बाजारों में से सिर्फ एक में मामूली गिरावट नजर आ रही है। शेष सभी बाजारों में आज तेजी का रुख बना हुआ है। हैंग सेंग इंडेक्स फिलहाल 0.27 प्रतिशत की मजबूती के साथ 21,902.35 अंक के स्तर पर बना हुआ है।

सीतारमण लाल रंग के बैग में टैबलेट लेकर संसद पहुंचीं

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण वित्त वर्ष 2023-24 का बजट पेश करने के लिए बीते दो वर्षों की तरह, बुधवार को बही-खाते के समान पारंपरिक लाल रंग के बैग में टैबलेट लेकर संसद भवन पहुंचीं। सीतारमण ने अधिकारियों के अपने दल के साथ वित्त मंत्रालय के बाहर परंपरागत अंदाज में तस्वीरें खिंचवाईं। हालांकि, यह उनके हाथ में सामान्य ब्रीफकेस न होकर लाल रंग के बैग में टैबलेट था।

डिजिटल स्वरूप वाले बजट को अपने भीतर समेटे हुए इस लाल कपड़े के ऊपर सुनहरे रंग का राष्ट्रीय प्रतीक-चिह्न अशोक स्तंभ भी अंकित था। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू से मुलाकात करने के बाद वित्त मंत्री सीधे संसद भवन पहुंची। पहले, वित्त मंत्री बजट को लाल रंग के ब्रीफकेस में रखकर संसद भवन ले जाते थे। लेकिन वर्ष 2019 में वित्त मंत्री बनने के बाद से सीतारमण ने ब्रीफकेस की जगह भारतीय परंपरा के अनुरूप बही-खाते की शक्ल में लाल कपड़े में लिपटे बजट को पेश करना शुरू कर दिया था।

कोविड महामारी के बीच 2021 में बजट पेश करने के दिन सीतारमण ने इसमें एक और बदलाव करते हुए डिजिटल बजट पेश किया था। इसके लिए लाल कपड़े में लिपटे टैबलेट के साथ वह नजर आई थीं। इसके बाद साल 2022 और इस साल भी सीतारमण ने डिजिटल बजट पेश करने का सिलसिला जारी रखा। वित्त वर्ष 2023-24 के लिए उनका बजट मोदी सरकार का लगातार 11वां आम बजट है। इसमें 2019 आम चुनाव से पहले पेश किया गया एक अंतरिम बजट भी शामिल है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण आजाद भारत में लगातार पांच बजट पेश करने वालीं पांचवीं मंत्री हैं। उनके अलावा लगातार पांच बजट और बजट भाषण देने वाले नेताओं में अरुण जेटली, पी. चिदंबरम यशवंत सिन्हा, मनमोहन सिंह और मोरारजी देसाई हैं। मोदी सरकार के 2014 में सत्ता में आने के बाद से बजट पेश करने की तारीख को 28 फरवरी से बदलकर एक फरवरी कर दिया गया था।

केंद्रीय बजट 2023-24 : दुनिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था को चमकता हुआ सितारा माना

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को संसद में केंद्रीय बजट 2023-24 पेश किया। निर्मला सीतारमण ने कहा, अमृत काल में यह पहला बजट है। दुनिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था को चमकता हुआ सितारा माना है। हमारा आर्थिक एजेंडा नागरिकों के लिए अवसरों को सुविधाजनक बनाने, विकास और रोजगार सृजन को तेज गति प्रदान करने और व्यापक आर्थिक स्थिरता को मजबूत करने पर केंद्रित है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 2 लाख करोड़ रुपये केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जा रहा है।

अंत्योदय योजना के तहत गरीबों के लिए मुफ्त खाद्यान्न की आपूर्ति को एक वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है। 2014 से सरकार के प्रयासों ने सभी नागरिकों के जीवन की बेहतर गुणवत्ता और गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित किया है। प्रति व्यक्ति आय दोगुनी से अधिक बढ़कर 1.97 लाख रुपये हो गई है। इन 9 वर्षों में, भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया में 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में बढ़ी है। वर्तमान वर्ष के लिए हमारी अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7% रहने का अनुमान है, यह विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक है। भारतीय अर्थव्यवस्था सही रास्ते पर है और उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था सही रास्ते पर है और उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रही है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2023-24 पेश करते हुए नई कर व्यवस्था के तहत व्यक्तिगत कर छूट को 5 लाख से बढ़ाकर 7 लाख करने की घोषणा की। उन्होंने मेहनतकश मध्यवर्ग के लिए व्यक्तिगत आयकर में छूट की घोषणा करते हुए कहा, अभी 5 लाख तक की आय पर कोई इनकम टैक्स नहीं लगता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को केंद्रीय बजट 2023-24 पेश करते हुए कहा, व्यक्तिगत आयकर की नई टैक्स दर 0 से 3 लाख रुपये तक शून्य, 3 से 6 लाख रुपये तक 5%, 6 से 9 लाख रुपये 10%, 9 से 12 लाख रुपये 15%, 12 से 15 लाख रुपये तक 20% और 15 लाख से ऊपर 30% रहेगी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को केंद्रीय बजट 2023-24 पेश करते हुए कहा, प्रस्तावित पूंजीगत निवेश में लगातार तीसरे साल बड़ी बढ़ोतरी के साथ 33% बढ़ाकर 10 लाख करोड़ किया गया है। बकौल सीतारमण, यह रकम देश की जीडीपी का 3.3% होगी। उन्होंने कहा, यह 2019-20 में प्रस्तावित पूंजीगत निवेश का करीब तीन गुना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को केंद्रीय बजट 2023-24 पेश करते हुए देश में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के 3 सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित करने की घोषणा की। उन्होंने कहा, मेक एआई इन इंडिया, मेक एआई फॉर इंडिया (भारत में एआई बनाओ, भारत के लिए एआई बनाओ)। बकौल सीतारमण, देश के अग्रणी उद्योग पार्टनर्स रिसर्च करने में साझेदारी करेंगे।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को अपने बजट 2023 के भाषण में कहा कि सरकार 5जी ऐप्स के लिए इंजीनियरिंग कॉलेजों में 100 लैब्स की स्थापना करेगी। उन्होंने कहा कि हाल ही में लॉन्च किए गए नैशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के लिए 19,700 करोड़ का आवंटन किया गया है ताकि जीवाश्म ईंधन के आयात पर निर्भरता घटाई जा सके।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को केंद्रीय बजट 2023-24 पेश करते हुए कहा, वैसे गरीब व्यक्ति जो जेल में बंद हैं और जमानत राशि चुकाने में असमर्थ हैं, उन्हें आवश्यक आर्थिक सहायता दी जाएगी। लगातार 5वीं बार बजट पेश कर रहीं वित्त मंत्री सीतारमण ने इस बार के बजट को ह्यअमृत कालह्ल का पहला बजट बताया है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2023-24 को पेश करते हुए बुधवार को कहा, कोविड-19 महामारी में हमने यह सुनिश्चित किया कि कोई खाली पेट न सोए। हमने 28 महीनों तक 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दिया। उन्होंने कहा, पिछले 9 वर्षों में भारत दुनिया की 10वीं से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट 2023-24 पेश करते हुए कहा है कि जनजातीय समूहों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए पीवीटीजी विकास मिशन शुरू किया जाएगा।

शुरूआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 12 पैसे की बढ़त के साथ 81.76 पर आया

नई दिल्ली, एजेंसी

संसद में आम बजट पेश होने से पहले बुधवार को शुरूआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 12 पैसे की बढ़त के साथ 81.76 पर आ गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 81.76 पर खुला जो पिछले बंद भाव के मुकाबले 12 पैसे की बढ़त को दशार्ता है। वर्ष 2022-23 की आर्थिक समीक्षा में देश का निर्यात सुस्त रहने तथा चालू खाते का घाटा (कैड) बढ़ने का अनुमान लगाए जाने के बाद मंगलवार को रुपये पर दबाव कायम हो गया और यह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 36 पैसे लुढ़ककर 81.88 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दशार्ने वाला डॉलर सूचकांक 0.02 प्रतिशत की गिरावट के साथ 102.08 पर आ गया। वैश्विक तेल सूचकांक ब्रेंट क्रूड वायदा 0.48 फीसदी की गिरावट के साथ 84.49 डॉलर प्रति बैरल के भाव पर था।

विजेता खिलाड़ी बच्चों को टाइटल जीतने में मदद कर रहे

सितसिपास के पिता बाथरूम ब्रेक भी नहीं लेते, रूड पिता के साथ गोल्फ खेलते हैं

स्टीफानोस सितसिपास

मेलबर्न । ग्रीस के टेनिस खिलाड़ी स्टीफानोस सितसिपास खेल के दौरान कोर्टसाइड बॉक्स में देखते हैं, तो वहां पिता नजर आते हैं। अमेरिका की एलिजाबेथ मेंडेलिक के टीम कोर्टसाइड बॉक्स में मां मौजूद रहती हैं। इन दोनों के अलावा कई अन्य टेनिस खिलाड़ी भी हैं, जो अपने पैरेंट्स से कोचिंग लेते हैं। उनके पैरेंट्स भी अपने समय के मशहूर खिलाड़ी रह चुके हैं। स्टीफानोस सितसिपास 7 24 साल के सितसिपास के पिता अपोसतोलोस भी बड़े खिलाड़ी थे। जब वे कोर्टसाइड बैठते हैं तो उनका फोकस बेटे के पूरे मूवमेंट पर होता है। वे उसे प्रोत्साहित करने के लिए चिल्लाते हैं। कभी बाथरूम ब्रेक के लिए भी नहीं उठते। कैस्पर रूड 7 दुनिया के नंबर-4 कैस्पर को कोचिंग पिता क्रिस्टियन देते हैं। वे नॉर्वे के सबसे बेहतर रैंकिंग वाले खिलाड़ी थे, लेकिन बेटे ने ही उन्हें पीछे छोड़ा। पिता-पुत्र को टेनिस कोर्ट के अलावा अक्सर गोल्फ कोर्स पर भी साथ खेलते देखा गया है। एलिजाबेथ मेंडेलिक 7 21 साल की एलिजाबेथ को मां हेना कोचिंग देती थीं। एलिजाबेथ पहले स्कीयर बनना चाहती थीं, लेकिन हेना के कहने पर टेनिस से जुड़ीं। एलिजाबेथ कहती हैं- मां जानती हैं कि हारने पर कैसा महसूस होता है, इसलिए हमेशा मोटिवेट करती हैं।

कुछ पैरेंट्स के दोस्त भी दे रहे बच्चों को ट्रेनिंग

कुछ पूर्व खिलाड़ी ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपने बच्चों की कोचिंग के लिए दोस्त की मदद ली। अमेरिकी खिलाड़ी सेबेस्टियन कोरडा के कोच रादेक स्तेपानेक हैं। चेक रिपब्लिक के स्तेपानेक उनके पिता पीटर कोरडा के अच्छे दोस्त हैं। अमेरिका के बेन शेल्टन को कोचिंग डीन गोल्डफाइन देते हैं, जो एंडी रोडिक के पूर्व कोच हैं। वे बेन के पिता ब्रायन शेल्टन के दोस्त हैं।

इकाना के पिच क्यूरेटर को हटाया गया

काली पिच को लाल बनाई, हार्दिक पांड्या और बॉलिंग कोच ने पिच को बताया था खराब

लखनऊ । लखनऊ के इकाना स्टेडियम के पिच क्यूरेटर सुरेंदर यादव को हटा दिया गया है। भारत-न्यूजीलैंड मैच के बाद कैप्टन हार्दिक पांड्या ने पिच को खराब बताया था। इसके बाद पिच क्यूरेटर को लेकर हंगामा खड़ा हो गया। बॉलिंग कोच पारस म्हाम्ब्रे ने भी क्यूरेटर पर सवाल खड़ा किया था। अब यह बात भी सामने आई है कि लास्ट टाइम में काली पिच को लाल पिच में बदल गया था। क्क्ष्ट के लोगों का कहना है कि इकाना स्टेडियम में जल्द नया क्यूरेटर नियुक्त किया जाएगा। उसके अलावा यहां की पिच को अगले एक महीने के अंदर सुधार दिया जाएगा। यहां पिछले दो बार से पिच बहुत घटिया बनाई जा रही है। वहीं पिच पर सवाल उठने के बाद अप्रैल में होने वाले ढ्ढक्क मैचों की मेजबानी पर भी संकट खड़ा हो गया है। सूत्रों ने बताया, पिच क्क्ष्ष्ठ्ठ के हिसाब से बनी थी। लाल पिच पर ही मैच होना था। यह पहले ही तय हो गया था। मैच से पहले मध्य प्रदेश के क्यूरेटर यहां आए थे। उन्होंने कहा था कि समय कम बचा है, अब इसमें सुधार नहीं हो सकता है। इसके बाद उन्होंने राहुल द्रविण से मुलाकात की थी। पिच के बारे में जानकारी दी थी।

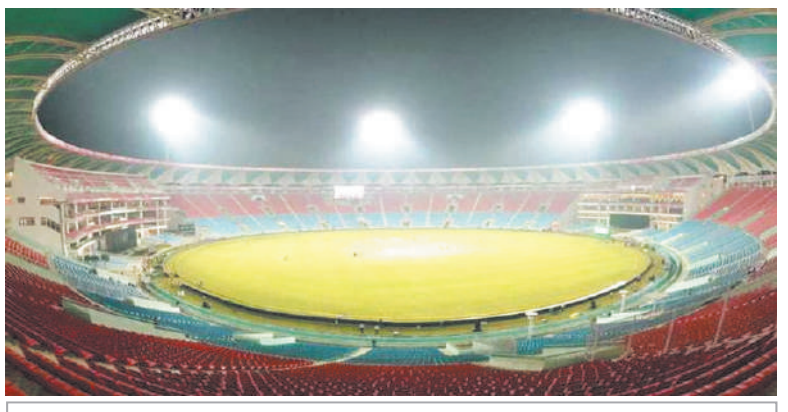

बॉलिंग कोच बोले- क्यूरेटर से सवाल होने चाहिए

टीम इंडिया के बॉलिंग कोच पारस म्हाम्ब्रे से जब भास्कर टीम ने पिच को लेकर सवाल पूछा तो उन्होंने कहा कि हमें मैच से पहले ही लग गया था कि इस पिच पर कैसे खेलेंगे। पिच के दोनों तरफ 15 फीट तक घास नहीं थी। उन्होंने कहा कि इस तरह की पिच क्यों बनाए जाते हैं? इसको लेकर क्यूरेटर से सवाल होना चाहिए।

रणजी के मैच शिफ्ट करने का असर

बताया जा रहा है कि रणजी के मैच कानपुर में होने थे। हालांकि, अचानक उनको इकाना में शिफ्ट कर दिया गया। इसकी वजह से यहां मैच ज्यादा हो गए। जो पिच खराब होने का बड़ा कारण बना। इसके अलावा पिछले दिनों पड़ी ठंड के चलते पिच पर घास नहीं आई। इसकी वजह से वह और ज्यादा टर्निंग बन गई। क्क्ष्ट के डायरेक्टर युद्धवीर सिंह का कहना है कि एक माह में इकाना स्टेडियम की पिच पहले की तरह सही हो जाएगी।

IPL की मेजबानी पर भी संकट

एक्सपर्ट का कहना है कि इकाना में पिच को लेकर जल्द ही कुछ नहीं किया गया तो ढ्ढक्क की मेजबानी भी हाथ से निकल सकती है। यहां 7 मैच होने हैं। लखनऊ की टीम का यह होम ग्राउंड है। पिछली बार कोविड की वजह से यहां मैच नहीं हुए थे। अब अगर ऐसी ही पिच रही तो ढ्ढक्क पर संकट खड़ा हो जाएगा। ढ्ढक्क मैच अप्रैल में होने हैं। लखनऊ के इकाना क्रिकेट स्टेडियम में भारत और न्यूजीलैंड के बीच 29 जनवरी को मैच खेला गया। रोमांचक मुकाबले में भारत ने न्यूजीलैंड को 6 विकेट से हरा दिया। मुकाबले के बाद भारतीय कप्तान हार्दिक पांड्या लखनऊ की पिच से निराश दिखे। उन्होंने कहा कि यह टी 20 क्रिकेट के लायक नहीं है। इसलिए मैच लो स्कोरिंग रहा। हार्दिक ने कहा, ÷मुझे हमेशा विश्वास था कि हम मैच को फिनिश करने में सक्षम होंगे, लेकिन इसमें काफी देर हो गई। ये सभी मैच परिस्थितियों को देखते हुए महत्वपूर्ण हैं। आपको घबराने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह दबाव लेने के बजाय स्ट्राइक रोटेट करने के बारे में था। ठीक यही हमने किया। हमने अपने बेसिक्स पर पूरा ध्यान दिया।÷ उन्होंने कहा, ÷सच कहूं तो यह एक विकेट सदमा देने वाला था। अब तक हमने जितने भी मैच खेले हैं। मुझे मुश्किल विकेटों से कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं इसके लिए पूरी तरह तैयार हूं, लेकिन ये दोनों विकेट टी 20 के लिए नहीं बने हैं। कहीं न कहीं क्यूरेटर या जिस मैदान में हम खेलने जा रहे हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे पिचों को पहले तैयार कर लें। उसके अलावा सारी चीजों से खुश हूं।

बबीता फोगाट ओवरसाइट कमेटी में शामिल

WFI प्रेसिडेंट पर यौन शोषण के आरोपों की जांच कर रही है समिति

नई दिल्ली । केंद्रीय खेल मंत्रालय ने पूर्व पहलवान और भाजपा नेता बबीता फोगाट को भारतीय कुश्ती संघ (ड्ढस्न्रढ्ढ) के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर यौन शोषण के आरोप की जांच और कार्य संचालन के लिए गठित ओवरसाइट कमेटी में शामिल किया है। मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि अब ओवरसाइट कमेटी में 6 सदस्य हो गए हैं। इसमें बबीता फोगाट को शामिल किया गया हैं। अब कमेटी में एमसी मैरीकॉम, खेल रत्न योगेश्वर दत्त, द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित तृप्ति मुरगुंडे, ञ्जह्लक्क ष्टश्वह्ल राजगोपालन और राधा श्रीमन के नाम हैं। पिछले हफ्ते 24 जनवरी को ड्ढस्न्रढ्ढ प्रेसीडेंट के खिलाफ दिल्ली में धरना देने वाले पहलवानों की अगुआई करने वाली रेसलर विनेश फोगाट, बजरंग पूनिया और साक्षी मलिक ने ट्वीट कर आपत्ति जताई थी। रेसलर्स कमेटी में अपनी पसंद का व्यक्ति चाहते थे।

रेसलर्स का आरोप- हमसे राय नहीं ली - विनेश और पूनिया ने दोपहर 3 बजे एक साथ ट्वीट किए, जबकि साक्षी ने दोपहर 3ः40 बजे अकेले ट्वीट किया था। तीनों पहलवानों ने लिखा- हमें आश्वासन दिया गया था कि ओवरसाइट कमेटी के गठन से पहले हमसे परामर्श किया जाएगा। बड़े दुख की बात है कि इस कमेटी के गठन से पहले हमसे राय भी नहीं ली गई। तीनों ही रेसलर्स ने अपने ट्वीट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर को टैग भी किया था।

खेल मंत्रालय ने मैरीकॉम की अगुवाई में बनाई ओवरसाइट कमेटी - केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने 20 जनवरी को ड्ढस्न्रढ्ढ अध्यक्ष के खिलाफ धरना देने वाले पहलवानों के साथ नई दिल्ली में अपने सरकारी आवास पर मीटिंग की थी। देर रात तक चली इस मीटिंग के बाद अनुराग ठाकुर ने पहलवानों के साथ मीडिया के सामने आकर कहा कि खेल मंत्रालय पूरे विवाद की जांच के लिए कमेटी बनाएगा जो 4 हफ्ते में रिपोर्ट देगी। कमेटी की जांच पूरी होने तक बृजभूषण सिंह ड्ढस्न्रढ्ढ का कामकाज नहीं देखेंगे। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के तीसरे दिन, 23 जनवरी को अनुराग ठाकुर ने पांच मेंबरी ओवरसाइट कमेटी बनाने की जानकारी देते हुए उसके सदस्यों के नाम का ऐलान किया। कमेटी का प्रमुख विश्व चैंपियन मुक्केबाज मैरी कॉम को बनाया गया जबकि इसके सदस्यों में ओलंपिक मेडल विजेता रेसलर योगेश्वर दत्त, द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित तृप्ति मुरगुंडे, ञ्जह्लक्क ष्टश्वह्ल राजगोपालन और राधा श्रीमन शामिल हैं। अनुराग ठाकुर ने कहा कि यह कमेटी ड्ढस्न्रढ्ढ का कामकाज देखेगी। अब पहलवानों ने खेल मंत्रालय की इसी ओवरसाइट कमेटी के गठन को लेकर किसी तरह की कोई चर्चा न किए जाने पर सवाल उठाए हैं।

विवाद में रेसलर गीता फोगाट की एंट्री- तीनों पहलवानों के ओवरसाइट कमेटी से जुड़े ट्वीट के बाद इस विवाद में %दंगल गर्ल% गीता फोगाट ने भी एंट्री ले ली। गीता फोगाट ने मंगलवार शाम 4.18 बजे क्क्रह्ल, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर को टैग करते हुए ट्वीट किया। गीता ने लिखा- मैं देश के माननीय प्रधानमंत्री जी से निवेदन करती हूं हमारे देश की सभी बहन-बेटियां आपकी तरफ बहुत आशा और उम्मीदों से देख रही हैं। अगर हम सब बहन-बेटियों को न्याय नहीं मिला, तो यह देश के इतिहास के लिए बहुत बड़ा दुर्भाग्य होगा।

ज्वेरेव पर लगे घरेलू हिंसा के आरोप झूठे, नहीं मिला कोई सबूत, कार्रवाई से बचे

लंदन । पेशेवर टेनिस संघ (एटीपी) ने कहा है कि वह जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव के खिलाफ अपनी महिला दोस्त के खिलाफ अपशब्दों के इस्तेमाल के आरोपों पर कोई कार्रवाई नहीं करेगी। अक्तूबर 2021 में ज्वेरेव की महिला दोस्त ओलगा शेरीपोवा ने एक पत्रिका को दिए साक्षात्कार में ज्वेरेव के खिलाफ घरेलू हिंसा के आरोप लगाए थे। उन्होंने यह भी कहा था कि ज्वेरेव अपशब्दों का भी इस्तेमाल करते हैं। ज्वेरेव हालांकि इन आरोपों को झुठलाते रहे हैं। एटीपी ने कहा कि उनका फोकस ज्वेरेव के खिलाफ 2019 में शंघाई में मास्टर्स स्पर्धा के अलावा मोनाको, न्यूयॉर्क और जिनेवा स्पर्धा के दौरान किए गए दुर्व्यवहार पर आधारित था। हमें मीडिया रिपोर्टों में लगाए गए आरोपों के संबंध में पर्याप्त साक्ष्य नहीं मिले हैं। ऐसे में हम उनके खिलाफ कोई अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं करेंगे। एटीपी ने एक तीसरे पक्ष लेक फोरेस्ट ग्रुप (एलएफजी) को जांच का जिम्मा सौंपा था।

क्या काउंटी क्रिकेट से टीम इंडिया में वापसी करेंगे रहाणे

लीसेस्टरशायर से जुड़े, IPL के बाद जाएंगे इंग्लैंड; रणजी में 634 रन बनाए

नई दिल्ली । भारत के मिडिल ऑर्डर बैटर अजिंक्य रहाणे काउंटी क्रिकेट खेलकर टीम इंडिया में वापसी करने की ओर ध्यान दे रहे हैं। 2023 सीजन के लिए उन्होंने लीसेस्टरशायर टीम से करार किया है। ढ्ढक्क खत्म होने के बाद वह इंग्लैंड पहुंच जाएंगे। इस रणजी ट्रॉफी सीजन में उन्होंने मुंबई की कप्तानी की। लेकिन, टीम को अंतिम-8 में नहीं पहुंचा सके।

8 काउंटी मैच खेलेंगे - लीसेस्टरशायर काउंटी क्रिकेट क्लब ने अजिंक्य रहाणे को 2023 सीजन के लिए साइन किया है। ढ्ढक्क खत्म होने के बाद जून में रहाणे इंग्लैंड पहुंचेंगे। यहां वे लीसेस्टरशायर के लिए 8 काउंटी मैच खेलेंगे। काउंटी के बाद वे पूरे रॉयल लंदन वनडे कप के लिए भी टीम के साथ जुड़े रहेंगे।

13 महीने पहले खेला था आखिरी टेस्ट - इंग्लैंड में काउंटी क्रिकेट खेलने के साथ रहाणे टीम इंडिया में वापसी की राह तलाशेंगे। रहाणे ने जनवरी 2022 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ भारत के लिए आखिरी टेस्ट खेला था। भारत के लिए टेस्ट खेलते हुए उन्होंने 12 शतक लगाए हैं। इस दौरान उनके बैट से 4931 रन आए।

2019 में किया था काउंटी डेब्यू - रहाणे ने इससे पहले 2019 में हेम्पशायर टीम के लिए काउंटी डेब्यू किया था। तब उन्होंने एक शतक भी लगाया था। लीसेस्टरशायर जॉइन करने पर रहाणे ने कहा कि काउंटी टीम जॉइन करने पर खुश हूं। नए टीम मेंबर्स के साथ क्रिकेट खेलने के लिए बेताब हूं। साउथ अफ्रीका के वायन मुल्डर और अफगानिस्तान के नवीन उल-हक भी इस सीजन में लीसेस्टरशायर से खेलते नजर आएंगे। रहाणे लीसेस्टरशायर के लिए वनडे भी खेंलेगे। वनडे के 90 मैचों में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। इनमें उन्होंने 2962 रन बनाए।

पुजारा भी गए थे काउंटी खेलने - भारत के चेतेश्वर पुजारा भी 2022 में ढ्ढक्क के दौरान काउंटी क्रिकेट खेलने गए थे। ससेक्स से खेलते हुए 8 मैचों में उन्होंने 1094 रन बनाए। काउंटी के बाद वह रॉयल लंदन वनडे कप में भी ससेक्स का हिस्सा थे। टूर्नामेंट में उन्होंने 89.14 की औसत से 624 रन बनाए। काउंटी के बाद उन्होंने भारत के लिए टेस्ट में भी बेहतर प्रदर्शन किया और पिछले दिनों बांग्लादेश के खिलाफ शतक भी जड़ा।

रणजी में मुंबई के टॉप स्कोरर - रणजी ट्रॉफी के इस सीजन में रहाणे ने मुंबई की कप्तानी की। उनकी टीम क्वार्टर फाइनल के लिए क्वालिफाई नहीं कर सकी। लेकिन, सीजन के 7 मैचों में उन्होंने मुंबई के लिए सबसे ज्यादा 634 रन बनाए। इनमें 2 शतक भी आए।

श्रेयस अय्यर को रिप्लेस कर सकते हैं - रणजी ट्रॉफी के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज में फिर मौका दिया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया सीरीज से पहले भारत के रेगुलर मिडिल ऑर्डर बैटर श्रेयस अय्यर चोटिल हो गए। ऐसे में रहाणे या सरफराज खान को उनकी जगह शामिल किया जा सकता है।

चेन्नई सुपर किंग्स से खेलेंगे ढ्ढक्क- रहाणे जून में इंग्लैंड जाएंगे। उससे पहले वह ढ्ढक्क में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेलते नजर आएंगे। चेन्नई ने उन्हें मिनी ऑक्शन में 50 लाख रुपए देकर खरीदा। इससे पहले वह कोलकाता नाइट राइडर्स के साथ थे। ओवरऑल 158 ढ्ढक्क मैचों में उन्होंने 2 शतक जड़े हैं। उनके नाम 4074 ढ्ढक्क रन बनाने का भी रिकॉर्ड है।

वीजा नहीं मिलने से जगरेब नहीं गए पहलवान, कुछ बिना पासपोर्ट एयरपोर्ट पहुंचे, फ्लाइट छूटी

नई दिल्ली । निरीक्षण समिति की कोशिशों के बाद सिर्फ तीन पहलवान और एक कोच मंगलवार को रैंकिंग टूर्नामेंट में खेलने जगरेब पहुंच गए। कुछ अन्य पुरुष और महिला पहलवानों के मंगलवार की रात पहुंचने की उम्मीद है, लेकिन फ्रीस्टाइल, महिला और ग्रीको रोमन के 10 से अधिक पहलवानों का वीजा नहीं लगने के कारण खेलना अधर में लटका है।

वीजा लगे पासपोर्ट देर से पहुंचने पर छूटी फ्लाइट - पुरुष फ्रीस्टाइल टीम के चीफ कोच जगमिंदर के साथ अमन (57), पंकज (61) और विशाल कालीरमण (70) जगरेब पहुंच गए हैं। सूत्रों के मुताबिक सोनीपत से पहलवानों को रात 10 बजे ही दिल्ली एयरपोर्ट रवाना कर दिया गया। उनकी फ्लाइट रात एक बजकर 50 मिनट की थी, लेकिन पहलवानों के वीजा लगे पासपोर्ट काफी देर से मिले, जिसके चलते उनकी फ्लाइट छूट गई। इसके बाद तीन बजकर 20 मिनट की फ्लाइट से जगमिंदर के साथ तीनों पहलवानों को भेजा गया।

फ्रीस्टाइल, ग्रीकोरोमन के नौ पहलवानों का नहीं लगा वीजा

ग्रीकोरोमन के भी सिर्फ छह पहलवानों का वीजा लगा है। बाकी के छह पहलवान कोच हरगोविंद के साथ मंगलवार की रात जगरेब रवाना होंगे। फ्रीस्टाइल पहलवानों में सुजीत (65), जोंटी (92), विक्की (92) ग्रीको रोमन में मंजीत (55), करनजीत (67), अंकित गुलिया (72), रोहित (82), नरेंदर (97) का वीजा नहीं लगा है। ये सभी पहली बार सीनियर स्तर पर अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट खेलने जा रहे हैं। इस वजह से भी इनकेवीजा में समस्या आई है।

टीम इंडिया पर चढ़ा पठान का जादू, तीसरे टी20 से पहले सिनेमाघर पहुंचे खिलाड़ी

भारतीय टीम के युवा सितारों पर भी शाहरुख खान की नई फिल्म पठान का जादू चढ़ गया है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच टी20 सीरीज के तीसरे और आखिरी मैच से पहले भारतीय टीम के कई खिलाड़ी इस फिल्म का लुत्फ लेने के लिए थिएटर पहुंच गए। कुलदीप यादव, शुभमन गिल, राहुल त्रिपाठी, ईशान किशन, शिवम मावी, युजवेन्द्र चहल और सूर्यकुमार यादव ने थिएटर पहुंच कर फिल्म का मजा लिया। इन खिलाड़ियों के टीम के सपोर्टिंग स्टाफ के कुछ खिलाड़ी भी फिल्म देखने सिनेमाघर पहुंचे थे। शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की फिल्म पठान तमाम विवादों के बावजूद सिनेमाघर में अच्छी कमाई कर रही है और 300 करोड़ से ज्यादा का आंकड़ा पार कर चुकी है। दीपिका और शाहरुख सहित जॉन अब्राहिम जैसे कई अभिनेताओं के लिए यह फिल्म अच्छी खबर लेकर आई है। तीनों बड़े अभिनेताओं ने लंबे समय बाद कोई हिट फिल्म दी है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच सीरीज के आखिरी और सबसे अहम मैच से पहले भारतीय टीम के खिलाड़ी खुद को तरोताजा बनाए रखने के लिए सिनेमाघर पहंचे और पठान फिल्म देखी।

अहमदाबाद में सीरीज जीतना चाहेगा भारत

हार्दिक पांड्या की कप्तानी में भारतीय टीम अब तक कोई भी सीरीज नहीं हारी है। ऐसे में टीम इंडिया अहमदाबाद में यह रिकॉर्ड बरकरार रखना चाहेगी। इस सीरीज के पहले मैच में न्यूजीलैंड ने भारत को 21 रन से हराया था। वहीं, दूसरे मैच में टीम इंडिया ने छह विकेट से जीत दर्ज की थी। ऐसे में दोनों टीमें तीसरा मैच जीतने की कोशिश करेंगी। टीम इंडिया अहमदाबाद में मैच जीतकर सीरीज भी अपने नाम करना चाहेगी। साल 2023 में भारतीय टीम ने अब तक कोई सीरीज नहीं गंवाई है। हालांकि, हार्दिक की कप्तानी वाली भारतीय टीम में सूर्यकुमार और कप्तान हार्दिक की अगुवाई में मध्यक्रम अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, लेकिन तेज गेंदबाजी और सलामी बल्लेबाजी अभी भी टीम इंडिया के लिए चिंता का विषय है। जहां, ईशान किशन और शुभमन गिल अपने नाम के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं।

टूटी कलाई के साथ बाएं हाथ से बल्लेबाजी करने लगे हनुमा विहारी, आवेश खान की गेंद पर चौका भी लगाया

इंदौर । रणजी ट्रॉफी के क्वार्टर फाइनल मैच में आंध्र प्रदेश के हनुमा विहारी ने अपनी लगन और जुझारूपन से सभी का दिल जीत लिया। मध्यप्रदेश के खिलाफ मैच में उनकी कलाई फ्रैक्चर आ गया था। ऐसे में वह बाएं हाथ के बल्लेबाज बन गए और अपनी टीम के लिए बल्लेबाजी करने आए। उन्होंने अपनी पारी में दो चौके भी लगाए। इनमें से एक चौका तेज गेंदबाज आवेश खान की गेंद पर था। हनुमा विहारी ने अपनी पारी से सिडनी टेस्ट की याद दिला दी। जब उन्होंने अश्विन के साथ मिलकर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच बचाया था। इस मैच के दौरान उन्हें हैमस्ट्रिंग की परेशानी हो गई थी। इसके बावजूद वह बल्लेबाजी करते रहे और भारत की हार टाल दी थी।

मध्य प्रदेश के खिलाफ रणजी मैच के दौरान विहारी के बाएं हाथ की कलाई फ्रैक्चर हो गई। आमतौर पर वह दाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हैं, और उनका बायां हाथ सामने होता है, लेकिन बाईं कलाई में फ्रैक्चर होने की वजह से वह इसे सामने नहीं रख सकते थे। ऐसे में वह बाएं हाथ के बल्लेबाजी की तरह स्टांस लेकर खड़े हो गए और अपना बायां हाथ पीछे छिपा लिया। वह सिर्फ दाएं हाथ को आगे रखकर बल्लेबाजी करते रहे और 27 रन बनाकर आउट हुए।

इस मैच की पहली पारी में उन्होंने 37 गेंद में 16 रन बनाए थे। इसके बाद वह चोटिल हो गए। स्कैन के बाद पता चला कि वह पांच से छह हफ्ते तक क्रिकेट से दूर रहेंगे। ऐसे में टीम मैनेजमेंट ने तय किया कि जरूरत पड़ने पर ही विहारी बल्लेबाजी करेंगे। शुरुआत में आंध्र प्रदेश के लिए रिकी भुई ने (149) और करण शिंदे ने (110) रन की पारी खेली। ऐसे में विहारी को बल्लेबाजी के लिए नहीं आना पड़ा, लेकिन इन दोनों के आउट होते ही आंध्र प्रदेश की टीम बिखर सी गई। ऐसे में विहारी दूसरी बार बल्लेबाजी के लिए आए। बाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने अपना निजी स्कोर 27 रन तक पहुंचाया। आंध्र प्रदेश ने पहली पारी में 379 रन बनाए। विहारी का सीजन मिला-जुला रहा है, उन्होंने अब तक 13 पारियों में 39.58 की औसत से दो अर्धशतकों की मदद से 475 रन बनाए हैं।

आईपीएल 2023 से पहले धोनी ने नेट्स पर की छक्कों की बरसात

नई दिल्ली। आईपीएल 2023 की शुरुआत इस साल मार्च महीने के अंत में या अप्रैल की शुरुआत में हो सकती है। दुनिया की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग की शुरुआत में अभी कम से कम दो महीने का समय है, लेकिन महेंद्र सिंह धोनी ने अभी से इसकी तैयारी शुरू कर दी है। धोनी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में धोनी नेट्स में बड़े-बड़े छक्के लगाते देखे जा सकते हैं। धोनी का यह वीडियो देखकर चेन्नई के फैंस बहुत खुश नजर आ रहे हैं।

धोनी अब अंतरराष्ट्रीय या घरेलू क्रिकेट में सक्रिय नहीं हैं। वह सिर्फ आईपीएल में चेन्नई सुपरकिंग्स के लिए खेलते हैं। ऐसे में उन्हें लय में आने के लिए ज्यादा अभ्यास करने की जरूरत होती है। धोनी इस सीजन में ही क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास ले सकते हैं। उन्होंने अगस्त 2020 में ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। उन्होंने पिछले साल जडेजा को चेन्नई का कप्तान बनाकर संन्यास के संकेत दिए थे, लेकिन कप्तान जडेजा पूरी तरह फेल रहे। इसके बाद धोनी ने अपने संन्यास को लेकर कोई खुलासा नहीं किया है। हालांकि, वो यह साफ कर चुके हैं कि आखिरी मैच चेन्नई में ही खेलेंगे।

वायरल वीडियो में धोनी को स्पिन गेंदबाजों के खिलाफ बड़े छक्के लगाते देखा जा सकता है। धोनी को हाल ही में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टी20 मैच से पहले भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों से मिले थे। उन्हें शुभमन गिल, युजवेंद्र चहल और सहयोगी स्टाफ के साथ बातचीत करते देखा गया था। हार्दिक पांड्या ने भी अपने पसंदीदा खिलाड़ी से काफी बात की थी और दोनों ने मस्ती भी की थी।

संक्षिप्त खबरें

पाकिस्तान : पंजाब में पुलिस थाने पर हमले की कोशिश नाकाम

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की पुलिस ने मंगलवार रात मियांवाली जिले में आतंकवादी हमले को नाकाम कर दिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस महानिरीक्षक पंजाब डॉ. उस्मान अनवर ने मीडिया को बताया कि आतंकवादियों ने अत्याधुनिक हथियारों से एक पुलिस स्टेशन पर हमला किया और रात का फायदा उठाकर इमारत में घुसने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि इस घटना में कई आतंकवादी घायल हो गए, जो अपने साथियों की मदद से मौके से फरार हो गए।अभी तक किसी समूह ने हमले का दावा नहीं किया है।

दक्षिण ब्राजील में टूर बस पलटने से सात लोगों की मौत, दर्जनों घायल

ब्राजील के दक्षिणी राज्य पराना में मंगलवार को इग्वाजु जलप्रपात जा रही एक बस के पलट जाने से कम से कम सात लोगों की मौत हो गयी और 22 अन्य घायल हो गये। पुलिस के अनुसार पराना के संघीय राजमार्ग पर 54 लोगों को ले जाने वाली बस सांता कैटरिना राज्य की राजधानी फ्लोरियानोपोलिस से रवाना हुई थी, जो अर्जेंटीना और पैराग्वे की सीमा से लगे ब्राजील के शहर फोज डू इगुआकु के आगे दक्षिण की ओर जा रही थी। पुलिस रिपोर्ट में कहा गया है कि वायाकाओ कैटरीनेंस कंपनी द्वारा संचालित बस राजमार्ग से दूर हो गई और फर्नांडीस पिनहेइरो के केंद्रीय पराना शहर में एक पहाड़ी से नीचे गिर गई। स्थानीय अग्निशमन विभाग ने संवाददाताओं को बताया कि मरने वालों में अर्जेंटीना की एक मां और उसकी तीन साल की बेटी शामिल हैं। स्थानीय अधिकारियों ने दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है, जिसमें एक अन्य वाहन शामिल था। एक जीवित यात्री एलेक्जेंड्रो डी ओलिवेरा गमारो ने कहा कि उसने दुर्घटना के बाद बस चालक से बात की और चालक ने सो जाने की बात स्वीकार की।

निक्की हेली की 2024 में व्हाइट हाउस के लिए 15 फरवरी से अभियान शुरू करने की योजना

भारतीय मूल की अमेरिकी राजनीतिज्ञ निकी हेली राष्ट्रपति पद के लिये अपने अभियान को आधिकारिक रूप देती नजर आ रही हैं। दक्षिण कैरोलिना की पूर्व गवर्नर के समर्थकों को बुधवार को चार्ल्सटन में 15 फरवरी को एक कार्यक्रम के लिए एक ईमेल आमंत्रण मिलेगा, जिसमें वह अपने अभियान की घोषणा करने की योजना बना रही है। इस बारे में जानकारी रखने वाले एक व्यक्ति ने यह बताया लेकिन वह इस पर आधिकारिक तौर पर बोलने के लिये अधिकृत नहीं है। हेली की योजनाओं की खबर सबसे पहले ह्यद पोस्ट एंड कूरियर ऑफ चार्ल्सटनह्न द्वारा दी गई थी। हेली (51) ने छह सालों तक साउथ कैरोलिना की गवर्नर के तौर पर काम किया और फिर उसके बाद वह संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत के तौर पर सेवाएं दे चुकी हैं। अगला अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव 2024 में होना है।

चीन ने दक्षिण कोरिया के नागरिकों के लिए कोरोना टेस्ट अनिवार्य किया

चीन ने कोरोना नियमों में बड़ा बदलाव करते हुए बुधवार से दक्षिण कोरिया से आने वाले लोगों के लिए कोविड-19 टेस्ट को फिर अनिवार्य कर दिया है। इस संबंध में दोनों देशों के बीच परिचालन करने वाली एयरलाइनों को मंगलवार को नोटिस भेजकर आगाह किया गया है। नोटिस में कहा गया है कि दक्षिण कोरिया से आने वाली सीधी उड़ानों में सवार सभी यात्रियों का पोलीमरेज चेन रिएक्शन (पीसीआर) परीक्षण किया जाएगा। चीन ने साफ किया है कि पड़ोसी देश में कोविड के नए मरीजों की बढ़ती संख्या चिंताजनक है। साथ ही पिछले महीने सियोल ने चीन से आने वाले यात्रियों पर प्रतिबंध लगाए हैं। इस वजह से यह कदम उठाया है। पीसीआर टेस्ट के बाद पॉजिटिव पाए गए लोगों को क्वारंटाइन या अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा। बीजिंग में सियोल के दूतावास ने कहा कि चीन सरकार ने केवल दक्षिण कोरिया के यात्रियों के लिए नए नियम के बारे में सूचित किया है। सियोल विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने चीन के भेदभावपूर्ण प्रवेश प्रतिबंधों पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा कि चीन को सीमा में लोगों के प्रवेश को प्रतिबंधित नहीं करना चाहिए।

डोभाल की अमेरिका यात्रा ने दोनों देशों के सहयोग को गति देने का आधार तैयार किया: भारतीय दूतावास

यात्रा

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत के. डोभाल ने अपनी यात्रा के दौरान हुई चचाओं के माध्यम से अत्याधुनिक क्षेत्रों में भारत-अमेरिका सहयोग को गति देने का आधार तैयार किया जो कि वास्तव में एक व्यापक व वैश्विक रणनीतिक साझेदारी की परिपक्वता का परिचायक है। यहां भारतीय दूतावास ने एक बयान में यह जानकारी दी। बयान में भारतीय दूतावास ने कहा, इस यात्रा के दौरान हुईं चचाएं अत्याधुनिक क्षेत्रों में भारत-अमेरिका सहयोग को गहरा करने का आधार स्थापित करती हैं और वास्तव में भारत-अमेरिका व्यापक, वैश्विक रणनीतिक साझेदारी की परिपक्वता को दशार्ती हैं। उनकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन से भी मिलने की योजना है। डोभाल और सुलिवन ने इनीशिएटिव फॉर क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (आईसीईटी) की जो पहली उच्च-स्तरीय बैठक की, उसका मई 2022 में तोक्यो में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच बैठक के बाद पहली बार एक संयुक्त बयान में उल्लेख किया गया था। इसका मकसद दोनों देशों की सरकारों, व्यवसायों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सामरिक प्रौद्योगिकी साझेदारी तथा रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाना तथा उसे विस्तार देना है। दूतावास ने कहा, आईसीईटी का मकसद प्रौद्योगिकी श्रृंखलाओं का निर्माण करके और वस्तुओं के सह-विकास तथा सह-उत्पादन का समर्थन करके दोनों देशों के बीच विश्वसनीय प्रौद्योगिकी भागीदारी स्थापित करना है। इसका मकसद स्थायी तंत्र के माध्यम से विनियामक प्रतिबंधों, निर्यात नियंत्रण और बाधाओं को दूर करना भी है। बैठक के दौरान, अमेरिकी पक्ष ने विधायी परिवर्तनों के प्रयासों सहित कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत के लिए निर्यात बाधाओं को कम करने का आश्वासन दिया। भारत के प्रतिनिधिमंडल में डोभाल के अलावा अमेरिका में भारत के राजदूत, भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष, दूरसंचार विभाग में सचिव, रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के महानिदेशक शामिल थे। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी बैठक में हिस्सा लिया। अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल में नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) के प्रशासक, नेशनल साइंस फाउंडेशन के निदेशक, नेशनल स्पेस काउंसिल के कार्यकारी सचिव और विदेश मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। दूतावास ने बताया कि बैठक में भारत के अर्द्धचालक (सेमीकंडक्टर) अभियान के लिए इंडिया इलेक्ट्रॉनिक्स सेमीकंडक्टर एसोसिएशन (आईईएसए) और यूएस सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री एसोसिएशन (एसआईए) को शामिल करते हुए एक कार्यबल गठित करने पर सहमति बनी, ताकि निकट भविष्य के अवसरों की पहचान करने और अर्द्धचालक पारिस्थितिकी के दीर्घकालिक विकास की सुविधा के लिए तैयारी हो सके। रक्षा विनिर्माण के क्षेत्र में दोनों पक्ष पारस्परिक हित की प्रमुख वस्तुओं के संयुक्त उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने पर सहमत हुए। साथ ही अगली पीढ़ी के दूरसंचार में, भारत की लागत-प्रतिस्पर्धात्मकता को देखते हुए दोनों पक्ष विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग करते हुए एक सार्वजनिक-निजी संवाद शुरू करने पर सहमत हुए, जिसमें 5जी/6जी और ओआरएएन को भी शामिल किया जाएगा।

● व्यवसायों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सामरिक प्रौद्योगिकी साझेदारी तथा रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाना तथा उसे विस्तार देना है।

डोभाल ने कई शीर्ष अधिकारियों से भी मुलाकात

डोभाल और उनके अमेरिकी समकक्ष जेक सुलिवन ने यहां व्हाइट हाउस में अपने-अपने प्रतिनिधिमंडल के साथ इनीशिएटिव फॉर क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (आईसीईटी) की पहली उच्च-स्तरीय बैठक की। इसके अलावा डोभाल ने कई शीर्ष अधिकारियों से भी मुलाकात की। डोभाल ने 30 जनवरी से एक फरवरी तक की यात्रा के दौरान, आपसी हित के द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर सरकार, कांग्रेस, उद्योग, अकादमिक, अनुसंधान से संबद्ध अमेरिकी नीति निमार्ताओं और हितधारकों के साथ बैठकें कीं। सुलिवन के अलावा डोभाल ने अमेरिका के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ के अध्यक्ष जनरल मार्क मिली, अमेरिका की उप रक्षा मंत्री डॉ. कैथलीन हिक्स, शीर्ष सासदों और उद्योग जगत के कई दिग्गजों से मुलाकात की।

वनुआतू में समुद्र में ज्वालामुखी फटा, राख और धुएं का गुबार उठा

नई दिल्ली, एजेंसी

दक्षिण प्रशांत द्वीपीय देश वनुआतू में बुधवार को समुद्र के अंदर एक ज्वालामुखी फटा, जिससे आसपास के इलाके में हर तरफ राख और धुएं का गुबार नजर आने लगा। वनुआतू प्रशांत क्षेत्र के रिंग ऑफ फायर में स्थित है, जहां टेक्टोनिक प्लेटें टकराती हैं, जिससे लगातार भूकंपीय और ज्वालामुखीय गतिविधि होती रहती हैं। रेडियो न्यूजीलैंड के अनुसार, वनुआतू के एपी द्वीप से छह किमी पूर्व में समुद्र के नीचे स्थित ज्वालामुखी में बुधवार सुबह विस्फोट शुरू हो गया, जिससे आसमान में राख के गुबार नजर आने लगे। रिपोर्टों में वनुआतू के मौसम विज्ञान एवं भू-खतरा विभाग के एक वरिष्ठ ज्वालामुखी अधिकारी रिकार्डो विलियम के हवाले से बताया गया है कि ज्वालामुखी बुधवार तड़के से ही बार-बार कांप रहा था और भाप उगल रहा था। उन्होंने बताया कि ज्वालामुखी विस्फोट से लगभग 100 किमी की ऊंचाई तक निकली राख ज्वालामुखी के चारों ओर गिर गयी है।

अमेरिका की उप रक्षा मंत्री डॉ. कैथलीन हिक्स ने एनएसए अजीत डोभाल से की मुलाकात

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिका की उप रक्षा मंत्री डॉ. कैथलीन हिक्स ने यहां राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल से मुलाकात कर अमेरिका-भारत द्विपक्षीय रक्षा साझेदारी पर चर्चा की। अमेरिका के रक्षा मंत्रालय के मुख्यालय पेंटागन ने यह जानकारी दी। पेंटागन के अनुसार, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नीतियों व उनके संचालन में समन्वय को गहरा करने और दोनों देशों के बीच रक्षा औद्योगिक सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा हुई। भारतीय दूतावास ने मंगलवार को ट्वीट किया, दोनों ने अमेरिका-भारत रक्षा सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा सहित कई मुद्दों पर चर्चा की। पेंटागन के प्रवक्ता एरिक पाहोन ने बैठक के बाद एक बयान में बताया कि हिक्स ने दोहराया कि गठबंधन बनाना तथा साझेदारी करना मंत्रालय की पहली प्राथमिकता है और अमेरिकी राष्ट्रीय रक्षा रणनीति का अभिन्न अंग भी है। पाहोन ने बताया कि उन्होंने (हिक्स ने) क्षेत्र में भारत के नेतृत्व के लिए डोभाल का शुक्रिया अदा किया। साथ ही अमेरिका तथा भारतीय सेनाओं के बीच समन्वय को गहरा करने के तरीकों पर चर्चा की ताकि क्षेत्र के तेजी से बढ़ते विवादित रणनीतिक माहौल से निपटा जा सके। उन्होंने कहा, दोनों ने अमेरिका और भारतीय कंपनियों के बीच अभिनव संयुक्त प्रयासों के माध्यम से द्विपक्षीय रक्षा औद्योगिक सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर भी चर्चा की जो भारत की विशिष्ट संचालन की जरूरतों के अनुरूप है। बैठक के रीडआउट (जानकारी) के अनुसार, हिक्स और डोभाल ने कहा कि वे अमेरिका-भारत रक्षा साझेदारी को आगे बढ़ाने की दिशा में काम करने के लिए तत्पर हैं।

● अमेरिका-भारत रक्षा सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा सहित कई मुद्दों पर चर्चा की।

भारत, अमेरिका प्रौद्योगिकी और रक्षा क्षेत्र में करीबी सहयोग के लिए तैयार

● भारत-अमेरिका पहल प्रौद्योगिकी में संबंधों को बढ़ावा देने और रक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए तैयार हैं।

नई दिल्ली, एजेंसी

विशेषज्ञों का मानना है कि भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत के डोभाल और उनके अमेरिकी समकक्ष जेक सुलिवन द्वारा क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (आईसीईटी) पर भारत-अमेरिका पहल की शुरूआत एक महत्वपूर्ण संकेत है कि दोनों देश बाधाओं को तोड़ने, प्रौद्योगिकी में संबंधों को बढ़ावा देने और रक्षा सहयोग को मजबूत करने के लिए तैयार हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डोभाल और सुलिवन ने मंगलवार को व्हाइट हाउस में अपने संबंधित उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिनिधिमंडलों के साथ पहले आईसीईटी संवाद के लिए मुलाकात की। सेंटर फॉर न्यू अमेरिकन सिक्योरिटी में हिंद-प्रशांत सुरक्षा कार्यक्रम की वरिष्ठ फेलो और निदेशक लीजा कर्टिस ने पीटीआई-भाषा को बताया, भारत और अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के बीच पहली आईसीईटी बैठक का आयोजन संबंधों के लिए एक प्रमुख मील का पत्थर है और यह संकेत देता है कि दोनों पक्ष निकट प्रौद्योगिकी और रक्षा सहयोग के वास्ते बाधाओं को तोड़ने के लिए तैयार हैं। सीआईए की पूर्व अधिकारी कर्टिस 2017 से 2021 तक दक्षिण और मध्य एशिया के लिए राष्ट्रपति और एनएससी के वरिष्ठ निदेशक की उप सहायक थीं। इस दौरान उन्होंने भारत-अमेरिका संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कर्टिस ने कहा, दोनों पक्ष उभरती हुई प्रौद्योगिकी साझेदारी से लाभ प्राप्त करने के लिए तैयार हैं: भारत रक्षा प्रौद्योगिकियों तक पहुंच प्राप्त करेगा और ऐसे समय में अपनी क्षमताओं को मजबूत करेगा जब चीन-भारत सीमा संघर्ष बढ़ रहा है और जून 2020 में गलवान और दिसंबर 2022 में तवांग के निकट हुए संघर्ष जैसे मामले बढ़ रहे हैं। यूएस इंडिया स्ट्रेटेजिक एंड पार्टनरशिप फोरम (यूएसआईएसपीएफ) के अध्यक्ष मुकेश अघी ने कहा, आईसीईटी की शुरूआत अमेरिका-भारत साझेदारी में एक महत्वपूर्ण क्षण है।

उन्होंने कहा कि लंबे समय से प्रतीक्षित नासा-इसरो सिंथेटिक एपर्चर रडार (एनआईएसएआर) पृथ्वी अवलोकन उपग्रह पर काम पूरा करना इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि अंतरिक्ष में अमेरिका-भारत की साझेदारी दुनिया को कैसे लाभान्वित कर सकती है। उन्होंने कहा, जलवायु परिवर्तन हमारे सामने एक वास्तविक खतरा है और एनआईएसएआर दोनों देशों को इस खतरे से लड़ने के लिए करीब लाता है।

एंटनी ब्लिंकन की यात्रा से फिलीस्तीनियों नाराजगी, विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन के वेस्ट बैंक के दौरे का फिलीस्तीनियों ने विरोध किया है। उन्होंने मंगलवार को फिलीस्तीनी क्षेत्र में अमेरिकी शीर्ष राजनयिक की उपस्थिति के विरोध में प्रदर्शन किया। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में प्रदर्शनकारियों ने फिलिस्तीनी झंडे उठाए और अमेरिका विरोधी नारे लगाए। उन्होंने अमेरिका पर इजरायल के प्रति पक्षपाती होने और फिलिस्तीनी अधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाया। रामल्ला में विरोध प्रदर्शन में भाग ले रहे नेल सलामा ने कहा, मामला बहुत सरल है। ब्लिंकेन यहां फिलिस्तीनी नेतृत्व पर दबाव डालने के लिए आए थे कि वे इजरायल के साथ सुरक्षा सहयोग के खिलाफ कोई निर्णय न लें। रामल्लाह में राष्ट्रीय और इस्लामिक बलों के समन्वयक इसाम बेकर ने शिन्हुआ को बताया, हम ब्लिंकन को अपना संदेश देने के लिए यहां आए थे कि उनका हमारे देश में स्वागत नहीं है, क्योंकि उनके प्रशासन का इजरायल और फिलिस्तीनी लोगों के खिलाफ उसके कार्यों के प्रति पूर्वाग्रह है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अमेरिकी प्रशासन ने फिलिस्तीनी मुद्दे से निपटने में दोहरे मानकों का इस्तेमाल किया। गौरतलब है कि 2023 की शुरूआत के बाद से इजरायली सेना ने कम से कम 35 फिलिस्तीनियों को मार डाला। जवाबी कार्रवाई में पूर्वी यरुशलम में एक इजरायली बस्ती में एक आराधनालय के बाहर एक फिलिस्तीनी बंदूकधारी द्वारा की गई गोलीबारी में शुक्रवार रात सात लोगों की मौत हो गई। गाजा पट्टी में एक प्रदर्शनकारी अहमद अबू डल्फा ने शिन्हुआ को बताया कि ब्लिंकेन की यात्रा से फिलिस्तीनी लोगों को लाभ नहीं होगा, क्योंकि वाशिंगटन फिलिस्तीन के लिए अपने वादों को त्याग रहा है। इससे पहले ब्लिंकन ने सोमवार को इजरायली नेताओं के साथ बैठक के बाद रामल्ला में फिलिस्तीनी राष्ट्रपति मुख्यालय में फिलिस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास के साथ बैठक की। ब्लिंकेन ने इजरायल की सुरक्षा के लिए वाशिंगटन की आयरनक्लाड प्रतिबद्धता को दोहराते हुए फिलिस्तीनियों और इजरायल दोनों से तनाव को खत्म करने का आग्रह किया। ब्लिंकन के साथ अपनी बैठक के बाद अब्बास ने कहा कि इजरायल सरकार फिलिस्तीनी क्षेत्रों में मौजूदा तनाव और हिंसा के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है क्योंकि इसने समझौतों का उल्लंघन किया है। अब्बास ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय पर फिलिस्तीनी क्षेत्रों पर इजरायल के सैन्य कब्जे और वेस्ट बैंक और पूर्वी यरुशलम में इसकी निपटान नीति को समाप्त करने में विफल रहने का भी आरोप लगाया।

● ब्लिंकेन ने फिलिस्तीनियों और इजरायल दोनों से तनाव को खत्म करने का आग्रह किया।

पोप ने कांगोवासियों से क्षमा करने को कहा

नई दिल्ली, एजेंसी

पोप फ्रांसिस ने बुधवार को क्षमा दिवस के अवसर पर आयोजित सामूहिक प्रार्थना सभा में कांगो के लोगों से आग्रह किया कि वे उन्हें नुकसान पहुंचाने वालों को क्षमा कर दें। कार्यक्रम दशकों से हिंसा का सामना कर रहे कांगो में शांति और क्षमा के पोप के आह्वान को समर्पित था।

देश की राजधानी के मुख्य हवाई अड्डे पर पोप को सुनने के लिए करीब 10 लाख लोग जुटे। लोगों ने किंशासा के एनडोलो हवाई अड्डे के विशाल हवाई क्षेत्र में रात बिताई और फ्रांसिस के आगमन से पहले घंटों गायन एवं नृत्य किया।

पोप के रूप में अफ्रीका यात्रा के दौरान फ्रांसिस का यह पहला कार्यक्रम था। पोप के रूप में कांगो की यह उनकी पहली यात्रा रही। उनसे पहले सेंट जॉन पॉल द्वितीय ने 1985 में इस ईसाई देश की यात्रा की थी। फ्रांसिस-थीम वाली पोशाक पहने हुए दो बच्चों की 45 वर्षीय मां जूली म्बुई ने कहा ह्यआज मैं अपनी दादी के उत्साह को समझ सकती हूं जब पोप जॉन पॉल द्वितीय आए थे।

वह उन्हें देखने के लिए बहुत उत्साहित थी और एक रात पहले सो नहीं पायी थी! जब अर्जेंटीना से ताल्लुक रखने वाले पोप ने कांगो की चार राष्ट्रीय भाषाओं में से एक लिंगाला में उनका अभिवादन किया तो भीड़ खुशी से झूम उठी। लिंगाला राजधानी किंशासा में व्यापक रूप से बोली जाती है।

और जब उन्होंने अपने प्रवचन में ईसा मसीह के उदाहरण का हवाला देते हुए उनके साथ विश्वासघात करने वालों को क्षमा करने के लिए अपने हृदयों को खोलने का आग्रह किया तो उन्होंने ध्यान से उनकी बात सुनी। पोप ने दशकों की हिंसा, विशेष रूप से कांगो के पूर्वी हिस्से में हुई हिंसा का उल्लेख किया।

इसके चलते लाखों लोगों को अपने घरों से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा था। फ्रांसिस ने जोर देकर कहा कि क्षमा करने का मतलब यह नहीं है कि यह दिखावा करना है कि कुछ भी बुरा नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि क्षमा करने का अर्थ है कि यह हृदय को गुस्से और पश्चाताप, नाराजगी और दर्द से मुक्त करता है।

वेटिकन के आंकड़ों के अनुसार, कांगो के साढ़े दस करोड़ लोगों में से लगभग आधे कैथोलिक हैं।

● राजधानी के मुख्य हवाई अड्डे पर पोप को सुनने के लिए करीब 10 लाख लोग जुटे।

● क्षमा करने का अर्थ है कि यह हृदय को गुस्से और पश्चाताप, नाराजगी और दर्द से मुक्त करता है।

पाकिस्तान: इमरान के करीबी व पूर्व मंत्री फवाद चौधरी की जमानत मंजूर

नई दिल्ली, एजेंसी

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के करीबी पूर्व मंत्री फवाद चौधरी की जमानत मंजूर हो गयी है। चुनाव आयोग को धमकी देने के मामले में जेल भेजे गए फवाद चौधरी की जमानत मंजूर होने को उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने इंसाफ की जीत करार दिया है। चुनाव आयोग को धमकी देने के मामले में पाकिस्तान के पूर्व मंत्री फवाद चौधरी को पिछले सप्ताह गिरफ्तार कर लिया गया था। फवाद चौधरी ने बीते दिनों चुनाव आयोग को खुलेआम धमकी दी थी। जिसके बाद पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद के कोहसर थाने में फवाद चौधरी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। फवाद इमरान खान की सरकार में पाकिस्तान के सूचना मंत्री रह चुके हैं। फवाद चौधरी को लाहौर से गिरफ्तार किया गया और पुलिस ने रिमांड लेकर पूछताछ की थी। पुलिस फवाद चौधरी को दो बार रिमांड पर ले चुकी थी। इस्लामाबाद की एक अदालत में न्यायिक मजिस्ट्रेट वकास अहमद राजा के समक्ष पुलिस ने तीसरी बार रिमांड की मांग की थी। मंगलवार को न्यायालय ने पुलिस की मांग खारिज करते हुए फवाद चौधरी को जेल भेजने का आदेश दिया। फवाद को 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में जेल भेजा गया। न्यायालय द्वारा रिमांड की पुलिस की मांग ठुकराए जाने के बाद बुधवार को फवाद की नियमित जमानत पर फैसला आना था। बुधवार को न्यायालय से फवाद को जमानत मिल गयी।

भारत, अमेरिका ने आईसीईटी की पहली बैठक की : व्हाइट हाउस

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने यहां अपने अमेरिकी समकक्ष जेक सुलिवन के साथ मिलकर इनीशिएटिव फॉर क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी (आईसीईटी) की पहली उच्च-स्तरीय बैठक की। व्हाइट हाउस ने यह जानकारी दी। व्हाइट हाउस ने मंगलवार को डोभाल और सुलिवन के बीच आईसीईटी की पहली बैठक के समापन के बाद एक फैक्ट शीट (तथ्यात्मक जानकारी) में कहा, हम आपसी विश्वास और भरोसे पर आधारित एक मुक्त, सुलभ और सुरक्षित प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और लोकतांत्रिक संस्थानों को मजबूत करेगा। मई 2022 में तोक्यो में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच बैठक के बाद पहली बार एक संयुक्त बयान में आईसीईटी का उल्लेख किया गया था। इसका मकसद दोनों देशों की सरकारों, व्यवसायों और शैक्षणिक संस्थानों के बीच सामरिक प्रौद्योगिकी साझेदारी तथा रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाना व विस्तारित करना है। व्हाइट हाउस ने कहा, अमेरिका और भारत इस बात की पुष्टि करते हैं कि प्रौद्योगिकी को डिजाइन, विकसित, शासित और उपयोग करने के तरीकों में हमारे साझा लोकतांत्रिक मूल्यों तथा सार्वभौमिक मानवाधिकारों का ध्यान रखा जाएगा।

द्विपक्षीय अंतरिक्ष सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए भारत-अमेरिका समूह की बैठक

नई दिल्ली, एजेंसी

द्विपक्षीय अंतरिक्ष सहयोग को आगे बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए भारत और अमेरिका के शीर्ष अंतरिक्ष अधिकारियों ने यहां मुलाकात की। अमेरिका में भारत के राजदूत तरणजीत सिंह संधू ने एक ट्वीट में कहा, भारत और अमेरिका द्विपक्षीय अंतरिक्ष साझेदारी को उच्च कक्षाओं (ऑर्बिट) में ले जाने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं! उनकी टिप्पणी मंगलवार को विदेश विभाग के फोगी बॉटम मुख्यालय में नासा के प्रशासक बिल नेल्सन और इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ के साथ भारत-अमेरिका सिविल स्पेस ज्वाइंट वर्किंग ग्रुप (सीएसजेडब्ल्यूजी) को संबोधित करने के बाद आई है।

वेस्टर्न मोनार्क तितलियों की संख्या में लगातार दूसरे साल वृद्धि

● वेस्टर्न मोनार्क तितलियां हर साल सर्दियों में पैसिफिक नॉर्थवेस्ट से कैलिफोर्निया की ओर उड़ान भरती हैं

नई दिल्ली, एजेंसी

सर्दियों के दिनों में कैलिफोर्निया तट को गुलजार करने वाली वेस्टर्न मोनार्क तितलियों की संख्या में 2020 की गिरावट के बाद लगातार दूसरे साल भी वृद्धि देखने को मिली है, लेकिन नारंगी और काले रंग की तितलियों की आबादी अब भी पहले की तुलना में काफी कम है। शोधकताओं ने मंगलवार को यह जानकारी दी। कैलिफोर्निया और एरिजोना में इन स्थलों का दौरा करने वाले स्वयंसेवकों ने 330,000 से अधिक संख्या में तितलियों के वहां होने की जानकारी दी है, जो पिछले छह साल में इन तितलियों की सबसे अधिक संख्या मानी जा रही है। वर्ष 2020 में शीतकाल के दौरान तितलियों की वार्षिक गणना 2,000 से कम दर्ज किये जाने के बाद इनकी संख्या में व्यापक बढोतरी दर्ज की गयी है। वर्ष 2021 में, तितलियों की यह संख्या 247,000 थी। एक गैर-लाभकारी पर्यावरण संगठन जेर्सेस सोसाइटी की एक संरक्षण जीवविज्ञानी एम्मा पेल्टन ने कहा, मुझे लगता है कि हम सभी जश्न मना सकते हैं और यह वाकई में रोमांचकारी है। उन्होंने कहा, हम सभी पिछले वर्ष इतनी राहत महसूस कर रहे थे क्योंकि करीब 2,50,000 तितलियां थीं और इस बार यह संख्या और बढ़ गयी है, जो अच्छा संकेत है। पेल्टन ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि अचानक तितलियों की यह संख्या क्यों बढ़ गयी है, लेकिन ऐसी संभावना हो सकती है कि ईस्टर्न मोनार्क तितलियां इन वेस्टर्न मोनार्क तितलियों के साथ मिल गयी हों। ईस्टर्न मोनार्क तितलियां आमतौर पर मैक्सिको में अपना शीतकालीन प्रवास रखती हैं। उन्होंने कहा कि यह संख्या अस्सी के दशक की तुलना में बहुत कम है, जब ये तितलियां लाखों में होती थीं। वैज्ञानिकों का मानना है कि वेस्टर्न स्टेट्स में तितलियों की संख्या बहुत ही निम्न स्तर पर है क्योंकि उनके पयार्वास नष्ट कर दिये गये हैं और कीटनाशकों आदि का इस्तेमाल किया जा रहा है। कृषि संबंधी समस्या के अलावा जलवायु परिवर्तन भी इनकी संख्या में कमी आने की एक प्रमुख वजहों में से एक है, क्योंकि इन तितलियों को जलवायु परिवर्तन की समस्या की वजह से 3000 मील अर्थात 4828 किलोमीटर की दूरी तय करने में कठिनाई होती है। वेस्टर्न मोनार्क तितलियां हर साल सर्दियों में पैसिफिक नॉर्थवेस्ट से कैलिफोर्निया की ओर उड़ान भरती हैं और फिर मार्च में वापस चली जाती हैं। नर तितली कुछ हफ्तों तक वहां रहती हैं, जबकि मादा तितिलयां पेड़ों पर पूरी सर्दी बिताती हैं तथा ग्रीष्म ऋतु के अंत तक वापस अपने पूर्व के स्थान पर जाती हैं। उसके बाद उनका प्रजनन चक्र शुरू होता है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555